विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

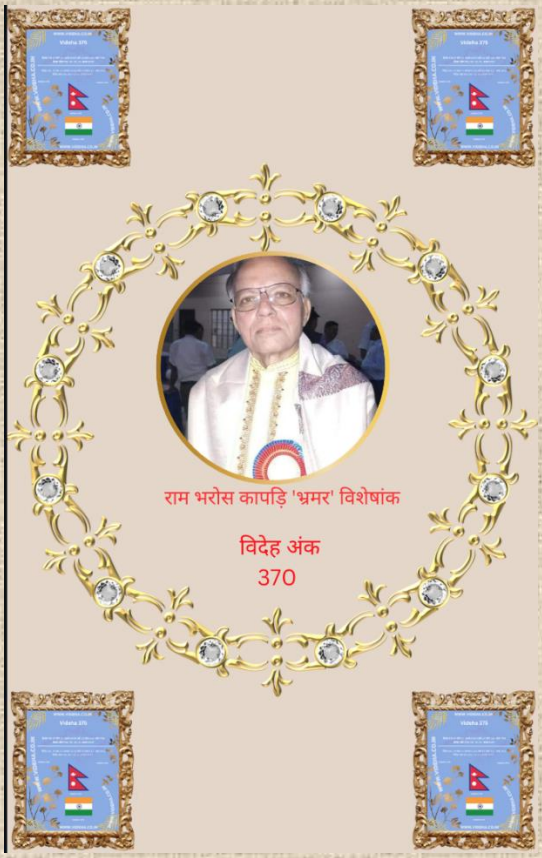

ISBN: 978-93-340-3581-0

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA RAMBHAROS KAPADI 'BHRAMAR' SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ƒ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ঔঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ƒ

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয: শান্তি রনষ্পতয: শান্তির্রিশ্বে দেরা: শান্তির্ঁৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্ৰঁহ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনষ্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্ৰঁহ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্ৰঁহ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক রীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্ৰঁহ্ম- সর্জক।

ॐ, सहस्रंशीर्षा पुरुंषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्।

ॐ, স↓ হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ

স↓ হস্রা↑ পা৲।

स भूमिं ग्वंग विश्वतों वृत्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিং↑ ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্যা↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

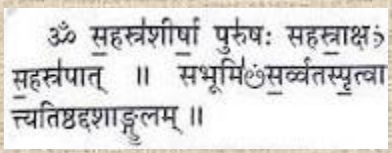

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमिं सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

প↓ ড্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

প↓ ড্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৲।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিৰস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

৭ (Bengali Anji, Siddham)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही- “.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of

justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes

and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथि: एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- केँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- केँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ केँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is

indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of ‘asuva’ and ‘parasuva’ from mantra 3, which means: ‘Give us, we pray, what is good’, and, ‘Remove, we pray, what is evil’. This is the prayer. Also, there are echoes of ‘havamahe’ from mantra 4, which means: ‘We invoke and develop’, and, ‘we challenge and fight out’. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक बिभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like

chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-
EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney's translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

"Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me." I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

"Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me."

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

"Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me."

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

"Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God's dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me."

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted

(Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

ß

विदेह ३७० म अंक १५ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३७०)
[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

अनुक्रम

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक (पृ. २-२)

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे **(पृ. ३-८)**

२.२.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय **(पृ. ९-२०)**

२.३.प्रोमिशा मिश्रा- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व **(पृ. २१-३१)**

२.४.भीमनाथ झा- लोकजीवनपर समेकित आलोक **(पृ. ३२-३५)**

२.५.बिजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापड़ि'भ्रमर'जीक संग साक्षत्कार **(पृ. ३६-४१)**

२.६.साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल **(पृ. ४२-४६)**

२.७.अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा' **(पृ. ४७-५०)**

२.८.लालदेव कामत-डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व **(पृ. ५१-५५)**

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन **(पृ. ५६-६१)**

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु **(पृ. ६२-६६)**

२.११.चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना **(पृ. ६७-८३)**

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया **(पृ. ८४-८७)**

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार **(पृ. ८८-९४)**

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर' **(पृ. ९५-१०९)**

२.१५.चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर' **(पृ. ११०-११८)**

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व **(पृ. ११९-१२५)**

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज **(पृ. १२६-१३२)**

२.१८.रमेश रञ्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक **(पृ. १३३-१४२)**

२.१९.विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल **(पृ. १४३-१५३)**

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान **(पृ. १५४-१५७)**

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरुप:रामभरोस कापड़ि भ्रमर **(पृ. १५८-१६६)**

२.२२.डा. योगानन्द झा-भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि **(पृ. १६७-१७७)**

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि **(पृ. १७८-१८३)**

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर **(पृ. १८४-१९०)**

३. विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७१)-अंक ३७० पर टिप्पणी (पृ. १९१-१९२)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

१.गजेन्द्र ठाकुर- विदेह सम्पादकीय- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे किछु गोटेकेँ हुनका मधेस आन्दोलनसँ जुड़लासँ दिक्कत छन्हि, से ओ रचना नै देता, से नेपालो दिसमे छथि आ भारतो दिस। मुदा समानान्तर धाराकेँ तकर आदति छै। से कोनो विशेषांकसँ कम रचना नै आयल।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

रायपुरसँ गौहाटी तक ओ भ्रमण करैत छला। भ्रमण करैबला भ्रमर।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीबैत मुदा उपेक्षित' शृखंला रूपमे कएल गेल छल 2015 सँ जकरा आब "विदेहक जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाइत अछि। दिसम्बर 2022 मे विदेह "रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा। मैथिलकर्मीसँ हमर सभहक आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकै छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी मने गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक।

एहन शृखंलामे, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह 9 टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकट्ठा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जतेक लेख केर उम्मेद केने रहैत छी हम ततेक नै आबैए, जतेक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किनको ई लागै छनि जे आनपर लिखब से हम अपने रचना किए ने लीखि लेब, किनको लग पोथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प रूपमे पोथीक पी.डी.एफ फाइल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। कियो विदेहक समावेशी रूपसँ दुखी छथि, तँ किनको मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँइ ओ नहि देता। बहुत लोक

तँ विदेहमे एहू लेल रचना नै पठबैत छथि जे कहीं हमरा अकादमी वा धनी संस्था सभ ने देखि लिए। अकादमी आ संस्था सभ विदेहकेँ अनेरे अपन शत्रु मानि बैसल अछि आ पुरस्कारक इच्छा रखनिहार तँइ विदेहमे रचना नै पठबै छथि। एकरो हम संकटे बुझै छियै जे सभ फेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठाबैत छथि। जे सभ कहियो काल फेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप करिते छी। जिनकर रचना टाइप करैत छी ताहिमे स्वतः रूपसँ टाइप केनिहारक वर्तनी आबि जाइत छै। खएर पहिने कहलहुँ जे संकटसँ बेसी समर्थन अछि तँइ आइ पहिलसँ लऽ कऽ नवम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2023 केर मध्य धरि 9 टा विशेषांक प्रकाशित भेल मने बर्खमे एकटा। निश्चिते समर्थन बेसी भेटल हमरा। जखन कि विदेहक ई 9 विशेषांक केर अलावे आनो विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ईहो बात संतोषदायक अछि जे विदेहक हरेक विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हेबासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकामे सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तँइ विदेहक विशेषांकमे आलोचना-प्रसंशा सभ भेटत।

एहन नै छै जे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक रचना केहन छनि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से

विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

भ्रमरजी नेपालक मैथिलीकेँ प्रतिनिधित्व करै छथि तँ आलेख नेपाल दिससँ सेहो आएल अछि तँइ भाषा संबंधी किछु बात देखल जाए जे कि मात्र भारतीय पाठक लेल अछि-

१) भारतीय पाठक कोनो लेखक लेल जेहन आदरसूचक शब्दक प्रयोग देखैत-पढ़ैत एलाह अछि से नेपालक आलेखमे नहि भेटैत आ नेपालक मैथिली लेल ई सामान्य बात भेलै।

२) भारतीय पाठकसभकेँ किछु शब्दक अर्थ नहि लगतनि आ एहि लेल हुनका विदेहपर उपल्बध नेपालीय मैथिली मैथिली साहित्यकेँ पढ़ए पड़तनि।

३) फान्टकेँ बदलबामे सेहो बहुत रास दिक्कत भेल छै जाहिपर हम सभ काज कऽ रहल छी।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक एहिठाम) -(करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत

१) अरविन्द ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९

ई विशेषांक २०२० मे पोथी रूपमे सेहो आयल अछि। लिंक अछि:

स्वतंत्रचेता- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष

अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिण्ट रूप]

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

९) अशोक विशेषांक ०१ मई २०२३ अंक ३६९

ई तँ भेल जे काज हम सभ कऽ सकलहुँ तकर विवरण मुदा किछु एहनो घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना २०१६ मे हम सभ परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा कइयो कऽ नहि प्रकाशित कऽ सकलहुँ। पाठक एहि घोषणाकेँ एहि लिंकपर देखि सकै छथि- सूचना

बादमे विदेहक "वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक" (जे कि प्रकाशित नै भऽ सकल) लेल वीरेन्द्र मल्लिक जीक साक्षात्कार जे नबोनारायण

मिश्रजी से विदेहक ३३७म अंकमे प्रकाशित भेल पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- १ जनवरी २०२२ अंक ३३७

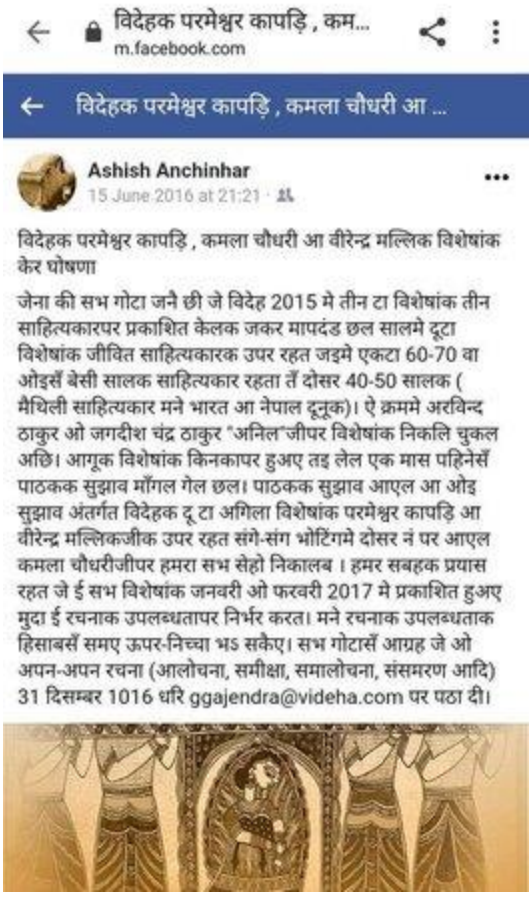

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक संक्षिप्त परिचय। एहि परिचयक अधिकांश तथ्य पहिनेसँ सार्वजनिक अछि। अधिकांश फोटो भ्रमरजीसँ प्राप्त भेल अछि। नेपालमे विक्रमी संवत चलैत छै, जइठाम ईनै . लिखल छै, से विक्रम संवत बर्ख अछि आ ओइ लेल मात्र अंक लिखल छै। तँइ जइ ठाम मात्र अंक छै से संवत बर्ख भेल आ ताहिमेसँ 57 घटा देने अंग्रेजी बर्ख ई. आबि जाएत। उदाहरण लेल भ्रमरजीक जन्म संवत 2008 मे छनि जाहिमेसँ 57 घटेलापर 1951 अबैत अछि, अर्थात भ्रमरजीक अंग्रजी जन्म बर्ख 1951 ई. भेल। एनाहिते पोथी प्रकाशन वर्षकेँ सेहो बदलि सकैत छी।

नाम- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

माता : दुखनी देवी

पिता : राम गुलाम कापड़ि

स्थान : बघचौड़ा, जिला- धनुषा, जनकपुर अंचल, गाबिस बघचौड़ा, वार्ड नं.- 1 (नेपाल)

जन्म तिथि : 2008 साल, साओन, 22 गते (स्कूलक सर्टिफिकेटमे 5 मइ 1951)

शिक्षा : त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., पी.एच.डी. (मानद)।

वृत्ति: पत्रकारिता, भाषा,साहित्यक सेवा

नव जिम्मेबारी: अध्यक्ष:मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान,मधेश प्रदेश,जनकपुरधाम, धनुषा,नेपाल

ईमेल आइडी: bhramar.2010@gmail.com , मो.नं. 9854020889.9807677001

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धरि भ्रमरजीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित भेलनि ताहिमेसँ अधिकांश विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)-

काव्य:

1) बन्न कोठरी औनाइत धुआ कविता संग्रह: 2029

2) नहि, आब नहि दीर्घ कविता 2036

3) मोमक पघलैत अधर गीत, गजल

4) अप्पन अनचिन्हार कविता संग्रहः 1990 ई.

5) भयो अब भया नेपाली अनुवाद बस अब नहीं हिन्दी अनुवाद

6) अन्हरियाक चान गजल संग्रह 2070

7) युद्धभूमिक एसगर याद्धा कविता संग्रह, 2017 ई.

कथा संग्रहः

1) तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (1987 ई(.

2) हुगली ऊपर बहैत गंगा 2065

3) एण्टीभायरस कथा संग्रह 2076, 2019 ई

उपन्यासः

1) घरमुहाँ 2069

नाटकः

1) रानी चन्द्रवती : 2045

2) एकटा आओर वसन्त : 2052

3) महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : 2054

4) भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू नेपाली अनुवाद 2064

5) भैया अएलै अपन सोराज नाटक 2067

6) एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक संग्रह 2069, साझा प्रकाशन, नेपाल

7) सूलीपर इजोत एवं अन्य नाटक, नाटक संग्रह 2072

यात्रा संस्मरण:

1) चीन जे हम देखल 2070

2) सीमामे आर-पार 2073

शोध आलेख संग्रह:

1) जनकपुरधाम र यास क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : 2056 साल

2) राजकमलक कथा साहित्यमे नारी : 2064 साल

3) लोकनाट्य : जट-जटिन : 2064 :

4) Cultural heritage of Janakpur 2062

5) मैथिली लोक संस्कृति आलेख संग्रह 2066

6) तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म आलेख संग्रह, प्रकाशकः साझा प्रकाशन, 2067

7) मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस, 2075, प्र. भोर

8) मैथिल लोक संस्कृति : विविध आयाम नेपाली आलेख संग्रह 2075, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल

विविध:

1) आजका धनुषा : 2039, जनकपुर लोकचित्र : 2046

2) समयको अन्तराल पछ्याउदै आलेख संग्रह, 2066

3) ठेकान पर (विचार संग्रह)

4) समय-सन्दर्भ निबन्ध संग्रह 2068

5) अहाँ जे कहलहुँ, अन्तरर्वाता संग्रह 2071

6) कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (2020 ई)

सम्पादन:

1) मैथिली पद्यसंग्रह : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान : 2051

2) लाबाक धान कविता संग्रह 2051

3) त्रिशूली स्व. माथुर द्वारा लिखित खण्डकाव्य 2049

4) नेपालक मैथिली पत्रकारिता: 2044

5) मैथिली लाकनृत्य: भाव भंगिमा एवं स्वरूप नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान 2061

6) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल: 2065

7) हम और तुम हिन्दी कविता संग्रह 2066

8) मैथिली नाटक-संग्रह नाटक संग्रह 2067

9) महाकवि विद्यापति आ नेपाल निबन्ध संग्रह साझा प्रकाशन, काठमाण्डू, नेपाल, 2068

10) मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन, 2069

11) लोकनायक सलहेस निबन्ध संग्रह 2069

12) लोकनायक सलहेस, द्वितीय खण्ड निबन्ध संग्रह 2070

13) लोकगाथा नायक दीनाभद्री-निबन्ध संग्रह 2070

14) अबधी संस्कृति विविध आयाम निबन्ध संग्रह, 2070

14) सोन्हगर गन्धक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', 2073

प्रधान सम्पादक : गामघर साप्ताहिक मैथिली; आँजुर मैथिली द्वैमासिक

सम्मान:

1) नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार द्वारा सम्मानित : 2052

2) विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, 22 दिसम्बर, 1996 ई.

3) शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा शेखर सम्मान, 3 नबम्बर, 2007 ई.

4) मैथिली साहित्य परिषद ्, जनकपुर द्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार',

5) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, 22 दिसम्बर, 2006 ई.

6) मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान',

7) चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार 2011 ई.

8) साझा प्रकाशन द्वारा 'साझा लाक संस्कृति पुरस्कार 2068

9) नेपाल विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार 2069

10) रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत द्वारा मिथिला विभूति सम्मान 2069

11) मैथिल समाज, रहिका द्वारा सम्मानित मधुबनी, बिहार 8, अप्रिल 2018 ई.

12) केशवलाल वाखं सिरपा कथा पुरस्कार 2070 जेठ 21 गते, घरमुहाँ उपन्यासक लेल

13) गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त 2071 आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त।

पत्रकारिता: 2027-28 सं बेदेही साप्ताहिक, जनकपुरधामसं पत्रकारितामे प्रवेश। तकराबाद कान्तिपुर, गारखापत्र, नागरिक, अन्नपूणा र्पास्ट दैनिकसभमे, अनलाइन सभमे, साहित्यिक पत्रिका मधुपर्क, गरिमा, परिवार, शिक्षक रचना लगायत अनेकहु पत्र-पत्रिकामे लेखन।

विशेष: पूर्व अध्यक्षः साझा प्रकाशन, ललितपुर, पूर्व सदस्य, प्राज्ञ

परिषद, नेपाल, प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी।

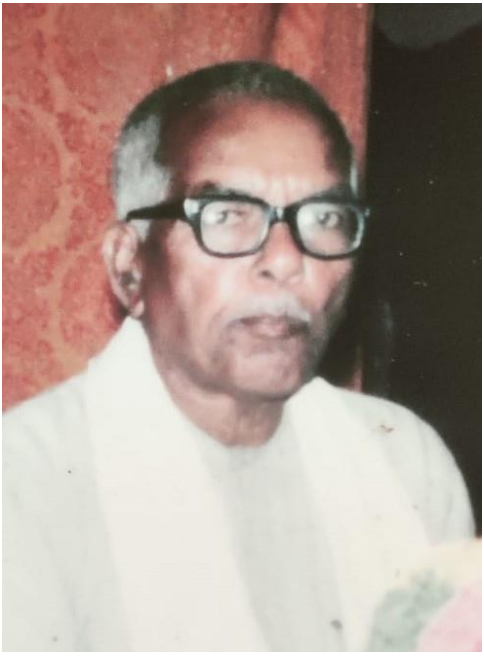

चित्र 1-रामगुलाम कापड़ि (भ्रमरजीक पिता)

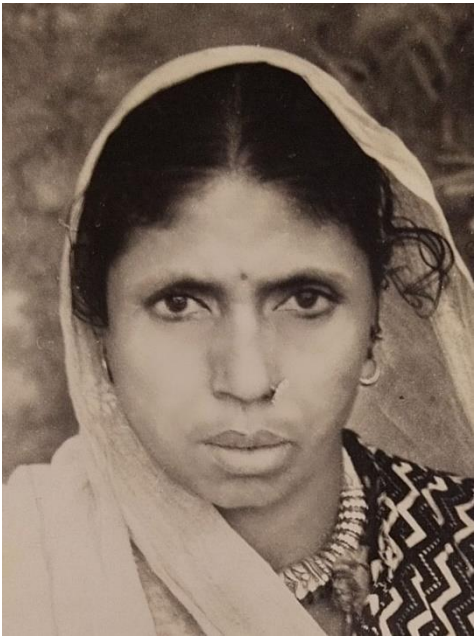

चित्र 2-दुखनी देवी (भ्रमरजीक माता)

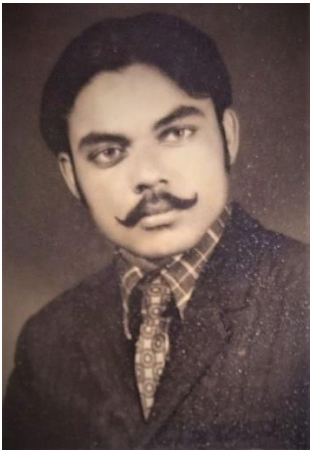

चित्र 3-भ्रमरजी युवावस्थामे

चित्र 4-भ्रमरजी अपन पत्नी दलतीया देवीक संग

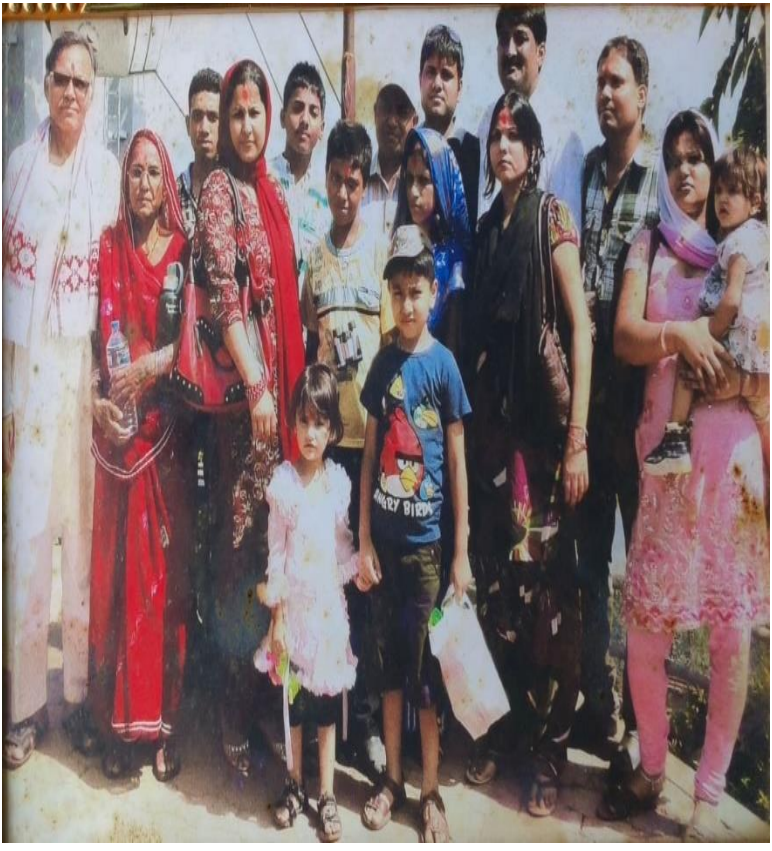

चित्र 5-बामासँ दहिना (पहिने पुरुष आ तकर बाद महिलाक विवरण)- भ्रमरजी, हुनकर पत्नी, सातम जेठ बालक राम नारायण कपड़ि,आठम छोटका बालक संदीप कुमार आ नवम माझिल बालक प्रदीप कुमार,सबसँ अंतिम जमाय मनोज चौधरी। भ्रमरजीक छोटकी पुतौह अनिशा, पोता विवेक, जेठका बालकक पत्नी निर्मला देवी, तकराबाद भ्रमरजीक बेटी प्रमिला कुमारी आ अंतमे मझिली पुतहु अंशु कुमारी निच्चामे पोती आदिती, पोता अंकित आ कोरामे पोती साक्षी।

चित्र 6-भ्रमरजीक एकटा आर पारिवारिक चित्र (नाम उपरमे देखि चीन्हल जा सकैए)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.३.प्रोमिशा मिश्रा- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व

प्रोमिशा मिश्रा,शोधार्थी

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' के व्यक्तित्व

श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' पूर्व अध्यक्षः साझा प्रकाशन,पूर्व परिषद सदस्य, नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठान,हाल अध्यक्षः मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान, मधेश प्रदेश, वरिष्ठ साहित्यकार तथा पत्रकारके जन्म धनुषा जिल्लाक साविक बघचौडा गाउँ पालिका ४ सम्प्रति हंसपुर नगरपालिका २ बघचौडा पूर्वटोलमे एकगोट सम्पन्न परिवारमे भेल छलनि। पिता स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ माय स्वर्गीया दुखनी देवीक छोट सन्तानक रुपमे जन्म ग्रहण कएने भ्रमरके एकगोट भैया , एकगोट दिदी आ एक गोट बहिनी छनि। दिदीके ८६,८७ बर्षक लकझकमे ,किछुमासपूर्व देहावसान भ गेलनि। पिता रामगुलाम कापड़ि बघचौडामे मात्र नहि परोपट्टामे प्रतिष्ठित समाजसेवीक रुपमे चिन्हल जाईत छलाह। ओ तत्कालीन बघचौडा गाउँ पञ्चायतके लगातार तीन बेर प्रधानपञ्च

निर्वाचित भेल छलाह। पचासो विगहा खेत, फूलवारी, पोखरी, ईनार सहित बघचौरा आ जनकपुरधाममे सुविधा सम्पन्न पक्की घर छलनि। हुनका गामवासीसभ आदरसँ ' अधिकारी ' मालिक कहि क सम्बोधन करैत छलनि।

भ्रमरके बाल्यकाल

धनुषा जिल्लाक बघचौड़ा गाममे विक्रम शम्वत जन्म २००८ साल श्रावणमे जन्म ग्रहण कएने भ्रमरके प्रारम्भिक शिक्षा गामेमे भेल छलनि। गामेमे एकटा सम्पन्न गीरहत कन्हाई साहुक दलानपर खुजल मधुकरही निवासी गनेशलाल कर्णक चटिसारमे हुनका दुनू भाईकेजबरदस्ती पठाओल गेल रहन्हि। आनाकानी कएलापर नोकर बहादुरके कहि पाठशालामे गेला त मुदा कोनो बहन्ने जल्दीए आबि गेल। ई क्रम किछु दिन चललै। एकर कारण रहैक मायक दुलार,खान पीन,खेलधूप। आ जखन मन लाग लगलैक त पाछा घूमि क नहि देखलक। गूरुजीबला खाँति,बिटगरहाआदि जे भुइयाँसं होइत पाटी दुआइत धरि चलल तकरा बाद पंचायतेके यादब मिडिल इस्कूलमे नाम लिखाओल गेल आ तखन ओतहि पढैत तीन क्लासक बाद आगा पढबाक लेल जनकपुरक सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखाओल गेलनि । तकरा बाद ओत्तहिसं मैटिक आ रारा बहुमुखी कैम्पससं मैथिली बिषयमे प्रथम श्रेणीमे एमए कएल । बाल्यकालहिसँ पढय लिखयमे होसिार तथा वाकपटु भेलाक कारणे हुनका सभगोटे वेस प्रेम करैत छलनि। आर्थिक, सामाजिक आ शैक्षिक रुपसँ हुनक परिवार समाजमे प्रतिष्ठित छल तें हुनक बाल्यकाल सुखमय छलनि। अध्ययनके क्रममे जनकपुर आएलाह आ अपन स्टेशनसँ उत्तर अवस्थित पुस्तैनी घरमे रहि अध्ययन करए लगलाह। घरसँ खाद्य समग्री अबैत छलनि आ भानस बनेवालेल भनसिया सेहो राखल गेल छलनि।

भ्रमरके शिक्षा

सबसं पहिने गामक चटिसारमे अ आ इ एसे ल खाँति बिटगरहा सब सिखलनि,पढलनि। तकराबाद पंचायतेके बेल्ही मिडिल इस्कूलमे तीन बक्षा धरि पढलाह। तकराबाद गाममे आएल एकटा गामविकास अधिकारीक उत्प्रेरणासं बाबूजी हिनका दुनू भाईके जनकपुर सरस्वती हाई स्कूलमे नाम लिखा देलकनि। जनकपुरमे अपने पक्की मकान छलनि। एकटा भनसियाक संग ओ जनकपुरके आवासपर रहि सरस्वती माध्यमिक विद्यालयसँ एसएलसीधरिक शिक्षा प्राप्त कएलनि आ प्रवीणता प्रमाणपत्र (आई .ए.) , स्नातक (बी.ए.) आ स्नातकोत्तर (एम.ए.) धरिक अध्ययन रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस , जनकपुरधामसँ प्राप्त कएलनि। डा.धीरेन्द्रक सद्प्रयाससँ रराब क्याम्पसमे सुरु भेल मैथिली स्नात्कोत्तर विषयक ओ पहिल बैचक छात्र छलाह आ प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर उतीर्ण कएने छलाह। स्वर्गीय रामगुलाम कापड़ि आ स्वर्गिय दुखनी देवीक तेसर सन्तानक रुपमे जन्मग्रहण कएने भ्रमरके भैयाक नाम छनि सुकुमार कापड़ि , दिदीक छलनि दाया देवी (जनिक हालेमे स्वर्गवास भ गेलनि) आ बहिनके सोनावत्ती देवी। भ्रमरके विवाह किसोरावस्थामे धनुषा जिल्लाक भगवानपटी गाममे दलतीया देवीसंग भेल छनि। हुनका तीनगोट पूत्र आ दूगोट पुत्री छनि। जेठ पुत्र रामनारायण कापड़ि जनकपुर एक्सप्रेसके सम्पादक छथि आ राजनीतिमे सेहो संलग्नछथि तँ माझिल प्रदीप कापड़ि नेपाल खाद्य संस्थानमे कार्यरत छथि। छोट संदीप कापड़ि उच्च कोटिक कम्युटरक ग्राफिक एक्सपर्ट छथि आ अपने व्यावसाय करैत छथि। दुनू बेटीक विवाह भ' गेल छनि।

साहित्यमे अएबाक प्रेरणा

सरस्वती हाई स्कूलमे अध्ययनरत्त रहल समय हुनका सम्पर्क भेलनि डा.धीरेश्वर झा ' धीरेन्द्र ' संग। जे हुनक घरके परोसेमे भाडा ल' रहैत

छलाह आ राराब क्याम्पसमे अध्यापन करैत छलाह। डा.धीरेन्द्रक सम्पर्कमे अएलाक पश्च्यात् हुनक आकर्षण साहित्यदिसि भेलनि। यद्यपि पत्र पत्रिका , साहित्यिक उपन्यास तथा कथा कविताआदि पढवाक रुचिमे हुनकामे पहिनहिसँ छलनि। ओ हिन्दीक पुस्तक,पत्र पत्रिका पढबामे रुचि रखैत छलाह। पछाति डा. धीरेन्द्रक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखय लगलाह। हुनक पहिल रचना वालकथा अछि इमानदार वालक ई कथा तत्कालीन समयमे प्रतिष्ठित मैथिली साप्ताहिक मिथिला मिाहिरक १९६४ ई. मे प्रकाशित भेल छल। तहिया हुनक उमेर १२ वर्षमात्र छल। तहिएसँ ओ अपन नामक पाछाँ ' भ्रमर ' लिखब सुरु कएलनि१

भ्रमरके व्यवसायिक जीवन

त्रिभुवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पसके रुपमे रहल रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस, जनकपुरसँ मैथिली विषयमे प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर (एम ए) कएने छलाह भ्रमर। मुदा ओ सरकारी सेवामे नहि गेलाह। त्रि.वि.वि. मैथिली शिक्षण विभागक तत्कालीन अध्यक्ष डा.धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' हुनका बेर बेर प्राध्यापन पेशामे अएबाक वास्ते आग्रह कएने छलाह मुदा ओ विश्वविद्यालय सेवामे जएबाक अपेक्षा पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखन , अध्ययन , अनुसंधान आ यात्रामे रमल रहबाक निर्णय कएलनि। आर्थिक रुपसँ सवल तथा व्यावहारसँ स्वच्छन्द विचारक भेलाक कारणे ओ स्वतन्त्र पेसा अर्थात् पत्रकारिता आ स्वतन्त्र लेखन विधा चुनलनि।

भ्रमर २०२६०२७ सालमे वैदेही साप्ताहिकके कार्यालय प्रतिनिधिक रुपमे पत्रकारिता प्रारम्भ कएने छलाह। २०४६ सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्च्यात् देशमे बहुदलीय प्रजातन्त्र स्थापना भेल। निजी क्षेत्रसँ सेहो ब्रोडसिट पत्र पत्रिकासभक प्रकाशन सुरु भेल। राजधानीसँ प्रकाशित एहि पत्र पत्रिकामध्य कान्तिपुर पब्लिकेशनके कान्तिपुर दैनिक सेहो छल। भ्रमर २०४९

सालसँ कान्तिपुरके जनकपुर संवाददाताक रुपमे काम कएलनि। कान्तिपुर प्रकाशन भेलाक शुरुक ५ वर्षधरि ओ एहि पत्रिकाक जनकपुर समाचारदाताक रूपमे काज कएलनि ।

कान्तिपुर राष्ट्रिय दैनिकसँ पहिनहि ओ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्थापित भ चुकल छलाह। प्रकाशक सम्पादकके रुपमे हुनक पहिल पत्रिका मैथिलीमे छल जकर नाम छल अर्चना (२०३० साल)। ई पत्रिका दश बर्षसं उपर चलल। मैथिली संसारमे मिहिर बाहेकक पत्र कम्मे छल वा नगण्य छल। एहनमे अर्चना अपन पातरो कायामे नेपाल भारतक खनेको रचनाकारके आगा लएबामे महत्वपूण भूमिकाक निर्वाह कएलक।् डा. भीमनाथक शब्दमे एकर सम्पादक श्री भ्रमरक स्वच्छ दृष्टिक कारणें ,अपन श्रीणो कलेबरमे ई महत्वपूर्ण भ गेल अछि। अर्चना ओहि समयक प्रकाशन छल जहिया नेपाली बाहेकके पत्रके दर्ता नहि कएल जाइत छर्लक। तखन मैथिली सामयिक संकलन कहि एकर प्रकाशन भेल छल। अनेको बाधा ब्यबधानक बादो अर्चना चौदह पन्द्रह बर्ष निकलल। नेपालक पहिल आ एखन धरि एक मात्र मैथिली साहित्यक इतिहासकार डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अपन नेपालक मैथिली पत्रकारिताःएकटा सर्वेक्षण शिर्षक आलेखमे लिखै छथिअर्चना(२०३०,फागुन)क मुख्य एद्येश्य नेपालमे हेराएल,भोतिआएल,अनचिन्हार मुदा प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार लोकनिक स्वस्थ्य साहित्यके मैथिली संसारक आगां राखब छलैक। और ओ विगत प्रकाशन धरि अपन घोषित उद्येश्यक सभ अनुरुप चलि रहल अछि। हमरा लग अर्चनाक बारह बर्षक जीवन यात्राक (२०३०२०४५)उपलब्धि ६२टा अंक प्रत्यक्ष अछि। अर्चना भ्रमरक एकल प्रयास आ साहसिक प्रयासे चलि रहल अछि। ओ अर्चनाक माध्यमे नेपालक मैथिली चेथना,भाषायी सामथ्र्य एवं रचनाधर्मिताके यथासमय प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिली पत्रकारिताक इतिहास पुस्तकमे श्री अमरजी

लिखने छथिअर्चना नेपालमे एकमात्र एहन पत्रिका अछि जे मातृभषाक अर्चनामे अपन सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कएने अछि।अर्चनाक एखन धरिक योगदान उल्लेखनीय अछि।३

तकराबाद नेपाली मासिक अंजुली आ मैथिली द्वैमासिक आंजुर। विसं २०३९ सालसँ हुनक सम्पादन आ प्रकाशनमे सुरु भेल छल गामघर मैथिली साप्ताहिक जे आईधरि निरन्तर प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। यी देशक पहिल मैथिली समाचार पत्र अछि जे करीव ३९ वर्षसँ निरन्तर प्रकाशित भ रहल अछि। एहि साप्ताहिक मार्फत मैथिली आ नेपालीक अनेकौ साहित्यककार आ पत्रकारक जन्म भेल अछि। स्थानीय नेपाली दैनिकसभ सुप्रभात (२०५४) के प्रारम्भिक सम्पादक सेहो ओएह छलाह। सम्प्रति जनकपुर एक्सप्रेस (२०५५) के सेहो प्रकाशन करैत छथि।

पत्रकारिता,स्वतन्त्र लेखनसंगहि ओ नेपाल सरकारक साझा प्रकाशनके अध्यक्षक रुपमे सेहो काज कएने छथि। साझा प्रकाशनके इतिहासमे ओ पहिल मधेसी अध्यक्ष भेलाह। नेपाली भाषा आ नेपाली कर्मचारीसभक बोलबाला रहल साझा प्रकाशनके ओ अपन एक वर्षक कार्यकालमे कायापलट क देने छलाह। पहिल बेर नेपाली बाहेकके दोसर भाषा मैथिलीक पुस्तक सेहो हुनके कार्यकालमे प्रकाशन भेल छल। नेपाली साहित्यकारसभक चित्रक संग मैथिलीक महाकवि विद्यापतिक चित्र सेहो प्रकाशन करौलनि। साझा प्रकाशनके अध्यक्ष पदपर आसीन रहिते काल हुनका नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य नियुक्त कएल गेलनि। तकराबाद ओ साझा प्रकाशनसँ राजिनामा द' प्राज्ञपरिषद सदस्यक रुपमे चारिवर्ष काज कएने छलाह। प्राज्ञके रुपमे ओ मैथिली लोक संस्कृतिउपर उल्लेख्य काज कएलनि आ करबौलनि। हुनक सकृयतामे

सलहेस, दीनाभद्री, जटजटिन सदृश्यक लोकगाथा,लोकनाट्यसभक विषयमे अध्ययन अनुसंधान , लेखन आ प्रकाशन भेल। जे लोक साहित्यक अनुसन्धाताक हेतु सन्दर्भ सामग्रीक रुपमे नेपाल भारतमे मान्य अछि।

भ्रमर भाषा, साहित्य, संस्कृतिसंगहि साहित्यक प्रायः सम्पूर्ण विधामे धुरझार लिखैत आएल छथि। एकरा अतिरीक्त ओ उच्चकोटीक फोटोग्राफर आ चित्रकार सेहो छथि। एखनधरि भ्रमरद्वारा लिखल गेल मैथिली ,नेपाली,हिन्दी आ अंग्रेजी भाषाक करीव ५० गोट पुस्तक प्रकाशित भ चुकल अछि। हुनक टटका पुस्तक अछि मिथिलाक लोक जीवनः लोक सन्दर्भ जकर बिमोचन जनकपुरमे भेल जाहिमे पटनासं डा. रमानन्द झा रमण,कोलकातासं अशोकजीजी,दरभंगासं डा. भीमनाथ झा,चन्द्रेश लगागत काठमाण्डूसं नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति गंगा प्रसाद उपेती आएल छलाह। हुनक लेखनी एखनहुँ चलिए रहल छनि।

मानसम्मान

भ्रमर मैथिलीसंगहि नेपाली साहित्यक सेहो प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। साहित्यक प्राय ः सम्पूर्ण विधामे ओ निरन्तर सृजनारत्त छथि। एहि कारणे ओ मैथिली आ नेपाली दुनू साहित्यदिसक पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त कएने छथि। नेपाल राजकीय पज्ञाप्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम ' मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार२०५२ (रु.५०००।)सँ ओ पुरस्कृत छथि। तहिना विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा ' मिथिला विभूति ' सम्मान , शेखर प्रकाशन , पटनाद्वारा ' शेखर सम्मान ', नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा ' वैदेही प्रतिभा पुरस्कार ', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बईद्वारा ' मिथिलारत्न ' सम्मान प्राप्त कएने छथि त मधुरिमा नेपालद्वारा ' मधुरिमा सम्मान ', चेतना समिति, पटनाद्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशनद्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार२०६८ आ नेपाल

सरकारद्वारा स्थापित विद्यापति पुरस्कार कोषद्वारा वर्ष २०६९के मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार२०६९ सेहो प्राप्त कएने छथि। २ लाख राशिक उक्त पुरस्कार मैथिली साहित्यमे प्रदान कएल जायबला सर्वाधिक राशिक पुरस्कार अछि। (२०६९),रायपुर(छत्तीसगढ,भारत)द्वारा मिथिला विभूति सम्मान(२०६९) मैथिल समाज ,रहिका(मधुबनी ,विहार,८ अप्रिल २०१८ई.) नेवारी भाषा साहित्यक संस्था केशवलाल वाखं सिरपा कथा पुरस्कार(२०७० जेठ २१ गते), हुनक घरमुहाँ उपन्यासके लेल रु. पचास हजारक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त(२०७१) लगायत दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त। एकरा संगहि हुनका पार्वती प्रतिष्ठान, सिसोटिया सर्लाहीद्वारा 'पार्वती सम्मान'सहित दर्जनो सम्मान आ पुरस्कार प्राप्त छनि।

सामाजिक क्षेत्रमे सकृयता

रामभरोस कापड़ि'भ्रमर 'के मुख्य परिचय एकगोट साहित्यकार आ कुशल पत्रकारक छनि मुदा ओ सामाजिक आ राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो ओतवे सकृय छथि ताहिबातक जानकारी बहुत थोर लोकके छनि। साहित्यिक स्रस्टाक रुपमा ओ मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक सेवा क रहल छथि त विभिन्न संघ संस्थामे संलग्न रहि भाषा,साहित्य, कला,संस्कृतिक संस्थागत विकासमे सहयोग क रहल छथि। तहिना राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो हुनक अहम योगदान छनि। तत्कालीन कटरैत गाउँ पञ्चायतके उपाध्यक्षक रुपमे निर्वाचित भ' ओ गाम पञ्चायतके विकास निर्माणमे अहम योगदान देने छलाह त अपन पुस्तैनी गाम बघचौडामे अवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयके व्यवस्थापन समितिक अध्यक्षके रुपमे ओ विद्यालयके शिक्षाक गुणस्तर बढैबामे अहम योगदान देलनि।

ओ मैथिली साहित्य उत्सव , नेपालक अध्यक्ष , तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुरके अध्यक्ष, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, के

अध्यक्ष, दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुरके सचिव, पत्रकार महासंघ , धनुषाक राष्ट्रिय पार्षद आदिक रुपमे सेहो उत्कृष्ट काज कएने छथि। काठमाण्डुमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व सेहो कएने छलाह।

मधेस आन्दोलनमे योगदान ः

पत्रकारितासंगहि ओ मधेश आ मधेशीक विचार , समस्या आ समस्या समाधानक उपायआदिपर निरन्तर चिंतन मनन करैत रहैत छथि। २०६३ सालक मधेश आन्दोलनमे ओ अपन पत्रिका गामघर तथा जनकपुर एक्सप्रेस दैनिकके माध्यमसँ आन्दोलनके पक्षमे जनमत बनैबामे अहम योगदान देलनि। ओ स्वयं सेहो आन्दोलनके पक्षमे सडकपर उतरलाह आ अधिकारविहीनसभक अधिकार सुनिश्चित करैबामे सकृयता देखौलनि। ओतबे नहि,मधेश आन्दोलनक समयमे भातीय मिडिया आन्दोलनके गलत ब्याख्या क रहल छल , ओ एकरा नेपालसं अलग हइबाक आन्दोलनक रुपमे प्रचा,ित करैत छल , तखन बिचार भेलै जे ओइपारक समडियाके कोना अबगत कराओल जाए। समस्या ईहो रहैक जे ओ सभ ककरा कहल पर बिश्वास क सकैत अछि। तखन तय भेलैक जे भ्रमरजी उपयुत्तः पात्र हयताह आ हुनकासं सम्पर्क कएल गेल। ओ तत्काल स्वीकार क लेने रहटि।आ तखन घनघोर बर्षाक बीच पटना गेलाह राति दू बजे। मधेश आन्दोलनक कमाण्डर उपेन्द्र यादबजीसं लगातार सम्पर्कमे छलाह।दोसर दिन भेने अपन सम्बन्धके प्रयोग क मिडियाके धखाइते बजाओल गेल। हिनका चिन्ता छलनि जे ओ सभ कतेक रीस्पोन्स करैत अछि।मुदा जखन अति संक्षिप्त सूचना पर मिसडया पर्सनसभक जे यपस्थिति भेल ओ अदभूत छल। बक्ताक रुपमे भ्रमरजी मधेश आन्दोलनक ईतवृति सुनौलकनि आ स्पक्ष्ट कयलनि जे ई आन्दोलन अलगावक नहि जूडावक अछि जे दू नम्बरसं एक नम्बरक नागरिक

बनि देशक मूलधारमे आब चाहैत अछि जकरा अदौसं अलग रखबाक बाज होइत आएल छल। पत्रकार सम्मेलनक सफलता तखन बुझमे आएल जखन भोरका अखबारमे ई समाचार लगभग प्रत्येक अखबारमे आएल।

प्रथम मधेस आन्दोलनके अनुभव आ आन्दोलनके नामपर समाजमे पसरल साम्प्रदायिक द्वन्दके निरुत्साहित करैत सामाजिक सरभावक सन्देहके आधार बना ओ एकगोट उपन्यास लिखलनि घरमूँहा। जकर मुख्य विषयवस्तु मधेश आन्दोलन अछि। एहि उपन्यासकृ हिन्दी, भोजपुरी आ नेपाली भाषामे अनुवाद सेहो भ' चुकल अछि। एही उपन्यासपर हिनका पचास हजार टकाक गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कार पुरस्कार भेटल छन्हि।

रुची आ स्वभाव

भ्रमर व्यक्तिगत जीवनमे निक निकुत खायबला आ ब्राण्डेड कपडा पहिरनिहार व्यक्ति छथि। आर्थिक रुपसँ सक्षम परिवारमे जन्मल भ्रमरके बाल्यकालक यी सौख एखनहुँ विद्यमाने अछि। मंहग मोवाईल, कम्प्युटर, क्यामरा हुनक दोसर सौख थिक। कैमरामे नीक फोटो खिचब आ एहि फोटोसभके सुरक्षित राखब हुनक विशेषता छनि। एकर अतिरित ओ फिल्म निर्माण, फिल्म लेखनआदि कलामे सेहो निपुण छथि। ओ अध्ययन आ भ्रमण करबामे सेहो विशेष रुचि रखैत छथि। ओ नेपाल आ भारतसंगहि चीनक सेहो भ्रमण कएने छथि।

संदर्भ-

१) अजय अनुरागी ः लोकान्तर डटकम ः अनलाईन पत्रिका। प्रकाशन ः कात्तिक २, २०७६

२) गामघर साप्ताहिक,२०४१ चैत १ गतेक अंक सं।

3) मैथिली पत्रकारिताक इतिहासः श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर,मैथिली अकादमी,पटना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.४.भीमनाथ झा- लोकजीवनपर समेकित आलोक

भीमनाथ झा-संपर्क-7482066855
लोकजीवनपर समेकित आलोक

श्री भ्रमरजीक साहित्यचास बहुफसिला छनि । कोनो खेत एकफसिला होइ छै, कोनो दुफसिला छै जे बड़ उपजाउ ताहिमे तेसरो फसिल सुतरिए जाइ छै । ओहन खेत 'सोनाक टुकड़ी' कहबै छै । मुदा, हिनक खेतमें कोनों एहन फसिल छैके नै भरिसक जे उपजल नहि होइन, उपजैत नहि होइनि । इहो सुनने छिऐ जे केहनो उर्वर भूमि एकनेएक दिन उस्सर भऽ जाइ छै, जखन ओकर नमी सुखा जाइछै । मुदा, हिनक खेतक नमी तँ दिनानुदिन हरिआएले जाइत देखै छियनि । एहन जमीनके की कहबै ? हीराक टुकड़ी, पन्नाक टुकड़ी, मोतीक टुकड़ीजे कहि लियौ, सभ छजतै । तैं ने, बरु उनचासो बसात बहि जाओ, तैयो हिनक चासक पचासो गाछ सभ ऋतुमे लहलहाइते देखै छियनि ।

कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज, शोध, समीक्षा, टिप्पणी, डाइरी आदिआदि, जकर ओरसँ अनवरत चलि रहल छथि, तकर छोर एखन बहुत दूर छनि । बीचक जगहकेँ लगातार भरैत चलबाक छनि । से ई कऽ रहला अछि । हम एकरा

मध्यान्तर सैह मानैत छियनि । अपने पूछब कोना ? हम कहब तकर प्रमाण थिक ई पोथी 'मिथिलाक लोकजीवन ः लोकसन्दर्भ' । एते दिन में जतेः ई पढ़लनि अछि, जते ई देखलनि अछि, जते ई सिखलनि अछि, जते ई लिखलनि अछि, तकर झलक तँ लगातार विभिन्न पोथी सभमे देखबैत आबिए रहल छथि । एहि कृतिमे सभटाक निचोड़ आनिकऽ राखि देलनि अछि । अर्थात एहि पोथीकें लेखकक एतबा दिनक कार्यकौशलक 'रिपोर्ट' मानि सकै छी ।

एहि पोथीक रचना सभक लेखनचक्र चारि दशकसँ उपरेक होयबाक चाही । एतावता जाहि जाहि दिशामें जतेक दूर घरि हिनक बौद्धिक प्रवेश भऽ सकलनि अछि, तकर ठोस साक्ष्य तँ अवश्य ई कृति प्रस्तुत करैत अछि ।

एतऽ विवेच्य विषयक संकेत मात्र करबाक प्रयास कयल अछि

विषय

साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, शास्त्रीय एवं लोकपक्षीय अछि, जकर विचारक केन्द्रमे नेपालभारतस्थ समस्त मिथिलाक्षेत्रीय भूगोल आबि गेल अछि । लेखकक दृष्टिक व्यापकता तँ विषयक विविधता, निरीक्षणक सूक्ष्मता, सोचक स्पष्टता, अभिव्यक्तिक निर्भीकता एवं तर्कक अकाट्यता ताहीसँ प्रमाणित भऽ जाइत अछि ।

विद्वान लेखक मध्यकालीन गीतक उद्धारक चिन्ता व्यक्त करैत छथि तँ तिरहुतिया गीतक तालपर सेहो झुमैत छथि । एक दिस मिथिलामे पारम्परिक कीर्तनपरम्पराक खोज करैत छथि तँ दोसर दिस शिशुगीतक विभिन्न रूपक दर्शनो करबैत छथि । ऋतुगीतक परम्परामे पावस, होरी आ वसन्तक उल्लास बँटै छथि तँ गंगाक पावनताक रक्षा एवं कमलानदीक सांस्कृतिक महत्तासँ परिचयो करबैत छथि । अपन लोकसंस्कृतिक वैशिष्टय प्रकाशनक क्रममे

लोकचित्रकला, लोकनृत्य, (मिथिला आ जटाजटिन) एवं लोकदेवता (सलहेस दीनाभद्री एवं राजा भरथरी) के चरितचर्चा करैत हुनका लोकनिक महत्ता देखबैत छथि । तहिना, धनुषाक मकर, झूलन, जूडशीतल, श्रीपंचमी, परिक्रमा, छठि तथा रामनवमी सन मिथिलाक विशिष्ट पाबनितिहारकेँ सामाजिक समरसताक प्रतीक मानैत छथि । धार्मिक स्थलमे जनकपुर, अहल्यास्थान एवं दुहबी गढ़ीक विशेष उल्लेख भेल अछि । जनकपुरक एक सुविख्यात जानकी मन्दिर (नौलक्खा) के निर्माणसम्बन्धक निस्तुकी प्रमाणक अभाव मानैत ताहि दिस अनुसन्धानक हेतु विभिन्न सरकार आ जनताक ध्यान आकृष्ट करैत छथि । ऐतिहासिक घटनाक क्रममे कनिष्क आ हर्षवर्धन कें मिथिला आ नेपालसँ सम्बन्धकेँ सप्रमाण पुष्ट कयने छथि ।

नेपालमे मोडल विद्यापतिपदावलीक प्रसंग उठाय ताहिपर पाँच गोट अनुसन्धानमूलक निबन्ध लिखने छथि, जाहिमे ओकर खोज एवं तकर व्यापक अध्ययनक आह्वान कयल गेल अछि । हुनक अतिरिक्त लोककवि घाघ, कवीश्वरचन्दा झा, कविचूडामणी मधुप, महाकार्य यात्री एवं लोकगाथा उद्धारक काव्य विमर्श उपयोगी अछि । मैथिली कविता एवं पत्रकारिताक संगहिँ साहित्यमें नारी विमर्शपर फराकसँ विचार कयल गेल अछि । तहिना, एक निबन्धमें भानुभक्तक रामायण आ लालदासक रमेश्वर चरितक तुल्नात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण अछि । एकर अतिरिक्त नेपालस्थ मैथिलीक सामाजिक, राजनीतिक, क्षेत्रीय भाषानीतिक संगहिँ शिक्षानीतिक समस्याकेँ प्रमुखताक संग उजागर कयल गेल अछि ।

अन्तमें ईहो कहब जे संवेदनशील साहित्यकार द्वारा प्राकृतिक आपदा भूकम्प आ कोरोनाक त्रासदीकँे साहित्यमें समेटबाक दामित्वके कोना छोड़ल जा सकै छल, जाहिमे सम्पूर्ण मानवता तबाह भऽ गेल !

एतावता विषयवस्तुक संकेतसँ स्पष्ट होइछ जे समीक्षित पोथी सभ वर्गके पाठकक अपेक्षा पूर्ण करबाक योग्यता रखैत अछि । सामान्य पाठककेँ एतबा जनतब प्राप्त करबा लेल सात घाटक पानि पीबऽ पड़ितनि । अनुसान्धेत्सु ओ ज्ञानपिपासु गंभीर अध्येतागणक चिन्तनक हेतु अनेक बिन्दु भेटतनि एवं हुनका लोकनिमें स्वरुचि विषयक आर अधिक जिज्ञासा जगौतनि ।

सभसँ लाभान्वित तँ दुनू पारक 'भ्रमर' प्रेमी पाठक होयता जनिका अपन प्रिय साहित्यकारक अभिनव रूपक दर्शन होयतनि । अनेक देशमे बसल प्रवासी मैथिल समाजक ओ लोकनि, जे सभ अपने मिथिलामैथिलीक गरिमामय अतीत एवं उज्ज्वल वर्तमानक गुणगान तँ सुनैत छथि, किन्तु अपन धरोहरके जानि नहि सकल रहथि, तनिका सभक हेतु तँ ई पोथी मिथि मिथिला डाइरेक्टरी कही सैह थिकनि । हर्ष अछि जे अमेरिकाक मिथिला सेंटर अपन प्रकाशनक श्रीगणेश सर्वथा उपयुक्त पोथीसँ कयलक अछि ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.५.बिजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक संग साक्षत्कार

बिजय कुमार मिश्र

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक संग साक्षत्कार

१. राम भरोससं भ्रमर कोना बनलहुं ?

(१) ई गप थिक हाईस्कूलक। जखन मैट्रिकके परीक्षामे फाँर्म भरबाक समय अएलैक त किछु मित्र कहलनि जे नाम एहिमे भरबैक ओ स्थायी भऽ जाएत। हम 'भ्रमर' उपनामसं गद्य पद्य लिखैत रही। भेल जं एकरा फाँर्ममे लिखिदेबैक त 'भ्रमर' हमर स्थायी उपनाम भऽ जाएत। आ ताही लौल सं हम एकरा लिखने रही। मुदा हमर प्रधानाध्यापकके ई नहि पचलनि। ओ तकरा कटैत हमरा निक जकां फटकारलनि सभ चाहता है कि कविए बन जाएं..।

यद्यपि ओत हमर नाम त काटि देल गेल, मुदा हमर मोनमे उठल जे लक्ष रहए से एकटा संकल्प रुपमे रुपान्तरित होइत 'भ्रमर' उपनामक संग रचनाशील रहल। आ आइ हमर संग एहि तरहें जूड़ल अछि जे मैथिली मे जं 'भ्रमर' कही त प्रायः लोक हमरे बुझैत अछि।

२. नाटक,रंगमंच,गीत आदिक राम भरोस साहित्यसृजनक भ्रमरक कोना बनलहुं ?

(२) हम कहिचुकल छी शुरुएसं 'भ्रमर' लिखैत रहलहुँ। प्रायः तहिया हमरा लागल रहए 'भ्रमर'सं जते राग रंगक बोध होइत छैक ओ हमर काँच मोनपर हावी भऽ गेल छल। तएँ गीत हो, नाटक हो अथवा साहित्यक अन्य विधा..। हम निरन्तर 'भ्रमर' उपनामक संग लिखैत रहलहूँ।

३. सुनल अछि लोक गीत आ अन्य गीतक कैसेट सेहो कयने छी।ओकर परिणाम कहु ?

(३) हम बच्चेसं गीतक प्रति आकर्षित रहलहूँ। हाइस्कूलमे रहैत आठ पन्नाक एकटा गीत संग्रह 'जवानीक दिन' नामसं निकालने छलहूँ। जे रेलवे स्टेशन पर एकटा गायक द्वारा गाओल जाइत छल। बादमे हमर बहुतो गीत प्रसिद्ध भेल। नेपाली फिल्म 'सीता'मे होरी गीत खूब चर्चित अछि। तहिना मैथिली टेलीफिल्म 'एकटा आओर बसन्त' मे दूटा गीत फिल्मांकन भेल जाहिमे 'सखी हे सावनके बुन्न झिसी काफी लोकप्रिय रहल। किछु वर्ष पूर्व 'अरिपन' नामसं ९ गोट गीतक एलबम बहार केलहूँ जे भिडियो एलवम के रुपमे श्रोताबीच पसीन कयल गेल। हमर अपन यूटयुव चैनल अछि 'म्यूजिक' मिथिला' ताहिमे हमर आनो आनो गीत सभ राखल अछि।

्४. अपन साहित्य साधना,कला आ सांस्कृतिक साधनाक दस्ताबेजी शक्ल देबाक आबश्यकता कोना बुझलहुं ?

(४) नेपालमे पुस्तक प्रकाशनक अभाव रहलैक। जहिया हम लिखब शुरु कयने रही आंगुरपर गन जोग लेखक रहथि। ताहूमे पूर्णकालिक त नहिए। सभ कतौ ने कतौ रोजगारीमे लागल छलाह। हम जं कि ताहिसं मुक्त रही, पूर्णकालिक लेखक रहलहुँ। आ आइ पचास सं उपर पुस्तक प्रकाशित भऽ सकल अछि आ से विभिन्न विधाके। हमर सदैब मान्यता अछि अपन चिन्तन मननके दस्ताबेजी रुपमे राखि देबाक चाही। पाटकके तकर मूल्यांकन कर देबाक चाही। अपनेसं अपन लेखन वा ब्यक्तित्वके माथ पर चढा क राखब उचित नहि।

५.साहित्य, सिनेमा आ समाजक सरोकारके नकारल नहि जा सकैछ। एहिमे फिल्म निर्माणक भूमिका केहन हयबाक चाही ?

(५) साहित्य सिनेमा आ समाज एक दोस।राक अभिन्न थिक। एक दोसराक विना ककरो मोजर नहि भऽ सकैछ। साहित्य जहिना समाजके सचेत करैत अछि, सिनेमा सेहो सामाजिक सदभाव आ प्रेमके स्थापित करबाक माध्यम होइछ। तखन जत्त साहित्य अपनबाट छोड़बाक गलती करैत अछि, सिनेमा सेहो नीक सन्देश प्रवाहित नहि कऽ पवैत अछि। तएँ फिल्म सोद्येश्य आ सभके संग लऽ चलबाक सामथ्र्य रखनिहार हयबाक चाही आ ताहिमे साहित्य ओकरा अर्थ प्रदान करैत अछि।

६.मिथिलाक लोक अबदानके संरक्षित करबाक लेल फिल्म निर्माणक महत्व कतेक ?

(६) हम पहिने कहल अछि समाजक खूजल चित्रण थिक फिल्म। एत मिथिला आ मैथिल समाजक जीवन पद्धति, ओकर व्यथा कथा, हास परिहास

सभक संगोरक संग फिल्म बनत त ओकर महत्ता अपने आप समाजमे स्थापित भऽ जाएत।

७. फिल्म निर्माणक दृष्तिएं पुनौराधाम,जनकपुरधाम आ सीतामण्ी यथेष्ट शूटिंग मानल जाइछ। माता जानकी कहाँ धरि एहि लोकेशनमे जगह पौलनि अछि ?

(७) देखू ई त जानकारीक विषय भेल जे मां जानकीक जन्मस्थली सभक परिवेशमे फिल्म निर्माणक कतेक संभाव्यता छैक आ तकर उपयोग कतेक कयल गेल अछि। ओना फिल्मकार लोकनि एहि लोकेशन पर निरन्तर शूटिंग करैत अएलाह अछि। भले ओकर विषय वस्तु, मां सीताक जीवनपर आधारित नहि हो। नेपालीमे फिल्म बनल छल सीता। मुदा ओ जनकपुरक पृष्टभूमि पर नवकथाक संग पैघ बजेटक फिल्म छल। हमर गीत एही फिल्ममे राखल गेल छल। आइ काल्हि जनकपुरधाम जानकीमंदिर लगायतमे एकटा नेपाली फिल्मक शुटिंग एकमास सं भऽ रहल अछि। नाम अछि भागवत गीता। मुदा कथा किछु आरे छैंक। काल्हिए पुनौराधाम गेल रही। ओत कहल गेल जे एत्त शूटिंग होइत रहैत अछि। कोनो भिडियो अथवा शर्ट फिल्म आदिक। मात्र रामायणकालीन चरित्रके लऽ फिल्म बनल हो हमरा ज्ञात नहि अछि।

८.नेपालक फिल्म उद्योग आआ काठमाण्डूमे गायक गायिकाक संग गीतक भण्डार अछि। ओहिसं मिथिलांचल कहाँ धरि लाभान्वित भेल अछि ?

(८) नेपालमे नीक फिल्म उद्योग छैक। हं, एकरालेल कोनो फिल्मसीटी नहि भऽ पौलक अछि। तएँ एकर शूटिंग एहिना बौआ बौआ कऽ कयल जायत अछि। ढेरो कलाकार छथि, दर्जनो गीत बनैत अछि। एकसं एक गायक छथि मुम्वई धरिजा कऽ फिल्मक प्रोसेस होइत छैक। भारतीय गायक गायीकासं

गीत गबाओल जाइत छैंक। जं कि उदितनारायणजी नेपालीए छथि तं कही हुनको सं गीत गबाओल जाइत छन्हि। तखन एहि इण्डस्ट्रीजसं मिथिलाञ्चलके की उपलब्धि त गोलमोल शब्दमे कही त शून्य। कोनो स्थान विशेषपर शूटिंग कऽ लेब अथवा कोनो मिथिलाञ्चलक कलाकारके छोट मोट रोल दऽ उपकृत कऽ देब समग्ररुपें 'लाभान्वित'क श्रेणीमे नहि आनल जा सकैछ। हं तखन एक आधटा फिल्म आएल अछि जरुर जाहिमे मधेशक चरित्रकें आगां लाबि कथाके ओजन देल गेल अछि।

९.आधुनिकताक अनर्गल प्रभाव आ अपसंस्कृतिक परिवेश सिनेमाके दोषी मानेत अछि।एहना स्थितिमे मैथिली फिल्म निर्माण कोना हयबाक चाही ?

(९) आधुनिकताक नामपर जाहि तरहें फिल्मके कथानक आ अहिरन पहिरनकें नवरुप दऽ देल गेल अछि, ओ सर्वथा चित्तनीय विषय अछि। तखन दर्शककें अपना दिश घिचबाक लेल आ बाक्सअफिस पर पाइ असूलके लेल मात्र एकर उपयोग भऽ रहल अछि। एहन धारणा जं बनैत रहत त नीक फिल्मक गुंजायश कम भऽ जाएत। भोजपुरी फिल्मक बढ़ैत डेगक पाछांक कथासं मैथिली फिल्म निर्माता लोकनिकें शिक्षा लेबाक चाही, नक्कल कक नहि, ओहिसं जं कोनो नकारात्मक गन्ध अबैत छैक त बचि कऽ रहबाक लेल। हमरा सभक अपने समाजमे बहुतो एहन विषय अछि। तकर उठान कऽ दर्शक वीच आयल जा सकैत छैक। तकरा लेल व्यवसायिक निर्माता, निर्देकक जरुरति छैक जे मैथिलीमे नहि अछि। किछु बनल, चलबो कयल फेर जे हुसल त सम्हरल नहि।

१०.अपन महत्वाकांक्षी साहित्य आ सांस्कृतिक यात्राक मुख्य मुख्य अंशक बर्णन करी?

(१०) साहित्य आ संस्कृति हमरा सभक प्राण अछि। जाहि परिवेशमे हम काज करैत छी ताहिमे त आर एकर जिम्मेवारी बढि गेल छैक। हमसभ एहि पक्षके आगां लयबाक लेल प्रतिवद्धतापूर्वक लागी।

जहिया कहियो साहित्य सेवाक अभियान शुरु करने रहि तहिया मात्र अपन साहित्यिक इच्छा पूर्तिक लेल उत्साहित भऽ लागल रही। बादमे जखन हम ई अनुभव कएलहुँ, मैथिली भाषा, साहित्यमे हमरा सन लोकक काज करब कठिन छैक आ संख्या सेहो नगण्य छैक त ई हमर मीशन भऽ गेल। जाति पाति आ वर्ग विभेदक जालमे फसल मैथिलीके सभ वर्ग क्षेत्रक भाषाक रुपमे स्थापित करबाक एकटा लगन हमर महत्वाकांक्षाके आगा बढौलक आ संभवतः तकरे परिणाम स्वरुप हम निरन्तर समाजसं प्राज्ञिक व्यक्तित्व आ संस्थासं सम्मानित होइत रहलहुँ अछि।

भले हमर अभियान देरीसं मान्यता प्राप्त कैलक आ तकर कारण एकला चलो केर बाध्यता रहल। मुदा जखन स्वीकृत भेलहुँ त तेहने सम्मान आ अबसर अबैत गेल। हमर इएह साहित्यिक आ संस्कृतिक यात्रा हमरा नेपालक बहुत प्रतिष्ठित संस्थान 'साझाप्रकाशन'क पहिल मधेशी अध्यक्ष बनौलक, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य बनौलक आ एखन मधेश प्रदेश सरकार द्वारा गठन कएल गेल 'मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्षक रुपमे काज करबाक अवसर प्रदान कएल गेल अछि। कहबाक जरुरति नहि, जाहि साहित्यिक आ सांस्कृतिक यात्राके लेल हम निरन्तर निजी स्तर पर लागल रहलहुँ, आव सरकारी स्तर पर ताहूसं नीक ढंगसं, उचित प्रक्रियासं एहि क्षेत्रक लेल काज कऽ सकब।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल

साक्षत्कार- दिनेशचन्द्र गोपाल

मैथिली पत्रकारिता अयनामे अपन अनुहार देखि देखि खुश होएबा लेल करैत छी:बरिष्ठ समहित्यकार,सम्पादक श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर

आबक दिनमे श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर कोनो परिचयके मोहताज नहि छथि। विक्रम सम्वत २००८ सालमे स्व. रामगुलाम कापर आ स्व. दुखनी देबीक सन्तानकरुपमे धनुषा जिल्ला,बघचौरा गाममे जन्म लेने श्री भ्रमरक एखन धरि तीन दर्जन विभिन्न विधाक पुस्तक प्रकाशित छन्हि त जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक(नेपाली),गामघर साप्ताहिक(मैथिली) आ आँजुर द्वैमासिक(मैथिली)के प्रधान सम्पादक,प्रकाशकक हैसियतसं संलग्न छथि। नेपालीय मैथिलीमे सशक्त हस्ताक्षरक रुपमे स्थापित श्री भ्रमर सम्पूर्ण मैथिली संसारमे अपन उपस्थितिके मजबूतीक संग राखि चुकल छथि। एखने हिनक दोसरो रुप मैथिली संसार देखलक अछि एकटा सशक्त गीतकारक

रुपमे। हिनक अरिपन भिडियो एलबम हालेमे बहार भेल अछि जे काफी चर्चित भ रहल अछि। ई अनेको बिधामे अिखैत छथि मुदा मूलरुपसं ई कवि छथि आ एखन धरि हिनक तीन गोट कविता संग्रह प्रकाशित छन्हि आ चारि गोट कवितासंग्रहक सम्पादन कएने छथि।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"सं पत्रकार दिनेशचन्द्र गोपाल क बीच भेल बातचितक सारसंक्षेप एत्त प्रस्तुत अछि।

1. मैथिली पत्रकारिता कहिया सं प्रारम्भ कयल?

-हम २०३० सालमे अर्चना पत्रिकाक प्रकाशन कयल, जे अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषदक प्रकाशन रहैक आ हम सम्पादक रही। बादमे हमरे प्रकाशन कर पडल जे एक दशकसं उपर धरि जारी रहल।

2. मैथिली पत्रकारिताक चुनौती आ सम्भावना केहन बुझ्ना जाइछ?

-मैथिलीमे पाठकक अभाव छैक। पत्रिका बिकाइत नहि छैक। जे केओ अपन लगानी आ प्रयाससं निकालितो अछि त ओकरा स्तरीय रचना भेटैत नहि छैक। जँ कि पत्रिका के बाजार नहि छैक,ब्यबसायिकरुपें लोक आब नहि चाहैत अछि। परिणामतः मैथिली पत्रिकारिता अबूह भ क रहि गेल छैक। बहुरंगी मिथिलाआबाज सन पत्रिका करोडो टकाक चूना लगा गेल प्रकाशकके,मिथिलाक गढमे ससरि नहि सकल। जहाा धरि सम्भावनाक गप अछि कानो तरहें उल्लासमय नहि।पेट काटि बहार बरैत रहु आ अयनामे अपन मुँह देखि देखि प्रशन्न होइत रहु।

3. मैथिली पत्रकारितामें एतेक रास चुनौती होईतो फेर साहित्यिक पत्रकारिता तरफ कोना आकर्षित भेलौ?

-कहलहु नहि, अयनामे अपन अनुहार देखि देखि खुश होएबा लेल।

4. आँजुर कतेक वर्ष सं प्रकाशित होईत अछि?

-वि.स.२०४५ सऽ शुरु भ दश बर्ष धरि चलल। फेर बन्न भ गेल से पुनः २०७१सं प्रारम्भ भेल अछि आ निरन्तर जारी अछि।

6. पञ्चायतकालमें पत्रपत्रिका प्रकाशन करब त बड दुरुह छलै , अपने कोना डेग आगा बढेलियै?

-ओहि समयमे पत्रिका दर्ता करा क प्रकाशित करब दुरुह जरुर रहै। तखन अर्चनाक प्रकाशन संकलनक रुपमे भेल रहए। आ से विशुद्ध सहित्यिक मात्र। आनो पत्रिकासब आयल रहै,सब मात्र साहित्यिक संकलनक रुपमे। राजतन्त्र आ राजाक विरुद्धमे कानो शब्द नहि आबि सकैक तकर ख्याल कर पडैक। जहाँधरि समाचारपत्रक बात छै त गामघर साप्ताहिकक प्रकाशनमे हमरा बड बड पापड बेल पडल रहए। एकदशकक अथक प्रयासक बाद तत्कालीन सीडियो दामोदर रेग्मीक सहयोगसं २०३८ सालमे एकर प्रकाशन संभब भ सकल। जे आई धरि निरन्तर जारी अछि आ मैथिलीक माइल स्टोन पत्रिका मिथिलामिहिरक बाद सबसं बेसी समय धरि नियमित चलबला पत्रिका बनि सकल अछि।

7. सरकारी प्रताडना, वा त्रासक कोनो अनुभव।

-प्रताडानाक त तेहन कानो अनुभव नहि, मुदा त्रास त निरन्तर बनल रहैत छल।

8. महाकवि विद्यापति नेपाल प्रवास सम्बन्धमे अपनेक धारणा की थिक?

-कोनो नव नहि। राजा शिवसिहक संकटकालमे महाकवि विद्यापति रानी लखिमाके सुरक्षार्थ नेपालक राजापुरामित्यक ओहिठाम ल अनलखिन्ह जे बारह बर्ष धरि रहलाह। एहि अबधिमे श्रीमद्भागवतक लिप्याँतर,लिखनावलीक रचना आ कतेको सुप्रसिद्ध गीतसभक प्रणयन कएलनि जे आइ इतिहासमे हुनक प्रमाणिक रचना मानल जाइत अछि। साँच कही त सम्पूर्ण मैथिली साहित्यके नेपालक ई पैध योगदान छैक।

9. नेपालमें मैथिली पत्रकारिता आ साहित्यिक अवस्था केहन बुझना जाईछ?

-पत्रकारिताक त कहिए देलहु,तखन साहित्यक बात करी त ई पूर्णरुपेंण जगजियार भ रहल अछि। लोकमे कानो तरहें साहित्य लेखन मात्र नहि तकरा प्रकाशनक जोश उत्पन्न भ रहलैक अछि ,एहिसं आनक भरोसे फौजदारी खेलएबाक परम्पराक अन्त होइत देखि पडि रहल छैक।

10 अपने नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठँनक प्राज्ञ परिषदमें छलौह, प्रतिष्ठानमें मैथिलीक दिशा दशा केहन अछि?

-हम अपन अबधि भरि जे किछु भ सकल कएल, यद्यपि प्रज्ञामे मैथिलीक कोनो अलगसं बजेट नहि छैक। एहनो स्थितिमे लगभग आधा दर्जन मैथिली पुस्तकक प्रकाशन आ तहिना एक दर्जन जतेक मैथिलीक बिभिन्न विधापर संगोष्ठीक आयोजन कएलहुँ। हमरा छोडला आठूवर्षसं उपर भ गेलै, एक्कोटा कोनो कार्यक्रमक सूचना नहि अछि। हमरा प्रज्ञामे रहब किछु गोटेके बोझ भ गेल रहनि। तखन एहनो अबस्थामे हुनका सभक आश्चर्यजनक चुप्पी रहस्यमय अछि।

11. राष्ट्रिय स्तर पर प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्धारा प्रकाशित आँगन मैथिली पत्रिकाक अवस्था की अछि?

-जखन हम प्रज्ञसभामे गेल रही तहिए एकर प्रकाशन करबौने रही आ हमर कार्यकालमे अनेको एतिहासिक महत्वक बिशेषाँकक प्रकाशन भेल रहैक। एम्हरो प्रकाशित होइत रहल अछि।

12 मैथिली पाठय पुस्तकक अध्ययन विद्यालयमुखी किएकनै भ रहल अछि?

-ई त पाठ्यक्रम विकास केन्द्रके पुछबाक चाही। माल जँ गुणस्तरीय छैक त बाजार त पएबाक चाही। से कोनो विद्यालय एकरा स्वीकार नहि क पाबि रहल अछि आने विद्यार्थीएके एखनका पुस्तकमे रुचि छैक। मैथिली भाषाक प्रचार प्रसार एहिसं रुकल अछि, मुदा ककरो लेल धनसन।

13. अपनेक जीवनक कोनो अविस्मरणीय पल।

-हँ, २०५२ सालमे जखन पहिल मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार हमरा भेटल छल। एहि दुआरे नहि जे ओकर उनतीस वर्षपूर्वक राशि पचास हजार टकाक रहै। ओ एहि दुआरे जे मैथिलीमे आई काल्हि जेना गुट बना पुरस्कार बँटबाक परम्परा विकसित भ रहल अछि , से एहिसं भिन्न सर्बथा अप्रत्याशित ओ घोषणा एखनो रोमाँचित क दैछ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.७.अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा'

अशोक-संपर्क-8986269001

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा'

घरमुँहा उपन्यास २०१२ ई.मे प्रकाशित भेल अछि। २१म शताब्दीमे मैथिली उपन्यासक प्रकाशनमे गति आएल अछि। वर्ष २०१२मे गौरीनाथक 'दाग', प्रदीप बिहारीक 'शेष', हेतुकर झाक 'पराती', नीरजा रेणु केर 'इजोत', मधुकांत झा केर 'ममता जोगी', मनमोहन झाक 'कृष्ण सर्प' के संग भ्रमरक 'घरमुँहा' उपन्यास आएल। एहिसँ पहिने हिनक कोनो उपन्यास नहि आएल रहए। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालमे मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार छथि। हिनक कविता,गीत,गजल केर संग्रह प्रकासित अछि। दू टा कथा संग्रह 'तोरा संगे जएबौ रे कुजबा' आ 'हुगली उपर बहेत गंगा' सेहो प्रकाशित छनि। नाटक आ शोध छनि। आलेख सभहक संग्रह छनि। पत्रिकाक संपादन लगातार कऽ रहल छथि। पोथी सभहक संपादन केने छथि।

घरमुँहा उपन्यास नेपालक मधेश आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे पहाड़ी युवती आ मधेशी युवकक प्रेमकथापर आधारित अछि। कथा हो वा कविता प्रेम भ्रमरक स्थायी भाव रहल अछि। एहि उपन्यासक संबंधमे प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र

विमल भूमिकामे लिखने छथि जे "आख्यानकार भ्रमर आपना समयक प्रमाणिक खिस्सा आबए बला पीढ़ी दर पीढ़ी धरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तें प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्ठा, मृतिका, सन्दी सन आदिसँ समकालीन मधेशक जीवन्त मूर्ति तैयार कऽ समाजिक संबंध-बंधक रागमयताक रंग ढेउरल गेल अछि जे हृद्यहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणे अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।"

मधेश क्षेत्रमे रहनिहार कतेको पहाड़ी परिवार ओहिठामक जीवन ओ संस्कृतिमे रचि-बसि गेल अछि। कतेको व्यक्ति ओ परिवारक बीच मित्रता ओ स्नेह कायम भऽ गेल छैक। मधेश आन्दोलन तीव्र भेलापर ओहिमे कतेको अराजक ओ हिंसक तत्व सक्रिय भऽ जाइत अछि। अपहरण, लूट आदिक धंधा करऽ लगैत अछि। एहि उपन्यासमे मधेश आन्दोलनक विस्तृत वर्णन अछि।

उपन्यासमे रमेश उपाध्याय एक शिक्षक छथि। ओ पहाड़ी मूल के छथि। एहन कतेको परिवार मधेशमे अछि। मधेश आन्दोलनकेँ ओकर सभहक समर्थन छै। आन्दोलनी ओ सरकारक बीच बहुत बेर समझौता होइत छैक। माँग सभ मुदा पूरा नहि भऽ पबैत अछि। किछु लोक आन्दोलनकेँ हिंसक बनबऽ चाहैत अछि। लोक सरकारी दमन ओ शोषणसँ त्रस्त भऽ गेल अछि। क्रमशः पहाड़ी आ मधेशीक बीच वैमनस्य पनपि जाइत अछि। हिंसक तत्व सभ आ लूट करबामे लागि जाइत अछि। अही क्रममे रमेश उपाध्याय केर बेटी किरणक अपहरण भऽ जाइत छैक।

किरण जे एक पहाड़ी मूलक अछि ओकरा मधेशी कामेश्वर सिंहक बेटा राजीवसँ प्रेम छैक। दूनू विवाह करऽ चाहैत अछि। दूनूक परिवारकेँ सेहो कोनो

आपत्ति नै छैक। उपाध्याय के दस लाख फिरौती देबाक रहैत छनि। एहि लेल अपन मकान बेचि दैत छथि। राजीवकेँ ई ज्ञात होइत छैक जे एहि अपहरण उद्योगक सरगना ओकरे बाप छैक। ओ अपन माएसँ मीलि कामेश्वर सिंहक विवेककेँ जगबैत अछि। अन्ततः किरण मुक्त होइत अछि। राजीव संग ओकर विवाहक निर्णय दूनू परिवार करैत अछि। उपाध्याय जे पहाड़ दिस घूरि जेबाक निर्णय केने रहथि से पुनः ओहीठाम रहि जाइत छथि। एहिमे हुनक मित्र जगमोहन सहयोग करैत छथिन। मकान सेहो बिक्री नहि होइत छनि।

एहि उपन्यासमे पहाड़ी आ मधेशी लोक सभहक बीच एकठाम रहबाक कारणे आपसी मित्रता ओ भाइचाराक यथार्थ सेहो उभरि कऽ आएल अछि। संगहि क्षेत्रक स्वायत्ता आ विकास के समानान्तर विभिन्न क्षेत्रक मनुक्ख आ ओकर मनुक्खता सेहो उजागर भेल। उपन्यास कहैत अछि जे वस्तुतः मनुक्खे सर्वोपरि थिक।

संघर्ष, आन्दोलन, अपहरण, लूट, प्रेम आदि घटनाक आधार लऽ कऽ बूनल ई उपन्यास रहस्य ओ रोंमांचसँ भरल अछि। संपूर्ण उपन्यासमे रोचकता बनल रहैत अछि। 'घरमुँहा' नाम केर संबंधमे उपन्यासकारक कहब छनि जे "घरमुँहा" नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्व कतौ आएल होइक से संभव, मुदा हमर एहि उपन्यासक केंद्रीय पात्रक मनःदशा, अपन जन्मधरतीसँ लगाव आ प्रम आ विस्थापनक बाबजूद अवसर भेटिते जन्मधरतीपर घुमबाक अद्भुत उत्साह, स्फूर्ति 'घरमुँहा' शब्दकेँ सार्थकता प्रदान करैत अछि। तँए एकरा ताही रूपमे ली से आग्रह"। वस्तुतः ई उपन्यास कहैत अछि जे जाति,वर्ण, पहिचान बहुत माने नहि रखैत अछि। माने रखैत अछि मानवीय स्नेह,व्यव्हार, प्रेम, सदाशयता, मित्रता, मानवीय संबंध, जुड़ाओ। एही जुड़ाओ आ लगाओ संग जतऽ लोक रहैत अछि सएह "घर" थिक। मुदा एहि

घर लेल मनुक्ख आ मनुक्खता अपेक्षित अछि। एही ठाम आबि कऽ 'घरमुँहा' मनुक्ख अपनाकेँ सार्थक बना लैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.लालदेव कामत-डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

लालदेव कामत, संपर्क-०७६३१३९०७६१

डा० राम भरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

स्वनामधन्य ७१ वर्षीय बघचौरा गाम निवासी श्री रामभरोस कापड़ी एक व्यक्तियेटा नहिँ अपने आपमे एक संस्था सन लोक छथि। ई बहुआयामी प्रतिभा'क धनी साहित्यकार छथि। हिनक जन्म २००८ संवत् ,साउन मास तदनुसार ५ मई १९५१ कैँ नेपाल देशक धनुषा जिला केर गाउं पालिका वार्ड - ४ बघचौरा नामक गाममे भेल छन्हि। वर्तमान मेँ ई रहय छथि उप नगरपालिका

वार्ड १ शिवपथ जनकपुरधाममे,जतय ओ पाँच दशक सँ अहर्निश मैथिली साहित्य लेल सेवा करैत अयलाह अछि। हिनक दादा मिठू लाल पेसर मनोरथी क' पुत्री दाया रहनि आ पुत्र राम गुलाम व पुत्रवधू दुखनी देवी कैँ दू पुत्र क्रमश: सुकुमार आ रामभरोस एवं एक पुत्री सोनावती भेलनि। रामभरोस कापड़ी जीक किशोर अवस्था मे धनुषा जिलाक भगवानपट्टी गामक दलतीया देवी कैँ संग विवाह भेलनि,जाहि सँ तीन पुत्र क्रमश: राम नारायण कापड़ी- जनकपुर एक्सप्रेस क'सम्पादक आ राजनीति सँ सम्बन्ध , प्रदीप कापड़ी - नेपाल खाद्य संस्थान मेँ कार्यरत आ संदीप कापड़ी - उच्च कोटिक कम्प्यूटर ग्राफिक एक्सपर्ट , एवं दू विवाहित बेटी प्रमिला छन्हि। कापड़ी जीक साहित्यिक नाम 'भ्रमर ' शव्द चर्चित छन्हि। बालपनमे हिनक शिक्षा - दीक्षा गामेक एक गिरहस्त कन्हाई साहूक दलान पर मधुकरही निवासी गणेश लाल कर्ण जीक चटिसारमे शूरू भेलनि। हिनका ५०बिगहा जमीन जत्था आ जनकपुर टीशनक उत्तरवारि कात पक्का मकान रहनि, ततहि रहिकय सरस्वती हाई स्कूल सँ मैटरिक पास कयलाह। ओ त्रिभुवन विश्वविद्यालय काठमांडू के अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस सँ मैथिली विषय(पहिल बैच) मेँ एम ए,पी एच डि० (मानद) धरि कयने छथि। नेपालक मधेशक सरकार अपना प्रदेशमे मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क गठन कय लम्वित ऐ योजनाके मंत्री परिषद सँ मंजूरी दैत हिनका संचालन समिति केर अध्यक्ष बनौलक हन्। साहित्य क्षेत्रमे हिनक ५०म् कृति मिथिला'क लोकजीवन; लोक संदर्भक किछ मास पूर्व जनकपुर धाममे विमोचन भेल छल। एहि सँ पूर्वहि ओ नेपाल सरकारक नियुक्तिमे साझा प्रकाशन अध्यक्ष आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य भ' चुकल छथि।

भाषा समृध्दि लेल भ्रमरजी ओतुका मुख्यमंत्री लालबाबू राउत जीके ज्ञांपन दैत एक समय बुझौने रहथिन - स्थानीय किछु संघ , संस्था के उठल माँगपर सहानुभूति पूर्वक विचार कयल जाय। आब मधेश सरकार अपन प्रदेशमे

मातृभाषा उत्थानक लेल एतुका संस्कृति, कला, नाट्य, संगीत, पुरातत्व अधिक उत्थान हेतु काज आरंभ केलक। एहि विभाग क' विकासमे लागल, हेरायल , नुकाएल प्रतिभा सबके खोजिकय तकर संरक्षण , सम्बर्धनक संगहि ,सम्मान आ पुरस्कारक व्यवस्था ई प्रतिष्ठान करबे करत , पुस्तकाकार प्रकाशन सेहो । पूर्वमे रामभरोस जीकेँ नेपाल विद्या मैथिली भाषा साहित्य पारोतोषिक सेहो भेटल छन्हि। हिनका नामे आरो अनेक पुरस्कार भेटल छन्हि।

नेपाली आदि कवि बसकट्टा भानुक प्रथम कविता सँ प्रेरणा पाबि ओ बन्न कोठरी औनाईत धुआँ रचलनि। नेपाल' क पहिल 'क' श्रेणिक मैथिली भाषा मेँ "आंजुर - पत्रिका" केर विगत ३२ शाल सँ सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। जेबकट्टा गिरहकट्टा गरदनिकट्टा'क इतिहास कोना लिखू हम , श्रद्धांजलि रूपेँ - आजुक संदर्भमे भानुकेँ प्रति हिनक श्रद्धांजलि कविता पढैत पाठक निमग्न भ' जाईत छैक। हिनक दीर्घ कविता 'नहिँ आब नहिं ' पाठ्य करय योग्य पाठकके बुझाई छन्हि।कथा विधामे हिनक - तोरा संग जेबौ रे कुजबा केँ मैथिली अकादमी- पटना सँ १९८४ मेँ पुरस्कृत कयल गेल रहनि।गजल संग्रह- मोमक पघलैत अधर-१९८३,गीत गज़ल संग्रह अपन अनचिन्हार- कविता संग्रह १९९०,रानी चन्द्रवती ,नाटक - एकटा और बसंत , महिषासुर मुरादाबाद,अन्ततः कथा संग्रह, मैथिली संस्कृति बीच, रमाउंदा- सांस्कृतिक निवंध संग्रह नेपाली मेँ आ हिनक " नहिं आब नहिं" केर मैथिली अनुवाद भयो अब भयो, मनु ब्राजाकी द्वारा कयल गेलनि अछि। कविता - बिसरल - बिसरलसन, जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिंग),लोक नाट्य : जट जटिन (अनुसंधान) छन्हि। हिनक सम्पादन कयल - मैथिली पद्य संग्रह,लाबाक धान कविता संग्रह-माथुरजीक " त्रिशुली" खंडकाव्य, मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्य: भाव भंगिमा एवं स्वरूप - आलेख संग्रह बहुचर्चित भेल रहनि। हिनक प्रमुख पोथी :- युद्ध भुमिक

एसगर योध्दा, हुगली उपर बहैत गंगा, डॉ ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ नवारम्भ प्रकाशन सँ बहराएल ' एन्टीवायरस पोथी , सुली पर ईजोत प्रकाशित छन्हि। मैथिल लोक-संस्कृति विविध आयाम- ने.प्र.प्र. आ मिथिलाक सपुत : राजा सलहेस - दीनाभद्री,अहाँ जे कहलहुँ,अन्हरियाक चान,लोक नायक सलहेस (द्वितीय खण्ड),समयको अन्तराल पहुचाउँदै, सीमा के आर- पार,चीन- जे हम देखल(यात्रा संस्मरण) केर जोरा नँय छैक।

हम सब मैथिली भाषी लोक राम भरोस कापड़ी भ्रमर जीके गीति रचना भिडियों एलबंम निम्नलिखित सुनि कीर्त कृत्य होइत छी। यथा -:

१. अहाँ आबि की छनकय हमर कंगना

२. आउ,आउ,आउ दिल खोलिकऽ आउ

३. प्रिय प्राणनाथ सादर प्रणाम यौ

४. मचल आई होरी हो

५. मनके भीतर दर्द भरल अछि

६. बहमुआ हो , करि दैहो नैहर कैँ विदाई

७. रूनझुन रुनझुन बाजे पैजनिया हो

८. पाबिने हमई जोरिया

९. राखी कैँ बन्धनमे भैया ...

राम भरोस कापड़ी पिछरल समाज मेँ शिर्ष साहित्य सेवी छथि। कोनू नौकड़ी

स्कूल- कालेजमे नहिं केलनि। हिनक रचना संसार बोडरके दूनू पार खुब धूम मचेने छैक आ व्यापक समृध्दिक आचरण ग्रहण कयने छैक। कोनू पुस्तकालयमे एकठाम अध्येताके पढबाक हिनका मादे मातृभाषा अनुराग जानि सकबाक खगौट तँ अछिये।सवासय पोथीक सँख्याँ पुरना से हार्दिक शुभकामना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन

अजय अनुरागी

मैथिली भाषाक साहित्यकार भ्रमर हरेक बिधामे पुस्तक प्रकाशन

राम भरोस कापड़ि भ्रमर मैथिली भाषा साहित्यके प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। धनुषाके बाघचौडा गाम, जनकपुरधाम उपमहानगरपालिका वडा नम्बर १ आ हंसपुर नगरपालिका वडा नम्बर २ के ७० वर्षीय भ्रमर अखनो साहित्यिक रचना आ पुस्तक प्रकाशनमे सक्रिय छथि। ओ कहैत छथि, मैथिली भाषा साहित्यक क्षेत्रमे हम एकमात्र एहन व्यक्ति छी जे पूर्णकालिक छी।

मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे बहुत लोक कलम चलबैत छथि मुदा हुनकर मुख्य पेशा अलग अछि। लेकिन हुनकर कहना छै जे हुनक प्राथमिक व्यवसाय मैथिली भाषा साहित्यके क्षेत्रमे लेखन छैन्ह।

डा. धीरेन्द्रक कारणें साहित्यकार बनि गेलाह

जहियासँ जनकपुरक सरस्वती हाई स्कूलमे पढ़ैत छलाह तहियासँ भारतमे प्रकाशित बाल पत्रिका पढ़बामे रुचि छलनि। भारतक पटना, कलकत्ता, दिल्ली, मुंबईसँ प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका हुनक घरक समीप जनकपुर रेलवे स्टेशन पर पोथीक स्टा ल पर अबैत छल । हिन्दी भाषामे बाल साहित्य पत्रिका जेना भारतक मुंबईसँ प्रकाशित पराग पत्रिका आ दरभंगासँ प्रकाशित बालक पत्रिका पढ़ैत छलाह। पढैत मात्र नहि ,हुनक कतेको रचना बालक पत्रिकामे छपैत छल।

ओहि समय मे अपन घर लग जनकपुर स्थित राम स्वरूप राम सागर बहुउद्देशीय कालेजमे अध्यापन करयवला प्रोफेसर धीरेश्वर झा धीरेन्द्र के संपर्क मे आबि गेलाह। ओही कालेजक राजनीति विज्ञानक प्राध्यापक नारायण प्रसाद साह हुनके घरमे किराया लऽ कऽ रहैत छलाह। डा. धीरेन्द्र ओत्तहि नियमित अबैत रहथि। एही कारणे प्रोफेसर झासँ सम्पर्क भेलनि।

भ्रमर जखन क्लास ७ मे पढ़ैत छलाह तखन हिन्दी मे एकटा कथा लिखलनि जकर नाम छल इमान्दार बालक आ झा कैँ देखौलनि। ओ कथा हिन्दी मे लिखल गेलाक कारणेँ नहि देखलनि। झा कहलखिन जे कथा अपन मातृभाषा मैथिलीमे आनब तखन मात्र देखब। तखन मैथिली मे अनुवाद क देख देलखिन। आ प्रोफेसर साहेब एकरा पाँति दर पाँति सुधारि देलनि। आ फाइनल लिखि कऽ आन कहलखिन्ह।

भ्रमर संपादित कथा दोसर पेपर पर लिखि अनलनि। तकरा बाद प्रा..झा मिथिला मिहिर नामक भारतसं प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाक संपादक सुधांश शेखर चौधरीकेँ पत्र लिखि कथा छपबाक आग्रह केलनि। किछु दिनक बाद पत्रिकाक नेना भुटकाक चौपाड़ि स्तम्भमे भ्रमरक कथा छपल। तकरा बाद भारतक कलकत्तासँ प्रकाशित आंखर नामक पत्रिका मे (१९६८ई.)नव हस्ताक्षरक रूप मे हुनक लिखल अनहरिया इजोरिया नामक कविता प्रकाशित भेल।

हिनका द्वारा लिखल गेल कविता आ कथा भारतक विभिन्न साहित्यिक पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहल। जँ डा. धीरेन्द्र नहि रहितथि त हम सम्बभतः साहित्यकार नहि भ पबितहुँ भ्रमरक उक्ति छन्हि।

साहित्यके हर विधामे पुस्तक

पत्रकारिता पेशामे सेहो शुरुआत केलनि आ साहित्यक क्षेत्रमे सेहो लिखैत रहलाह। आब साहित्यक हरेक विधामे मैथिली भाषामे पोथी प्रकाशित क चुकल छथि। कथा, कविता, उपन्यास, आलोचना, नाटक, निबंध, यात्रा संस्मरण सहित सब विधामे पोथी लिखने छथि। आइके दिनमे ५०सं उपर पुस्तक प्रकाशित भ गेल छन्हि।

हिनक बन्न कोठारी औनाइत धुवा नामक काव्य संग्रह, नहि आब नहि नामक दीर्घ कविता, मोमक पघलैत अधर नामक गीत गजल संग्रह, अपन अनचिन्हार,युद्धभूमिक एसगर योद्धा नामक कविता संग्रह, अन्हरियाक चान गजल संग्रहक प्रकाशन भेल अछि। मैथिली भाषामे लिखल दीर्घ कविता नहि आब नहि के नेपाली भाषामे भयो, अब गयो शीर्षकसँ नेपाली भाषाक प्रसिद्ध साहित्यकार मनु बज्राकी द्वारा अनुवाद कयल गेल अछि । बाद मे ई दीर्घ

कविता नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित प्रज्ञा पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।

तोरा संगे जयबौ रे कुजवा, हूगली ऊपर बहैत गंगा, एण्टी भायरस नामक कथा संग्रह प्रकाशित अछि। हुनक दावा छनि जे नेपालमे मैथिली भाषामे हुनक लिखल तोरा संग जेबौ रे कुजवा पहिल आधुनिक कथा संग्रह थिक। हुनक ईहो दावा छन्हि जे ई कथा संग्रह बिहार सरकारक सरकारी संस्था मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित नेपालक पहिल आधुनिक मैथिली कथा संग्रह छैक।

हुनकर लिखल उपन्यास घरमुहाके भोजपुरीक बरिष्ट साहित्यकार उमाशंकर द्विवेदी भोजपुरी भाषामे आ भारतके चर्चित साहित्यकार डा.प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन हिन्दी भाषामे अनुवाद कएने छथि।। भ्रमर स्वयं कहैत छथि जे मधेश आन्दोलनक समयमे वर्षोंसँ जनकपुरमे रहनिहार पहाड़ी समुदायकेँ कोना मधेश छोड़य पड़ल छल ताहि पर लिखल ई उपन्यास हुनक पसीनक कृति थिक।

कतेको नाटक लिखने छथि। मैथिली भाषामे रानी चन्द्रवती, एकटा आओर बसंत, महिषासुर मुरदावाद, भैया अएलै अपन सोराज, सुली पर इजोत नामक नाटकलगायत दर्जनो नाटक प्रकाशित छन्हि आ मंचित होइत रहैत छन्हि। धर्मेन्द्र झा विहवल हुनक लिखल नाटकक अनुवाद नेपाली भाषामे भ्रमरका सर्वश्रेष्ठ नाटकहरु नामसं कएने छथि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न विचार संग्रह, निबंध संग्रह, यात्रा संस्मरण संग्रह सेहो प्रकाशित कएने छथि। समय समय पर कतेको पोथी आ रचनाक संपादन करैत आबि रहल छथि। भ्रमर कहैत छथि जे हुनका द्वारा लिखल गेल

कविता, नाटक आ कथा नेपाल आ भारतमे स्कूल आ विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ्यक्रममे शामिल कए पढ़ाओल जा रहल अछि।

साहित्यमे योगदानके कारण नेपालक सरकारी संस्था तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार(रु.५००००), विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, शेखर प्रकाशन पटना द्वारा शेखर सम्मान से सम्मानित कएल गेल छथि। तहिना मैथिली साहित्य परिषद जनकपुर द्वारा वैदेही प्रतिभा पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुंबई द्वारा मिथिला रत्न सम्मान, मधुरीमा द्वारा देल गेल नेपाल मधुरीमा सम्मान, चेतना समिति पटनाके यात्री चेतना पुरस्कार स सम्मानित भेल छथि।

तहिना साझा प्रकाशनकेँ साझा लोक संस्कृति पुरस्कार, विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार, पार्वती प्रतिष्ठान सिसौटिया सर्लाही केँ पार्वती सम्मान सँ सम्मानित कयल गेल छथि।

भ्रमर नेपालक पहिल मैथिली भाषाक साहित्यकार छथि जे नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद्क सभा सदस्य बनबामे सफल भेलाह आ बादमे परिषद्क सदस्य बनलाह। तहिना साझा प्रकाशनके अध्यक्षके रूपमे भ्रमर पहिल मधेशी व्यक्ति भेलाह। ओ अपन छोट कार्यकालमे नेपाली भाषाके अलावे मैथिली सहित अन्य भाषामे प्रकाशन शुरू केलनि। मैथिली बाल कथा संग्रह बगियाक गाछ हुनक कार्यकालमे पहिल बेर साझा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। आ जे साझा प्रकाशनसं पुरस्कृत सेहो भृल छल।

एतबे नहि, काठमांडू आ जनकपुरमे ३ टा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनके सफलतापूर्वक आयोजन कयलनि अछि।

हुनकऽ कहब छन्हि जे मैथिली भाषामे लिखी क समाजके बदलना या परिवर्तन करना बहुत कठिन काम छै। हुनक कहब छनि जे प्रकाशनक अभावमे मैथिली भाषाक साहित्य नहि फलल फूलल अछि, त प्रकाशक लोकनिक अभावसें पाठक धरि नहि पहंचि पबैत अछि।

भ्रमर कहैत छथि, "एहन स्थिति अछि जे स्वयं लिखनिहार लोक स्वयं पढ़ैत छथि वा अपन गोलक लोक पढ़ैत छन्हि, एकरा कीनि क पढ़बाक कोनो आदति नहि अछि। " मुफ्तमे बाँटबाक प्रवृत्ति अछि। मैथिली भाषाक जनसंख्या विशाल अछि, मुदा मैथिली भाषाक स्तरीयताक कारणेँ पाठक नहि अछि, भ्रमर कहैत छथि, "मैथिली भाषाक मानकके सहज बनाओल जाय आ जँ मैथिली भाषामे लिखल रचनाक अनुवाद नेपाली, अंग्रेजी आ हिन्दीमे कयल जाय" त आनोभाषा मे सेहो, एकरा बाजार भेटत।"

ओ टिप्पणी केलनि जे रचना मात्र पोथीक संख्या बढ़ेबाक लेल लिखल जा रहल हो त ताहिमे गुणवत्ता अभाव रहत। लिखबा लेल पहिने पढ़य पड़त। मुदा ओ कहैत छथि जे एतय पढ़बाक संस्कृति नहि अछि ताहि लेल समस्या अछि। साहित्य समाजक असली दर्पण थिक आ ओ दुख व्यक्त करैत छथि जे ई समाजक यथार्थक वर्णन करबाक लेल कम लिखल जारहल अछि।

ओ मैथिली भाषा सहित विभिन्न मातृभाषाके विकास लेल राज्य सरकारके आगा आबक चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

अश्विनी कुमार आलोक, संपर्क- 8789335785

रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

करीब डेढ़ दशक पहिने हम नेपाल गेल छलौं।कुनू साहित्यिक कार्यक्रम मे देश सँ बहरा भाग लेबाक ई हमर पहिला अनुभव छल।एकरा पहिने एक बेर आरो नेपाल गेल छलौं अपन दादीक आँखिक ऑपरेशन करेबाक लेल।लहान जेबाक क्रमे त ई बुझना पड़ल , जे दोसर देश मे जेबाक लेल कम सँ कम दू दिन चाही।मुदा ई नहिं लागल , जे लहान नेपाल मे अछि आ कि हम भारतक बिहार सँ गेल छलहुँ। तेहने घर - दुआर ,तेहने रहन - सहन आ तेहने बात -

विचार।जेहिना देश अहाँक , तेहिना हमर।हम एक - दोसर सँ कुनू सामरिक सीमा सँ सेहो विभक्त नहिं छी , कियेक त हमरा - अहाँक मध्य कुनू विवाद एहेन स्तर पर नहिं आएल।हमर संबंध बेटी - रोटीक संबंध छल , घर - परिवारक संबंध छल।

नेपालक जनकपुर मे ई कार्यक्रम भारत - नेपालक दूतावास कें आपसी संबंध सँ आयोजित कैल गेल छल। हम आदरणीय प्रफुल्ल कुमार सिंह ' मौन ' क संगे गेल छली।राति मे दरभंगाक संस्कृत शोध संस्थानक तत्कालीन निदेशक देवनारायण यादवक आतिथ्य स्वीकार कैल , सूर्योदय हेबाक पहिने बस सँ जयनगर गेलौं आ तकर बाद नेपालक बस सँ जनकपुर।जनकपुरक एक गोट विशिष्ट सभागार मे ओ कार्यक्रम दू दिनी आयोजित केल गेल छल , जकर मुख्य कर्ता - धर्ता रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' रहथि।उद्घानटक बाद पाँच टा कवि कें काव्यपाठ सुनेबाक मुख्य अतिथि मादे इच्छा व्यक्त केल गेल छल।ओ पाँच गोट कवि मे एकटा कवि हमहुँ छली।ताहि दिन सँ रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' सँ जुड़ल छी।हमरा मोन पड़ैत अछि , जे भारत मे कुनू महत्त्वपूर्ण मैथिली कार्यक्रम संभवतः नहिं भेल हुए , जाहि मे रामभरोसजीक भूमिका नहिं हुए।विशेषक' दरभंगाक कार्यक्रमे।ओ दरभंगा आ जयनगरक साहित्यिक धुरिएटा नहिं छथि, भारत आ नेपालक सांस्कृतिक संबंधक एकटा दायित्वसजग व्यक्तित्व छथि।जनकपुरक ओ कार्यक्रम सँ पहिने हुनक नाम बिहार सँ प्रकाशित हुए बला अनेक रास पत्र - पत्रिका मे पढ़ले छलहुँ। ओ मात्र कार्यक्रमक सूत्रधार नहिं छथि,सिद्धांत और व्यवहार सँ सेहो भारत आ नेपालक सांस्कृतिक समन्वयक हितचिंतक छथि।हमर आवास वैशाली जिलाक महनार मे अछि आ हमर आवास सँ कतोक दूर रहैत छलाह मैथिली आ नेपालीक प्रसिद्ध लोकसाहित्य विशेषज्ञ प्रफुल्ल कुमार सिंह ' मौन ' । मौन जी सँ हुनक बड्डु आत्मीयता छलनि,मौन जी ए त आबैत रहथि।मुदा मौन जी एत' भ्रमर जी सँ हमरा भेंट नहिं भेल। नेपालक ओहि कार्यक्रमक बाद

हमर भेंट एक बेर चेतना समितिक कार्यक्रम मे भेल छल , तकर बाद हुनक बेटीक घर पटनाक बोरिंग कैनाल रोड मे। हुनक जमाय इंजीनिर छथि,ओ पटना मे बसि गेल छथि।मुदा एहेन नहिं , जे जमाय नेपालक छथि।हुनक घर ओम्हरे कतो मधेपुरा,मधुबनी दिस छैन।अर्थात् ओ मूल रूप सँ बिहारक निवासी छथि।रामभरोस कापड़िक घर धनुषा ।हम मौनजीक संगे ओहि कार्यक्रमक दौरान गेल छली। ओ विशुद्ध साहित्यजीवी छथि,भावुक मनुष्य आ सजग पत्रकार। हुनक विशेषता ई अछि , जे ओ संबंध बनेबा आ संबंध के विस्तार देबा मे विश्वास रखैत छथि।हुनक साहित्य मैथिली आ नेपाली मे अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि। ओ लोकसाहित्य के मर्मज्ञ विद्वान अछि। लोकवार्ता के संग्रह आ विश्लेषणक क्षेत्र मे ओ मान्य विद्वान छथि। हुनक विद्वता मात्र पोथीक पढ़ला सँ नहीं संपन्न भेल अछि,ओ क्षेत्र भ्रमण आ संगति - सहयोग सँ अपन ज्ञानक विस्तार के पुष्ट केने छथि।हुनक साहित्य नेपाली आ मैथिलीक समृद्धिक काज करैत अछि।ओ निश्शंक रूप सँ भारत आ नेपालक संबंधक समर्थन करैत अछि। जहिना भारत आ नेपालक आपसी संबंध कुनू राजनीतिक सीमारेखाक ऊपर अछि,तहिना भ्रमरजीक साहित्य भारत - नेपालक सांस्कृतिक परंपराक प्रदक्षिणा करैत बूझि पड़ैत अछि।हुनक साहित्य लेखनक आरंभ नेपाल सँ भेल ,कियेत ओ नेपालक धनुषा जिला अवस्थित बघचौड़ा गाम मे जन्म लेलनि।पढ़ाई नेपालक त्रिभुवन विश्वविद्याल मे केलनि। मुदा हुनक पहिल साहित्य रचना 1964 ई मे पटना सँ प्रकाशित हुए बला प्रसिद्ध मैथिली साप्ताहिक ' मिथिला मिहिर ' मे छपल।ओ रचनाक नाम छल ' ईमानदार बालक ' ।तकर बाद ओ साहित्य आ पत्रकारिता कैं अपन जीवन समर्पित क देने छलथिन।हुनक पहिल पोथी मैथिलीक कविताक छल ' बन्न कोठरी औनाइत धुँआ ' ।एहि पोथी मे रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' ओ विसंगतिक चर्च कैने छथि , जाहि मे मनुक्खक जीवन औनाइत छल। मनुक्ख बुझैत अछि जे ओकर शोषण , दमन आ प्रताड़नाक जिम्मेदार लोक ताहि दिन धराशायी भ जायय,जाहि दिन प्रतिकार आ क्रांतिक

मशाल जरि जायत। मुदा एहेन नहिं भ सकैत अछि। मनुक्खक आगि ओकरा मे कुलबुलाइत अछि,ओकरे जरबैत अछि आ ओकर देह कुनू बन्न कोठरी जकाँ विवश ठार अछि,ओकर धुँआ औनाक' ओकरे प्रताड़ित करैत अछि।एहिना शोषक वर्गक व्यवसाय शोषितक निष्प्राण जकाँ मनोदशा सँ आगाँ बढ़ैत अछि।' बन्न कोठरी औनाइत धुँआ ' मे रामभरोस जी जे परिस्थितिक वर्णन करैत छथि,तकरे विस्तार एक गोट पैघ कविता पोथी ' नहिं , आब नहिं ' मे ओ केने छथि।मनुक्ख अपन पराजित जीवन सँ व्यथित अछि,बेचैन अछि आ बेर बेर ओ संकल्प लैत अछि , अपन जीवनक एहि गति जिम्मेदार लोकक ओ खबर लेति,मुदा ई संकल्प कत' फुरैत अछि।एहेन मनोदशाक वर्णन करबाक पीछू रामभरोस जीक कवित्व समूचा शोषित - उत्पीड़ित समुदायकें प्रतिनिधित्व करैत छनि।हुनक आरो मैथिलीक कविताक पोथी एहि प्रकारें अपन विश्वसनीय आधार बनबैत अछि,जाहि मे जीवनक समरस समाजक निर्माण हुए आ सभ कें समान अवसर आ अधिकार भेंटै।हुनक दू टा मैथिली कविता पोथी हुनक कवित्वक विस्तार आ ओकर आवश्यक वर्ण्य विषयक उदाहरण लक' काव्यविश्लेषक लोकनिकेँ अपन महत्त्व बतेबा मे सर्वथा सक्षम अछि ' मोमक पघलैत अधर ' आ ' अपन अनचिन्हार ' ।तकर बाद ' युद्ध भूमिक एसगर योद्धा ' आ ' अन्हरियाक चान ' हुनक कविताक ओ पोथी छल,जाहि मे एक दिस मनुक्ख प्रेम आ श्रृंगारक भाव सहेजबाक लेल प्रयत्नशील छल , त दोसर दिस ओ जीवनक युद्ध भूमि मे अपन युद्ध एसगरे लड़ेबाक लेल विवश छल। रिश्ता,संबंध आ भावक ह्रास करैय नवका समय मनुक्ख कें एक दोसर सँ कतेक विलगवैत अछि,रामभरोसजीक कवित्व ओकर चिह्नित करैत अछि।

ओ कविता लेखन सँ अपन लेखकीय जीवन शुरु केलनि,मुदा हुनक लेखन खाली कवितेटा मे नहिं रुकल। साहित्यक अनेक रास विधा ओ समृद्ध केलनि , जाहि मे कथा,उपन्यास , नाटक आ यात्रावृत्तक क्षेत्र विस्तृत छल।

हुनक कथा संग्रह ' तोरा संग जैबो रे कुजबा ' क प्रकाशन बिहार सरकारक मैथिली अकादमी कैले छल।' हुगली ऊपर बहैत गंगा ' आ ' एंटी भाइरस ' नामक हुनक कथाक पोथी हुनक कथाशिल्प मे ग्राम्य संवेदना आ गामक बदलैत स्वरूप कें विस्तार सँ बन्हबा मे सफल भेल।हुनक उपन्यास ' घरमुँहा ' घर सँ निष्कासित आ संत्रस्त एक गोट जीवनक तेहेन त्रासदीक कथा अछि , जाहि मे व्यक्तिक घर सँ दैहिक निष्कासन भले भ गेल हुए , मुदा मन सँ ओ अपन घर सँ बन्हाएल रहैत अछि।असल मे ई नेपालक मधेश आन्दोलन पर आधारित अछि ।आ पहिल उपन्यास सेहो।

रामभरोस कापड़ि ' भ्रमर ' लोक संस्कृति मे सामाजिक चेतना हेरनिहार एकटा विश्वस्त लोक छथि।नेपाली आ मैथिली मे हुनक अनेक रास पोथी छपल अछि आ ताहि कारण सँ ओ अपन दृष्टि आ विवेचना सँ चमत्कृत करैत छलथिन।हुनक एहि प्रकांड विद्वताकें अनेक रास सम्मान भेंटल अछि।भ्रमर जी हिंदी , नेपाली आ मैथिली साहित्य कें अनुवाद क्षेत्र मे अपन विलक्षण योगदान दैत दैत रहलाह अइछ। ओ भारत आ नेपालक सांस्कृतिक सेतु छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

चंद्रेश-संपर्क-9430640883

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

इन्द्रधनुषी सातो रंगक प्रतिच्छविकेँ अपनामे समेटने-बटोरने राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क वैविध्य साहित्य जनसमाजसँ जुड़ल अछि। हिनक रचना जन-जनसँ प्रभावित ओ परिवेशगत समय आ समाजसँ सम्बन्ध बनबैत अछि। हिनक दृष्टि शोषित-पीड़ित समाज दिस टकटकी लगौने सत्यानुभूति करबैत अछि। जनसमाजक हृदयक करुणा, पीड़ा, दया, प्रेम आदिकेँ उभारिकऽ जनसंवेदनाकेँ मानवीय मूल्यबोधक संवाहक भऽ जगबैत अछि।

जीवन-संघर्षमे जूझैत चलैत चढ़ैत-बढ़ैत कोनो रचनाकारक आत्मसजगता जँ मौलिक विचारधरामे कलात्मक ढर्घेँ स्वाभाविक यथार्थबोधक उपस्थितिबोध अपन रचनामे प्रस्पुफटितकऽ करबा दैत अछि तँ ओहन रचनाकार युग आ

समयक अतिक्रमण कऽ अपन एकटा फूट इतिहास रचि नवताबोधक सनेस बिलहि दैत अछि। अपने समय आ युगक अतिक्रमण कऽ हवाक विरोधमे चलिकऽ संकटापन्न स्थितिसँ जूझैत संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारब अबस्से सजग ओ सचढ़ रचनाकारक दायित्वबोध थिक। बहुआयामी व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी भ्रमरक साहित्यिक अवदान विशेषे अछि। ओ सदाबहार लेखक छथि जे रचनाकेँ सदाजीवी बनाकऽ ओहिमे अपन कलात्मकताक संग अपन वैविध्यपूर्ण विवेककेँ झोंकि पझाइत चिनगीकेँ लहका दैत छथि। जें ओ सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक छथि तेँ ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक भऽ साहित्यिक, राजनैतिक आ विचारधराकेँ एकसंग इंगित करैत छथि। देखब, परेखब आ स्पष्टतः इमानदारीपूर्वक काज करब अबस्से एकटा चुनौती ठाढ़ करैत छथि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अबस्से एहि चुनौतीकेँ स्वीकारैत अपन कलमक लोहा मनबैत छथि। लोक चेतनाक रचनाकार भ्रमर पाठककेँ समय आ संस्कृतिकेँ बुझयबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। एहि हेतु हिनक रचना अबस्से परम्पराकेँ नव रूपमे परिभाषित करैत वर्तमानक दुरुक्खा पर भविष्यसँ अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि। साहित्य आ संस्कृतिसँ सम्बन्ध हिनका छात्रावस्थाहिसँ जागल। हिनक पहिल प्रकाशित रचना 'इमानदार बालक' जे 1964 ई.मे मिथिला मिहिरक नेनाभुटकाक चौपाड़िमे आयल अछि। तकर बाद पीठियाठोक आठ गोट गीतक संकलन 'जवानीक दिन' 1965 ई.मे प्रकाशित भेल।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क जन्म 2008 साल साओन 22 गतेकऽ प्रमाणपत्रक अनुसारें बघचौड़ा, जिला- धनुषा, जनकपुर अंचल, गाबिस बघचौड़ा, वार्ड नं.-1 मे भेल। एहि गामक चौहद्दी अछि - उत्तर- मिथिलेश्वर मौआटी गा.वि.स., दक्षिण- मानसिंह पट्टी गा.वि.स.। हिनक वंशावली अछि-

मनोरथी कापड़ि

मीठू लाल कापड़ि

रामगुलाम कापड़ि ;पत्नी दुःखनी देवी

दयावती देवी सुकुमार कापड़ि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' ;पत्नी- दलतीया देवी सोनावती देवी

रामनारायण कापड़ि, प्रदीप कुमार कापड़ि, नगीना देवी, प्रमिला कुमारी देवी, संदीप कुमार

बघचौड़ा गामक नाम पड़ल हेतैक जे एतय बाघ चराउर करैत छलैक। एहि ठामक जमीन कोह-कहबैत छलैक जे अढ़ाइ-तीन किलोमीटर दूरी धरि छल। हिनक जन्म सुसम्पन्न परिवारमे भेल रहनि। गाम बघचौड़ा की कही, परोपट्टामे सभसँ धनीक घरमे। हिनक बाबूजीकेँ अग्गह-विग्गह जमीन, लाखक लाख लगानी, जमीन्दारोकेँ कर्ज दैत छलथिन। गामसँ बाहर सटले खेत रहनि। गोरहासँ लऽ कऽ कोह धरि। बड़द खड़कै छल तँ ओतहि उफपर होइत छल। एहि बीचमे आनक जमीन नहि छल। अपने खेतमे लीख। अपने खेतक आरिसँ पानि पटाओल जाइत छल। पटौनी प्रकृति पर निर्भर छल। चूरे पहाड़क पृष्ठभूमि जे पहाड़ 25-30 कि.मी.बेसी नहि होयत। पहिने 900 बीघा बाँधक छलैक। आब 300 बीघाक छैक जे बान्हिकऽ पटाओल जाइत छलैक। ओना आब बान्हक औचित्य समाप्त भऽ गेलैक। गहराइवला बोरिंग धँसाओल गेल छैक, मुदा तैयो उपयुक्त तेना भऽ कऽ नहि छैक। आब पाइप गाड़िककऽ प्लग लगाकऽ मोटरसँ जल टानैत छैक। अर्थात् ढेकुलसँ एक बीघा धरि पटौनी कयल जाइत छैक जाहिमे एक समयमे 5000 सँ 6000 टाका धरि लगैत रहैक, आब हजार लागिए जाइत छैक। धन, गहूम, तोरी, सरिसो आदि मुख्य उपजा छैक। बघचौड़ाक पूब अरहरी नदी जकर चौड़ाइ 25सँ 30 फीट आ गहराइ बेस छैक। गाममे हिनक

पिताक स्थिति- पात जेँ पूर्णतः सफल रहनि तेँ अदिकारी नामसँ सेहो जानल जाइत छलाह। कोनो दोकान-दौरी एहन नहि जे हिनक नाम उचरला पर केओ पाइ माँगय। सभकेँ हिनक पिता पर भरोस छलनि। ओ बघचौड़ा गाम पञ्चायतक तीन खेप प्रधन रहलथि। ओना ओ गामक मुखिया आ तकर बाद वैह पद भऽ गेल प्रधान पञ्च। ओ गामक पञ्चैती करथि। हिनके बाबू राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय बघचौड़ा खोललथि। ओ स्कूलमे अध्यक्ष भेलाह वा कही तँ सर्वेसर्वा यैह रहथि। एहीमे मैथिलीक नेपालक प्रतिष्ठित पत्रकार ओ साहित्यकार श्रीश्याम सुन्दर कापड़ि 'शशि' शिक्षक रहथि आ राजविराज कओलेजमे प्राध्यापक भेलथि। ओना वर्तमान समयमे आर.आर.कैम्पस, जनकपुरमे छथि। हिनक बाबूजीक बाद हिनक जेठ माय सुकुमार कापड़ि अध्यक्ष भेलाह आ तकर बाद राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' दस वर्ष लगभग एहि पदकेँ सम्हारलनि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' घरैसी-घरैया शिक्षा प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल गुरु मधुकरही निवासी गणेश लाल जे धरती पर भट्ठासँ ककहरा लिखेने छलाह। अ आ सँ व्यावहारिक गणित धरि। तकर बाद निम्न माध्यमिक विद्यालय बेलहीमे वर्ग 1 सँ 3 धरि पढ़लनि। ओहि विद्यालयक नाम एखन थिक माध्यमिक विद्यालय बेलही जे बघचौड़ासँ 2 कि.मी.अछि। पयरे आबाजाही। बहुत कठिनसँ गेनाइ-अयनाइ। बहादुर पकड़िकऽ लऽ जानि। पार्टी आ कचरा, करचीक कलम, बोड़ा ओछाकऽ बैसब आदि। वर्ग 4 सँ मैट्रिक अर्थात् एस.एल.सी.सरस्वती मा.बि.जनकपुर, साल 2025।

एकटा बात स्पष्ट कऽ देब उचित होयत जे 12 वर्षक अवस्थामे भगवान पट्टी, मानसिन्ह पट्टी, ग्राम वि.स.क अन्तर्गत दलतीया देवीक संग विवाह भेलनि। पाँचम सन्तानमे तीन गोट पुत्र आ दूटा पुत्री छनि। इहो कहब अनर्गल नहि होयत जे हिनक जन्म जाहि केओट परिवारमे भेल रहनि ताहिमे पढ़ाइ पर

ओतेक जोर नहि छल। मुदा, भ्रमर आई.ए.अर्थात् प्रवीणता प्रमाणपत्रासँ उत्तीर्ण कयलनि। ओ बघचौड़ामे जे पढ़ाइ प्रारम्भ कयने छलाह से कन्हाइ साहु नामक व्यक्तिसँ। ओएह सम्पन्न वर्गक ओहि ठाम पढ़बैत छलाह। ओ जनकपुर जे अयलाह से युगल किशोर लालक प्रेरणासँ। वैह हिनक बाबूजीकेँ प्रेरित कऽ पढ़ौनीक लेल जनकपुर जेबाक हेतु कहलनि। जेँ जनकपुरमे जगह-जमीन रहनि, एखनो छनि तेँ जनकपुरमे पढ़लनि। दोसर, डा.धीरेन्द्र सन अभिभावक भेटलनि आ हुनकेसँ प्रभावित भऽ अपन रचना-संसार बनौलनि।

ओ बच्चेसँ हिन्दी पढ़ैत छलाह। पत्र-पत्रिका पढ़लोपरान्त हिनका भेलनि जे हमहुँ लिखि सकैत छी। खासकऽ लिखबाक अनुभूति ओहि समयक लोकप्रिय उपन्यासकार कुशवाहाकान्त, गुलशन नन्दा आ कर्नल रंजीतक जासूसी उपन्यास सभ पढ़िकऽ लगलनि। गोविन्दसिंहक 'पपिहरा बाजय आधी रात' विशेष नीक लगैत छलनि। बालक, पराग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नर-नारी पत्रिका पटना आदिक पाठक ओ रहथि। हिनक लेखनमे विशेषकऽ यौनसँ सम्बन्धित नर-नारी प्रभावित कयलक आ आयल। पूर्वक रचनाकेँ देखिकऽ हिनका नारी मनोभावक विशेषज्ञ कहल जा सकैत अछि।

ईहो कहि देब उचित होयत जे भ्रमर नेनावस्थेसँ चन्सगर रहथि। जहिना पढाइमे तहिना धैंस जगयबामे। कही तँ Hero अर्थात् Healthy, Educated rich and organisation कहब जे पढ़िते छलाह से अबस्से। जनकपुर अयलाक बाद ओ अपन भैयाक संग कोनो नव सिनेमाकेँ प्रथम पालीमे देखिते छलाह। डॉ.धीरेन्द्रक नेपाल अयलाक बाद एक नम्बरक शिष्य भ्रमर रहथि। डॉ.धीरेन्द्र जँ नहि रहितथि तँ भ्रमर नहि रहितथि। दुनू अगले-बगलमे रहैत छलाह। ओहुना डॉ. धीरेन्द्रक जीवनमे शिष्योपशिष्य ढेर-ढाकी छनि

मुदा, भ्रमर आ भुवनेश्वर पाथेय महत्वपूर्ण रहलनि। सर्वहारा वर्गक प्रतिनिधित्वकेँ ओ चिन्हलनि।

मैथिली साहित्य परिषद्क गठन भेल तँ सचिव भेलाह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'। विद्यापति पर्व समारोह जानकी मन्दिरक प्रांगणमे मनाओल गेल। मातृका प्रसाद कोइराला, पूर्व प्रधनमंत्री, नेपाल मुख्य अतिथि रहथि।

हिनका दहिना कपार पर चोटक चिन्ह छनि। आम ओ रखैत छलाह, सतघरा खेल खेलाइत छलाह। आम लूटबाक लेल दौगलनि तँ एहि क्रममे टाटमे लागिकऽ कपार फूटलनि। ओ ओहि समयमे चतुर्थ वर्गक छात्र छलाह। तत्क्षण ओ बुझबो ने कयलनि जे कपार फूटि गेल अछि।

1968-69 मे हिनका अपन जेठ भाय सुकुमार कापड़िक धनुष-तीरसँ हिनक आँखिमे तीर लागल। मायक मानता छठि माइक अर्ध्य छनि जे आइयो देल जा रहल अछि। सूपमे सभ वस्तु-जात दऽ कऽ । ओ आनो कतेको मानता केने रहथिन।

स्वास्थ्य तँ यैह रहनि जे बच्चामे बेस मोटगर-डटगर वा कहीं तँ भोकना बिलाड़ रहथि। भैंसक दूध, घीक आ मीठा छुच्छे खाथि। सन्नूकमे गूड़क चेकी आ सौंसे टारामे बरकायल घीक भेटनि से बेस पाबथि। डॉ.आर.एन.सिन्हा गणितक प्राध्यापक कहने रहनि हिनका जे आबऽ वला समयमे गाड़ी पर तोरा लादिकऽ लऽ जाय पड़त। हिनक बाबूक भट्ठी सुरक्षित रहनि आ खूब पीबथि। मुदा, हुनकर निधन 84 वर्षक अवस्थामे भेलनि। ओहि परिवेशमे रहितो भ्रमर कहियो मद्यकेँ हाथ नहि लगौलनि। ओना तेना भऽ कऽ चाह-पान वा कही तँ दू टुक सुपारियो ने पबैत छथि। एहि वातावरण आ परिवेशसँ अपनाकेँ फराक रखने छथि।

हिनक प्रिय संगी केओ नहि रहनि। खासकऽ एहि स्तरक। ओना छात्रजीवनमे मुजफ्फरपुरक कामेश्वर प्रसाद अबस्से दस-पन्द्रह वर्षक मीत रहनि।

ओ जहिया एम.ए.कयलनि आ डा.धीरेन्द्रक कृपापात्र रहथि तँ ओ चाहितथि तँ गुरुक कृपा-फलसँ मैथिली विषयक प्राध्यापक रहितथि। मुदा, ओ एहि सेवाकेँ नकारलनि आ पत्रकारिता दिस ढुकलाह। तकर कारण छल जे आर्थिक सम्पन्नता। जेँ कोनो अभाव नहि खटकलनि तेँ नोकरीक विचार मोनमे नहि अयलनि। ओ मनमौजी प्रकृतिक रहथि तेँ स्वतंत्र जीवन-यापन करैत रहल छथि।

2026-27 सालमे ओ वैदेही साप्ताहिक कार्यालय प्रतिनिधि रूपमे उभरलाह। 2049 सालसँ कान्तिपुर राष्ट्रीय दैनिक पत्रक जनकपुर, संवाददाता शुरूक 5 वर्ष धरि रहलाह। प्रकाशक-सम्पादक भऽ ओ मैथिली 'अर्चना' पत्रिका प्रकाशित कयल। तकर वाद 'अंजुली' नेपाली मासिक आ मैथिलीमे द्वैमासिक 'आंजुर' प्रकाशित कयल। 2039 साल कार्तिक 4 गतेसँ गामघर प्रकाशित भेल जे नेपालसँ प्रकाशित पहिल आ एकमात्र समाचारपत्र साप्ताहिक अछि। जकर प्रकाशन आइयो भऽ रहल अछि। सुप्रभात जे नेपाली दैनिक तकर आरम्भिक सम्पादक यैह रहथि। 'जनकपुर एक्सप्रेस' दैनिक अखबारक सम्पादन-प्रकाशन 2055 सँ यैह करैत छथि।

पचास वर्षक इतिहासमे नेपाल सरकारक पहिल बेर साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पद पर राजनीतिक नियुक्ति जे से नेपाल भरिमे 2021-22मे भेल अछि से रामभरोस कापड़ि भ्रमरकेँ बनाओल गेल। तहिना प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नेपाल सरकार द्वारा जे पहिल बेर मैथिली साहित्यकार भेल से हिनके नाम एहि खातामे दर्ज छनि।

नेपालमे मारिते रास क्षेत्रमे भ्रमर पहिल छथि।

1. पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा प्रतिष्ठान पुरस्कार 50,000 टाकाक हिनका देल गेलनि। ओ एहि लेल 2052सँ पुरस्कृत छथि।

2. 'नहि आब नहि' हिनक पहिल प्रेम काव्य छनि जे त्रिभाषामे प्रकाशित भेल अछि।

3. मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित नेपालक पहिल कथाकारक पोथी अछि 'तोरा संगे जेबौ रे कुजबा'।

4. नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित गोष्ठीमे 2048 सालक पुरस्कार पाँच हजार टाकाक 'सूली पर टाङ्गल इजोत'कैं भेटल अछि।

5. कोनो नेपालीय नाटक 'एकटा आओर वसन्त' नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे मंचित भेल अछि। एहि पोथीक तीनटा संस्करण भऽ चुकल अछि।

6. अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोहमे एहि नाटककैं द्वितीय पुरस्कारसँ प्रकाशित कयल गेल अछि।

7. 2067 सालमे हिनका 'पहिल लोक साझा संस्कृति' पुरुष मैथिली साहित्यकार कैं भेटल।

8. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समितिसँ भेटल।

9. शेखर सम्मान भेटलनि। ई पुरस्कार शेखर प्रकाशनक देन थिक।

10. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान' भेटल छनि।

11. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा मुम्बईमे 'मिथिला रत्न' सम्मानसँ सम्मानित छथि।

12. 2069 क विद्यापति पुरस्कार प्राप्त कयने छथि 2 लाख टाकाक।

13. 'पार्वती सम्मान' सिसोदिया सर्लाही द्वारा भेटल छनि।

एहिना आर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित भेल छथि। सम्मानक बोझ तर ओ स्वयं दबल छथि। हिनका आब जे सम्मान भेटैत छनि से हिनक उपलब्धि अबस्से थिक। मुदा, हमरा लगैत अछि जे आब हिनका लेल सम्मान बोझ परक आँटी थिक। लेखकक संग हिनक सम्पादनमे रुचि रहलनि अछि। सम्पादकक सन्धिविच्छेद अछि सम्+पदन्। यैह क्रिया सम्पादन कहबैत अछि। संस्कृत पदमे सम् उपसर्ग लागिकऽ सम्पादक शब्द बनैत अछि। कोनो लेखकक लिखल रचनाकेँ व्याकरणक दृष्टिसँ ठीक करब अर्थात् सभ पदकेँ सम् यानि ठीक करबाक क्रिया सम्पादन थिक। कोनो काजकेँ पूराकऽ पाठकक सोझाँ आनव सम्पादकक काज थिक। ओना ओ 'गामघर'केँ समाचार पत्र बनौने छथि आ 'आंजुर'केँ साहित्यिक। मुदा, 'गामघरमे सेहो साहित्यिक रचना प्रकाशित भऽ जाइत अछि। एकटा बात ई ध्यान रखबेक थिक जे साहित्य जँ पत्रकारितामे अबैत अछि तँ सोनमे सुगन्धि होइत अछि। तहिना जँ साहित्यमे पत्रकारिताक तत्व बेसिए घोंसिया जाइत अछि तँ गूड़ गोबर होयबाक सम्भावना बेस बढ़ि जाइत अछि। कारण साहित्यमे पत्रकारिता आबिकऽ बेसी सूचनात्मक आ तात्कालिक बना दैत अछि जखन कि साहित्य पत्रकारितामे आबिकऽ अनुभूत सत्यकेँ जगगियारकऽ मानवीयगुण ओ दृष्टिकोणक आधार पर कही तँ पाठकक अन्तर्मनकेँ अबस्से बेसिए स्तर धरि झकझोरि दैत अछि।

भ्रमर कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, लोकसाहित्य आ लोकसंस्कृति, साक्षात्कार, यात्रा-संस्मरण, निबन्ध, डायरी, शोध विषय आदि लिखलनि। हमरा जनैत ओ मूलतः कवि आ तकर बाद कथाकार छथि। ओ बहुविधवादी छथि तँ स्वाभाविक अछि जे विभिन्न विधमे हिनक रचना दम-खमक संग आयल अछि। हेनरी डेविड थोरो कहने छथि- 'सभसँ पैघ कलाकार वैह होइत अछि जे अपन जिनगीकेँ कलाक विषय बना लैत अछि'। भ्रमर यैह काज कयने छथि। ओ स्पष्टतः लिखने छथि- जीवन एकटा गति छैक/ गतिक संग मनुक्ख आगाँ बढ़ैत अछि। संकल्पित ठाम धरि जाएब ; नहि, आब नहि -अर्चना, वर्ष-8 कार्तिक 2087। हिनक पोथी ’नहि, आब नहि' पहिने कुमार अभिनन्दनक नामसँ 'अर्चना'क 24 पृष्ठमे प्रकाशित भेल। दीर्घ कविताक ई पोथी अछि। ओना हिनक पहिल पोथी कविता संग्रहक बन्न कोठरी औनाइत धुआँ अछि जे 2021 सालमे आयल अछि।

हिनक वैविध्य विषयक लेखनक उद्देश्य रहल अछि :-

1. विभिन्न विधकेँ सुपुष्ट करब।

2. सामाजिक व्यवस्थाकेँ बदलबाक प्रयास करब।

3. इमानदारीपूर्वक अपन बातकेँ राखब।

4. ओ जेँ अपन वर्गक विरल लोक छथि तेँ सर्वहारा वर्गक बातकेँ ध्वनित करब। अर्थात मूल्यबोधक संवाहक बनब।

5. तथाकथित वर्ग द्वारा जे चक्रव्यूहक घेरा बनाओल गेल अछि तकरा अपन लेखनीबलेँ तोड़ब। कही तँ कमजोर आ बेबस वर्गक बात उठायब।

6. एहन पैघ लकीर घीचब जकरा केओ लेखनबलेँ छोट नहि कऽ सकय।

7. दृश्य आ ध्वनिक सेहो एकटा अर्थ होइत अछि। एहि दिस ध्यान तेना भऽ कऽ नहि जाइत अछि। तँ एकर सार्थक महत्ता उपस्थापित करब।

8. पठन, लेखन, प्रकाशन आ वितरण दिस सचेष्ट भऽ नव पीढ़ीकेँ भविष्यक बाट देखायब।

9. लेखनक हेतु भाषा ओ शैलीमे नव-नव सम्भावनाकेँ खोजब।

10. नव पीढ़ीक निर्माण करब जे आत्म सजग भऽ जनसमाजमे नव चेतना-जगबय।

ओ प्रायः बेसिए विधमे हाथ अजमौलनि। एतेक दूर धरि जे समकालीन कविताक सशक्त हस्ताक्षर होइतो ओ गीत, गजल आदिक संग 'पिरामिड' जे नव विध थिक सेहो लिखलनि। कथा, उपन्यास, निबन्ध आदि लिखितो ओ नाटक लिखबाक दिस अग्रसरित भेलाह। प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नाटक महोत्सवक बात उठल आ एकटा वरिष्ठ नाटककारक नाटक अस्वीकृत भऽ गेल तँ मात्र सात दिनक अभ्यन्तर तत्कालीन उपकुलपति डा. ईश्वर बरालक आग्रह पर 'एकटा आर वसन्त' नाटक लिखायल आ मंचित भेल। एही नाटक पर फिल्म बनि नेपाल टेलिविजनसँ प्रसारित भेल।

ओ छोट-छोट नाटक प्रायः घंटा आध घंटा धरिक लिखैत छथि। 'नेताजी आबि रहल छथि', आ 'बौधू बाजि उठल', 'सूली पर इजोत' आदि बेस चर्चित-प्रशंसित भेल। लोकनाट्य जट-जटिन ;2064 साल, भैया अएलै अपन सोराज ;2067 साल आदि दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानक मञ्च पर बेस जमल अछि। जनकपुरधाम आ आनो ठाम जेना पटना आदिमे हिनक नाटक मंचित भेल अछि। रंगमंचसँ जुड़ब आ रंगभाषा अर्जित करब श्रमसाध्य आ समय साध्य दुनू अछि।

ओ कैकटा पोथीक सम्पादन दक्षतापूर्वक कयने छथि। जेना लावाक धान ;2050 साल, गामघरक 2046 क कार्तिक मासक आठम वार्षिक विशेषांक मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' लिखित 'त्रिशूली' सम्पूर्ण खण्डकाव्य जे 1876 पृष्ठमे आयल अछि। 'गाम घर'मे तँ कैकटा वार्षिक अङ्क संस्कृति विशेषाङ्क' वर्ष-4, अङ्क-1, कातिक 2042, अक्टू-नव. 1985, मू. 25 टाका, नेपालक मैथिली पत्रकारिता 2044 साल आदि अछि। 'महाकवि विद्यापति आ नेपाल',"लोकनायक सहलेस' दू खण्ड, लोकगाथा नायक दीनाभद्री ;2070 साल आदि बेस चर्चित प्रशंसित अछि।

नाटक सम्बन्धमे एतेक तँ कहले जायत जे कथा, कविता, निबन्धादि जकाँ एके सुरमे कखनो नाटक नहि लिखल जाय तँ नीक। कारण, एहन नाटक लिखब नाटकक क्षमताक सौन्दर्यकेँ क्षति पहुँचायब थिक। कही तँ- 1. थियेटर एक्टिविस्ट 2. नियमित नाटक देखब 3. रंगमञ्चक आवश्यकतानुकूल नाटकक शिल्प, भाषा, पात्रक चरित्र-चित्रण, संवाद अदायगी, विषय- वस्तु आ बुनावटि आदि पर ध्यान केन्द्रित करब थिक। 4. दृश्य संयोजनकेँ बुझब 5. पात्रक अन्तर्द्वन्द्व आ बाह्य चरित्र-चित्रणकेँ ध्यान राखब 6. शब्दक मितव्ययिता 7. मंचीय प्रदर्शन आदि विशेष महत्व रखैत अछि। नाटककार भ्रमर एहि सभ बातकेँ नीक जकाँ जनैत-बुझैत नाटक लिखैत छथि। संगहि गीतक परिकल्पना सेहो करैत छथि। ओना तँ ओ प्रारम्भसँ नाटकक मंचन आ सिनेमा भरपूर देखथि। ओ ऐतिहासिक नाटक 'रानी चन्द्रावती' 2045 सालमे लिखलनि। मुदा, नाटक दिस हिनक बढ़ैत रूझान हिनका प्रगति आ प्रयोगपरक नाटक लिखबाक हेतु बेस आकृष्ट कयलक। ओ गौरसँ टेलीविजन पर होइत टेलीफिल्म सभकेँ देखथि। अधुनातन दृष्टिएँ ओ नाटक लिखबा दिस प्रवृत्त भेलाह। कारण छलनि हिनक जिद्दपना ओ जिद्दपनाक फलस्वरूप कैकटा नाटक लिखने छथि। किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप

नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि। ततबे नहि, मञ्चक खगताकेँ देखैत नाट्यमंचन हेतु अपन रुचि लैत कैकटा संस्थासँ सम्बन्धित भेलाह। एतेक दूर धरि जे एहि लेल ओ संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारलनि। अपने तँ नाटक लिखिकऽ प्रकाशित करबे करथि जे आनोकेँ नाटक लिखबाक हेतु प्रेरित कऽ प्रकाशित कयलनि।

ओ प्रेमपरक अभिव्यक्ति विभिन्न विधमे बेस कयलनि। मुदा, ओ जखन काठमाण्डूमे पदासीन भेलाह तँ हिनक रचनामे एकटा नव स्तर आयल। ओ अभिव्यक्तिमे मात्र करुणा आ दया-भाव उपजयबला प्रसंगे धरि सीमित नहि रहि मानवीय संवेदनाकेँ बेस जगजियार कयलनि। यैह भेल मोड़ जे समयानुकूल अनुभूत सत्यकेँ प्रतिपादित करबामे भेल। ओ जे बात अपन कथाक माध्यमे कहैयो चाहलनि, मुदा पूर्णतः कहि नहि सकलाह से मानवीय सरोकारकेँ आरो घनीभूत करैत, मानवताक पक्षमे ठाढ़ होइत, देश-दुनियाक आ खासकऽ नेपालक परिस्थितिगत परिवेशक उद्घाटन क्रममे मानवीय मूल्यवत्ताकेँ समक्ष रखैत 'घरमुहाँ' उपन्यास लऽ अयलाह। एकटा बात ईहो, कहब स्वयंसिद्ध अछि जे रचना हिनका पियरगर लगलनि, लगबे कयलनि ताहि पर आनो विधमे कलम चलौलनि। 'सूली पर टांगल इजोत' निस्सन्देह अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपरक नीक कवितामे परिगणित होयत तँ ताहि पर नाटक अछि।

ओ मोनोड्रामा सेहो लिखलनि। टी स्टॉलवाली मुनियाँक व्यथा-कथा ओ दू गोट विधमे लिखलनि। ई सत्य अछि जे मनोभावकेँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु जँ सम्पूर्ण आकार कोनो एकटा विधमे प्राप्त नहि भऽ सकैत छैक तँ आनो-आन विधमे रचनाकारक रचना होयब स्वभाविके अछि। ताहिमे भ्रमर ? ओ

अपन रचनाकें चमकयबा हेतु आन विधमे तँ उपयोग करबे कयलनि जे प्रचार-प्रसारक दृष्टिएँ आन भाषाकेँ सेहो चुनलनि। कही तँ आनो भाषामे अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ पचौलनि। बहुभाषाविद् भ्रमरक योगदान नेपाली, भोजपुरी आदिमे अछि।

हिनक अन्वेषणपरक दृष्टि जाहि कोनो कारणेँ वन-प्रान्तर वा स्थल-विशेषकेँ देखि-सुनिकऽ लिखबाक हेतु बाध्य कयलकनि। ओ एहि लेल रने-बने बौआयल छथि। लुम्बिनीक गौतम बुद्धक स्थलसँ लऽ कऽ दीनाभद्री, सलहेस आदि लोकगाथापरक स्थल धरि घुरि आयल छथि। ओहिना मोन अछि जे राजा सलहेसक फुलवाड़ीमे फुलाइत ओ हारम फूल जे असमयमे देखने छलाह। ओना ई फूल स्थानीय भाषामे हारम कहल जाइत अछि, मुदा ई थिक आर्किड। ओहि फूलकें देखिते ओ पहिने अचम्भित भेलाह आ तकर बाद लाकैत मनुहार पर अतिरिक्त प्रसन्ताक लहरि दौड़ि आयल छलनि। सहजता आ जिज्ञासा दुनू भाव देखायल छल जेना नेनपनक कोनो कल्पित वस्तु भेटि गेल होनि।

ओ चिक्कन फोटोग्राफर छथि। हुनका फोटोग्राफी करबामे बेस रुचि छनि। नव-नव वस्तुकेँ देखब, नव-नव स्थानक परिभ्रमण करब, नव-नव विषय-वस्तुकेँ उठायब वा कही तँ नवताक पक्षधर ओ जिज्ञासु रहल छथि। ठीकसँ बिटिआयब तँ हिनक रचनाकेँ पढ़िते बुझि जायब जँ आलेखक संगहि फोटो सभ-प्रामाणिक, यथार्थपरक आ विश्वसनीय थिक।

ओ ढेर-ढाकी किताब जहिना लिखैत छथि से लगभग पचास धरि होयबा पर हेतनि। तहिना ओ ढेर-ढाकी पोथी कीनैत छथि, संग्रहित करैत छथि, पढ़ैत छथि। ओ स्वयं मानक साहित्यकार छथि। मुदा, जँ कतहु कोनो सन्देह होइत छनि तँ कोनो ने कोनो प्रकारें ताकि-हेरिकऽ वा सुयोग्य आ तद्विषयक विद्वानगणसँ सम्पर्क कऽ अपन कलमकेँ साधैत छथि। प्रयास रहैत छनि जे

शोधपरक प्रवृत्ति होअय। 'राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' विषयक पोथी छनि। प्राय: ओ एहि पर शोधग्रन्थ लिखबाक प्रयास कयने छथि। जेंकि हिनका डाक्टरी उपाधिक ततेक आवश्यकता नहि बुझयलनि, ओना ई मानद उपाधि एकटा संस्थासँ भेटलो छनि जाहि संस्थाप्रदत पर कतिपय जन अपन नामक पाछाँमे डॉ. लगबितो छथि। ओ अपन शोध प्रबन्ध नियमत: प्रस्तुत नहि कयलनि तेँ की ? कतिपय जन तँ हिनक नामक पाछाँ 'डाक्टर' लगबिते छथि।

एकटा ई बात कहि देब आवश्यक अछि जे किनको सुसकेमे गुणानुवाद करी वा भर्त्सना करी तँ ओहि व्यक्तिकेँ ने हित होइत अछि आ ने अहित। सवाल विश्वासनीयताक अछि। जेँ भ्रमर कर्मरत छथि तेँ ढेर-ढाकी हीत-मीत छनि तँ बेस शत्रुताकेँ सेहो पोसने छथि। मुदा, ओ अपन पथसँ अखनो टससँ मस नहि होइत छथि। ओ अपन कर्म करैत रहैत छथि। लेखन-कर्मकेँ साधना बुझि ओ अडिग छथि। ओ जनैत-बुझैत छथि जे लिखल आखर मूल्यवान होइते अछि। समय मूल्याङ्कन करबे करत।

ओ कखनो अपनाकेँ कमतर कऽ नहि आँकैत छथि। पहिरन-ओढ़नसँ लऽ कऽ रहन-सहन ओ लेखन-कर्म धरिमे कतहुसँ कोनो समझौता नहि करैत छथि। ओ बोन-झाड़सँ गुलाबकेँ चुनि लैत छथि आ घास-पात, काँट धरिकेँ बेकछाकऽ फराक रखैत छथि। जाहि रचनाकारमे हिनका प्रतिभा बुझाइत छनि, किछु करबाक ऊहि बुझाइत छनि तनिका भरपूर मदति करिते छथि।

ओ स्वयंमे एकटा आन्दोलन छथि। हिनक रचनाकाल जाहि राजशाही शासन-कालमे भेल, लिखबा पर संयमित रहय पड़ैत छल ताहि अवधिमे सेहो बेस लिखलनि। आइ नव प्रजातांत्रिक युगमे सेहो खूब लिखि रहल छथि। ढेर-ढाकी किताब लिखिये लेब कोनो खास विशेषता नहि रखैत अछि। जेंकि गुणात्मक दृष्टिएँ ओ किछु रचना देलनि अछि जाहि बलें ओ समादृत छथि, रहबे करताह।

हमरो जे हिनक व्यक्तित्व-कृतित्वकेँ मूल्याङ्कित करबाक सुअवसर भेटल अछि से आब हिनक सद्यः प्रकाशित पोथी 'मिथिलाक लोकजीवनः लोक संदर्भ' पोथीक विमोचनक सुअवसर पर भेटल अछि। एहि तिथि 08.05.2022 कऽ वेलकम, जनकपुरधम, नेपालमे ई आलेख पढ़ैत हम अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत छी। प्रभावशाली आ प्रासंगिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पूर्ण पचास वर्ष की, रचनाकाल 58 वर्षक परिदृश्यकेँ मूल्याङ्कित करब ततेक सहज नहि अछि। तेँ हिनक सम्पूर्ण सहित्यिक साधना ओ जीवन-कर्मसँ सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्षकेँ एकटा छोट-छीन आलेखमे गुम्फित कऽ लेब ततेक सोझ आ सरल नहि अछि। ई हम मानैत गछैत छी जे हिनक रचनाकर्म पर जाहि ढङ्गे ईमानदारी आ वास्तविकताक संग आलोचना-प्रत्यालोचना होयबाक थिक से नहि भऽ सकल अछि। जखन कि हिनक रचना-कर्म उपेक्षित रहल अछि सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। पैघसँ पैघ साहित्यकार हिनक रचना पर वा कही तँ पोथी पर कलम चलौने छथि। किछु जनक नजरिमे ओ खटकितो छथि तँ कतिपय भद्रजनक आँखिमे बसलो छथि। साहित्य आ साहित्येतर दुनू कोटिक ओ रचना कयने छथि। किछु फरमाइशी रचना सेहो छनि। दवाबमे लिखल गेल फरमाइशी रचना जँ कखनो कऽ अपन मूल्यबोध निर्धारित करितो अछि तँ बेसिये एहन रचना हलुकबितो अछि। मुदा, मुक्त भऽ आत्मसात रचना जँ कागत पर उतरैत अछि तँ निस्सन्देह फलदायी बनैत अछि। हड़बड़ी-धड़फड़ीमे लेखक बनबाक लौलें फेसबुकिया रचनाकारसभमे बेसिये साहित्यिक घातक बनैत अछि। जेंकि हिनक रचना मूल्याबोधक कसौटी पर सही उतरैत अछि तें आइयो हिनक रचनात्मक जड़ि आरो गहींर अछि आ जमीनसँ जुड़ल टिकल अछि। सहमति-असहमतिक सन्धिबिन्दु पर ठाढ़ भ्रमर अपन रचनाबलें कही तँ रचनात्मक परिदृश्यकेँ उभारबामे सक्षम छथि। कालान्तरमे हिनक कर्म-धर्म अबस्से भविष्यक पीढ़ीसँ आत्मीय सम्बन्ध बनौने राखत आ समयक संग संवाद स्थापित करैत रहत। कतिपय जनकेँ

भविष्यमे विश्वासो नहि होयत जे एहन सक्रिय रचनाकार एतेक काज कऽ क्रान्तिक लौ जगा देने छथि। ओ जँ जीवट छथि तें हिनक आत्मकथा देखबाक लिलसा हमरा जगले अछि। एहि विधक पोथी मैथिलीमे अत्यल्पे अछि आ हिनक एहि विधक छूटल पोथीसँ पाठक लाभान्वित होयत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'-प्रभाव आ प्रतिक्रिया

डा.राजेन्द्र विमल

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रभाव आ प्रतिक्रिया

कार्यकारण श्रृंखलामे सुगुम्फित ओहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसं जीवनेजगतमे अनुभव कएल यथार्थकेँ कल्पनासँ रङि कए रसात्मक विचारोत्तेजक रुपमे प्रस्तुत कएल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेसआन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलताकें घोर यथार्थपरक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शनसंग मर्मस्पर्शी इति पबैत अछि। आन्दोलन जखन एक गोट ऐतिहासिक उँचाई ल' रहल

होइत अछि तँ ओहिमे आन्दोलनकारीक छदम श्वेत भेष द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खोल ओढ़बामे सफल गुन्डाक सरदार कामेश्वर सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सचक निरन्तर प्रवेश होबए लगैत छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विराट जनक्रान्तिमे शहादत दैत युवकसभक प्रत्येक दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ ओम्हर ई लुटेरा तत्व पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि आतङ्क पसारि रहल अछि। आतङ्कभरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइतो धोतीकुर्ताधारी मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डरे दबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टरो साहेबक होइ छैन्हि जे अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जेकाँ जुलुसमे जा जोर जोरसँ नारा लगा आन्दोलनकेँ समर्थन दिऐक, मुदा सोचै छथि "जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुहारकेँ पचा सकत ?" अदंकसँ भरल मास्टर साहेबकेँ अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकेँ होइत छन्हि, मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरेँ अपन मधेश आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए दैत छथि जे कतहु आन्दोलन कमजोर ने पड़ि जाइक। १ जून २००७, २५ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ५ अगस्त २००७ क वार्ता असफल भेलाक बाद ३० अगस्त २००७क' २६ बूँदापर सहमति होएब मुदा कायान्वयनमे आनाकानीसँ आन्दोलनक फेर उग्र लपट ऊठब ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, जे उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर रमेश उपाध्यायक विपत्तिक तमिस्रा अओर सघन तखन अओर सघन भ' जाइत छैन्हि जखन हुनका पता चलैत छैन्हि जे हुनकर बेटी किरण दछिनबरिया टोलक कामेश्वरक बेटा राजीवसँ पेरम करैत अछि। ताबत ई ककरो ने बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जाएबला

व्यक्तित्व कामेश्वर गाममे व्याप्त हत्या, अपहरण, चन्दा आतंक आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महाविपत्तिक समुद्रमे उबडुब कैए रहल छथि कि बेटी किरणक अपहरण भए जाइ छैन्हि आ दश लाख टाका फिरौतीक लेल फोनसँ दिन राति धमकी आबए लगैत छैन्हि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए विस्थापित होएबाक लेल बाध्य छथि ओमहर कामेश्वरक एकलौता बेटा राजीव अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किरणक मुक्तिक लेल दबाब बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ईं जानि ग्लानि होइत छैक जे ई उएह किरण थिक जकरा पुतहु बना घर अनबाक मोन हुनक परिवार बना चुकल अछि। बसमे चढ़ि चुकल मास्टर रमेश उपाध्यायक ओकर परम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबएबला पीढ़ी दर पीढ़ीधरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तेँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक फट्ठा, मृत्तिका, सन्धी, स'न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्त मूर्ति तैयारक' सामाजिक सम्बन्ध बन्धक रागमयताक रंग ढ़ेउरल गेल अछि जे हृदयहारी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दाबेदार एहू कारणें अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।

रमेश उपाध्याय, जगमोहन, कामेश्वर, राजीव, किरण, बन्ठा, लुखिया आदि सभ वर्गीय प्रतिनिधि पात्र अछि। सम्बादमे स्वाभाविकता आ सजीवता छैक। भाषाशैलीक नाटकीयता आ चित्रात्मकताक कारण उपन्यास आदिसँ अन्तभरि सिनेमाक रीलजेकाँ चलैत अछि, जे पाठककेँ आरम्भसँ अन्तधरि बन्हने रहैत अछि। पहाड़ी मधेसीक एकता संबर्धनक उद्देश्यसँ प्रणित एहि

उपन्यासक यात्रा उबड़खाबड़, पहाड़ जंगल, खुरपेडियाक जटिल यात्रा नहि, सोझ सपाट मैदानक सरल सरस यात्रा थिक जे सरसराकए अपन गन्तव्यधरि पहुँचैत अछि। तेँ उपन्यासक संरचनामे पेँच पाँच आ ओझराहटि नहि अछि। मधेस मिथिलाक आम लोकक भाषामे प्रयुक्त 'लल्हका', 'लभका', 'बढ़का', 'खुर्सीं' आदि शब्दक सचेत उपयोग उपन्यासक भाषाकेँ सहज स्वाभाविकता आ अभिनवता प्रदान करैत अछि। आख्यानकार श्री 'भ्रमर'क ई सद्यःजात कृति नेपालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गोट उपलब्धि थिक, ताहिमे सन्देह नहि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार

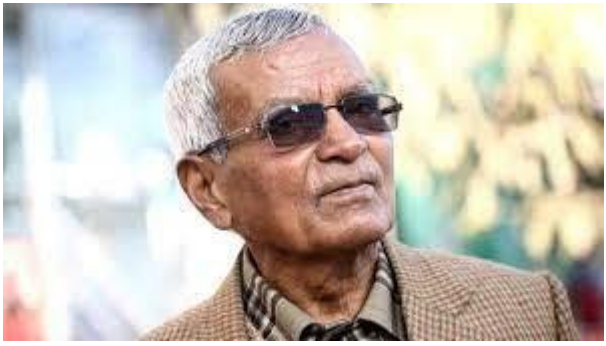

डा.रामदयाल राकेश

पुस्तक जे हम पढल-एन्टी भाइरसक कथात्मक संसार

राम भरोस कापडि 'भ्रमर' मैथिली साहित्य आ संस्कृतिके क्षेत्रमे परिचयके मुहताज नहि छथि। ओ एकसाथ कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, कवि, संस्कृतिविद आ यात्रा संस्मरण लिखनिहार छथि। एक शब्दमे कहल जाए त ओ बहुमुखी प्रतिभाक धनी साहित्यकारके रुपमें, सुपरिचित व्यक्तित्व छथि। समीक्ष्य कथा संग्रह, एन्टीभाइरसमे संग्रहित किछु कथासभ स्तरीय, पढनीय आ संग्रहनीय भऽ सकैत छैक तेकर विस्तृत व्याख्या, विश्लेषण, चर्चा परिचर्चा बहुतो अर्थमे समय सापेक्ष, सान्दर्भिक आ समसमायिक संसारके विभिन्न परिस्थिति एवं दृष्टिकोणसँ कएल जा सकैत छैक। मुदा संस्पेन्स यहाँ एकर बैशिष्टयके उद्धारित करवाक प्रयास कऽ रहल छी।

भ्रमरक कथा सभ अपन समय आ समाजके अर्थपूर्ण आख्यान कहल जा सकैत अछि। वास्तवमे हुनक दृष्टिबोध अत्यंत व्यापक अछि आओर कथात्मक संसारक आयाम सेहो विस्तृत एवं वैशिष्टपूर्ण छैक। एक ओर किछु कथा महानगरीय जीवनक ऐना कहल जा सकैत छैक त दोसर दिश ग्रामीण जीवनक या जनपदीयक जीवनक जीवंत दस्तावेज। मिथिलाञ्चलक जनजीवनक विविधरंग, विविध पक्ष, विभिन्न आयामक उदधाटन करबामे हुनका महारत हासिल भेल छन्हि। समीक्ष्य कथासंग्रहक सभ कथा रेखांकित कर योग्य छैक आ कथा शिल्पक दृष्टिकोणसँ बेजोड कहल जा सकैत अछि।

कथासंग्रहक किछु कथाक परिवेश आ पृष्ठभूमि मिथिलांचलक माइट पाइनसँ सम्बन्धित छैक आ मिथिलांचलक सामाजिक संरचनामे जे अभूतपूर्व परिवर्तन दिनानुदिन राखल जाइत छैक तकर सटीक आ सांदर्भिक संकेत एवं सूचना पाठक सभके दऽ सकैत छैक। कथाकार मनोयोगपूर्वक एवं महत्वसँ कथाक शिल्य (ड्राफ्ट) तैयार करबामे निपुण देखि पड़ैत छथि।

भायरससं युक्त संसारमे भ्रमर एण्टी भाइरसयुक्त कथा लिखवाक साहस जुरा सकैत छथि मगर परिवेश एवं पृष्ठभूमि त जनकपुरसँ काठमाण्डूधरिक जीवनके चित्रणमे लगनशील भऽ जनकपुरमे रमाएके लालसो व्यक्र कऽ रहल छथि। हुनको पत्नीके काठमाण्डूक वातावरणमे कोनोरस नै भेटइत छैक तखन ओ काठमाण्डू जयबाकप्रति हुनका कोनो चाव नहि देखल जाइत छैक। दाम्पत्य जीवनमे कोनो भाइरसके प्रवेश नहि होय एकर खूब ध्यान रखैत छथि ताहिलेल अपने परिश्रम पर हुनक ध्यान बेशी रहैत छैक। दु घंटाके बदले चार घंटा खाना पकाबेमे लागि जाओ कोनो बात नहि मगर घरक भायरसके भयसे ओ परेशान भऽ जाइत छथि। यी भाइरस कि छैक त कोनो दोसर जनानी के खाना पकएवाकलेल नहि राखि सकैत छैक। यी भाइरस वास्तविक भाइरससँ भयानक लगैत छन्हि।

आइसीयू कथामे दरभंगाके अस्पतालक अनुभव आ बारेमेके बेचैनीक बेबाक चित्रण भेटैत छैक। अपन बेमार भाईके पीडासँ पीडित कथाकारके अनुभूति कत्तेक दरद पैदा करैत छैक देखू ! जीवन आ मृत्युक बीच संघर्ष करैत हमर भैया, हमर अभिभावक...। हमरा लेल आब असहनीय भेल जा रहल अछि।

'अमृत पान' कथामे कथाकार मधेश आन्दोलनके दौरान पावनि तिहारक सनेस समयपर नहि पठा सकल घर परिवार आ धार्मिक चित्रमे सफल देखना जाइत छथि। दोसर दिश तिलवा चूड़ा कतेक सुअदगर लगैत छैक जे अमृत पानसँ कम नहि छैक। दोकान पर चाहकप देवबाला मरद एकरा सवारमे चाहके चुस्की सदाके लेल विसर जाइत छैक। कथाकारके सांस्कृतिक संचेतना कतेक धनीभूत छैक तकरे स्पष्ट चित्रण करबामे सफल छथि।

क्था द्वितीय क्षेणीक एकटा डिब्बामे यात्रा करवाक आनन्दानुभूति आ यौनिक आकर्षणके आनन्दके वर्णनमे कथाक कथावस्तु सफल छैक।

'क्वार्टर नं. एफ तीन' कथामे धऽ क्वार्टर कोशी प्रोजेक्टमे काजकएनिहार सभक हेतु बनाओल क्वार्टर छैक। यही क्वार्टरके पुरान या नव अनुभव वर्णन त छैहे आत्मीय सम्मानके संभावनाके तलाशमे मानवीय संवेदनाके बटोरबामे कथाकार सफल देखना जाइत छथि। पराकंपन शीर्षक कथा १९९२ सालके महाभुकम्पके पराकंपनके पृष्ठभूमिमे लिखल गेल छैक। नव घरके निर्माणके परिक्षण आ यही घरमे वासके खुशी कतेको बेरक पराकम्पनसँ परिवर्तित नहि भऽ सकैत छैक। यी कथामे सेहो कथाकार मानवीय संवेदनाके स्रोत तयारीमे बहुत राश सभक खरच कएने छथि आ भौतिक सुख प्रतिमे प्रसन्नताके वर्णन। परिवर्तन शीर्षक कथामे दाम्पत्य जीवनके द्वन्द चित्रण कएल गेल छैक आ यी द्वन्दके वर्णनमे कथाकार द्विविधा ग्रस्त मन स्थितिके वर्णनमे सेहो सफल। यी कथाके कथावस्तुके कथानकमे मैथिली आ हिन्दीके पुट रडक कथाउपर स्वाभाविकताके निर्वाह कएने छथि।

मुनिया टी स्टल मिथिलाञ्चलके जीवनमे प्रायः धटित होमवाला कथानकके कथाउपर अपना प्रतिभासँ प्रकट करबाक लेल प्रयासशील देखना जाइत छथि। गामघरमे कोनो चाहक दोकानमे एहन घटना प्रायः घटित होइत रहैत छैके। दोकानपर यदि कोनो सुन्नरी छैक त ओकर दोकान खुब चलैत छैक ओहि दोकानपर खूब भीड रहैत छैक आ किसम किसिमके गहँकी अनाई स्वभाविक छैक। कतेक गँहकी सभ चाहक लाथे आ लाभसँ बेसी रमौलवालीके रुपरंग आ हावभाव पर भमरा जकाँ रस चुसक लेल ललाहित रहैत छैक। एकदिन ओ सुन्नरि अपन पति बला बच्चा सभके छोडि क एकटा छौडा रामधनक साथे भागि गेलै। यी गामघरके लेल सभसँ बेसी चर्चित धटना भऽ गेलै जे सर्व स्वभाविक छैक।

समीक्ष्य संग्रहके मास्टर पिस कथा छैक अन्नधन लक्ष्मी। यी कथा मधेशके धरातलीय यर्थाथके चित्रणमे सफल छैक। एकरा युवक आ युवतीके मन स्थिति आ मनोविज्ञानके चित्रणमे बेजोड छैक। एकरा परित्यका युवती जे प्यारके फंदामे पडि गर्भवती भऽ जाइत छैक आ ओकरा ओकरे अफिसके आदमी धोखा दऽ दैत छैक। एहिमे ओकर बेदनाके बड़ सटिक ढंगसं व्यक्त कएलगेल छैक। यी युवती एकटा पुरुषसे पताडित आ दोसर महिलासँ विक्षिप्त।ँ ऐह कथाके मुख्य उदेश्य छैक। रेमीटान्स आर्थिक उन्नति त व्यक्तिके जीवनमे आनि दैत छैक मगर सामाजिक संरचनाके भत्ताभंूगं कऽ दैत छैक।

मगर यी कथाके सुखान्त बनाबक कला कथाकारक विशेषता मानल जाए सकैत अछि। सम्पूर्ण कथा बेदनासँ भरल छैक मगर एकर अन्त सुखान्त पक्षके सराहनीय दंग कथाकारके कलाकारिताके विशेषता छैक।

गंगा प्रसादक स्वाययतता शीर्षकमे सुगाक मार्फत गणतंत्र व्यवस्थापर व्यंग्यक वाण प्रहार प्रशंसनीय कहल जा सकैत छैक।

'प्रतीक्षामे' कथा ग्रामीण जिन्दगी आ शहरी जीवनके बीचके अन्तद्वन्दक चित्रण करबामे सफल मानल जा सकैत छैक। दू संस्कृति आ भाषाके कारणेंे जिन्दगी द्वन्दमे फस जाइत छैक आ सच्चा सुखभोगसे बँचित। एकटा कहबीमे सम्पूर्ण कथाक सारांश स्पष्ट भऽ जाइत छैक लेना न देना विनु छुछुरीके बेना।

'दहेज' शिर्षक कथामे पुराने विषयवस्तु के वर्णनके माध्यमसँ कथाकार नव समस्या या ज्वलंत समस्या जे मिथिलाञ्चलके छैक तेकर बेबाक वर्णन आधुनिक संदर्भमे करब हुनक उदेश्य देखना जाइत छैक। खाडीक देशमे काज करबाक शान शौकत के प्रदर्शन आ दहेजके वेशी माँगसँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चल आकान्त अछि। कन्या पक्ष कलपैत कल्पैत कहैत छैक जे हमरा हैसियतसँ बेशी माँग भेल मगर एकर कोनो सुनुवाई बर पक्षके लोकसभसँ नहि भेलासँ सम्पूर्ण परिवारमे निराशा होनाई कोनो आश्चर्यक गप्प नहि छैक। कथाकारके कटु सत्यमे कतेक सत्यता छैक देखू

"आब त बिआहमे मोटरसाइकल नहि होइत तँ विआहे कैंसिल। एम्हर घरवालीसँ बेसी महत्व भऽ गेल छैक मोटरसाइकलके। विआहसँ पूर्व घरवालीके अनुहार नहि, मोटरसाइकल के अनुहार देखऽ चाही। एहिसँ पीडा, अपमान दुर्घटना सेहो बेसीय धटित भऽ रहल अछि। मुदा बेटाबाला सभकलेल धनसन।"

'उडान' कथा नया कथात्मक शैलीमे लिखल गेल छैक। यी कथा नाटकीय शैलीमे लिखि क कथाकार भ्रमर नव प्रयोग करबाक कोशिशमे छथि। दश दृश्यमे लिखल कथाक निचोड़मे की छैक त अपने धरती पर प्रेम आ संस्कार पएबाक। 'उडान' शीर्षक कथाके मुख्य केन्द्र सेहो रेमिटेन्से छै जेकरा चल्ते सामाजिक आ पारिवारिक सम्बन्धके नकारात्मक असर देखना जाइत छैक। तसर्थ कथाकारके कथन सार्थक छैक ः

हमर उडानमे अहाँसभके साथ चाही।

आ आब होरी आबि गेलै शीर्षकमे सांस्कृतिक जीवनके जीवैत करबाक लेल कथाकार सक्रिय एवं सचेष्ट देखना जाइत छथि। फगुआ मिथिलांचलक एकटा बड महत्वपूर्ण एवं मौलिक पर्व मानल जाइत छैक आ एकर रंगीनी नशा युवा युवतिके समान रुपसँ देखल जाइत छैक। कथाकार भ्रमरके शब्दमे ः "मने फगुआक रंग दुनू दिश चढल रहैक। होरी है..।"

चौतावरके चिताकर्षक लोकगीतके समावेश सँ यही कथाक कथात्मक सौन्दर्यमे चारि चाँद लगवाएक लेल कथाकार प्रयत्नशील बुझाइत छथि जेना ः

"घुरती बेरमे डफलिया सभ चेतावर गाबए लगैक चैत मास गेनमा फुलाएबल हो रामा...।

कि सइया नहि आएल।"

'सपना' शीर्षक कथामे देशमे विभेदक कारणे मधेश आन्दोलनक आरंभ भेल रहैक तेकरे कथावस्तु बना क कथाकार एही कथाके निर्माण करब उचित ठानि क बाप मायके सपनाके सचित्र चित्रण करमे सफल देखना जाइत छैक। जीवनभर अयोधी अपन नोकरीकालमे विभेदके शिकार भेल आ अन्तमे अपना बले अशोकके बी.ए.पास कएलाके बादो सिपाही पद पर भर्ना नहि करवा सकल तेकर वेदना व्यक्त करमे सफल भेल छैक। सीमापरक भूत शीर्षक कथामे कथाकार चिंतित होयब स्वाभिक छैक। बेटी रोटी के सम्बन्ध जे शताब्दीसे कायम छैक नेपाल आ भारतमे ओकरा आइके राजनीतिमे समाप्त नहि कऽ देइक तेकर चिंताके खूब निमन दंगसँ व्यक्त कएने छथि।

एकटा स्तंभके कारणे दुई देशक विभाजनके पीडा सीमावर्ती इलाकाके लोकसभ भोगि रहल छैक। कथाकारक कथन मार्मिक छैक ः

"पता नहि, आब सीमा पर ठाढ ई उजरका स्तंभ ओकरा भूत जकाँ कहिया धरि डेरबैत रहतै।"

इजोरिया रातुक सपना बहुत राशि कथासँग्रह सभमे प्रकाशित भेल कथा अछि। ताही वास्ते समीक्ष्य कथासँग्रहमे संकलित करवाक कोनो औचित्य नै देख रहल छी। अन्तमे कथाकारक शैली बड परिमार्जित आ प्रशंसनीय छैक आ एहिसं कथामे एकर प्रभावसँ मिठास आओर बढि गेल छैक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर'

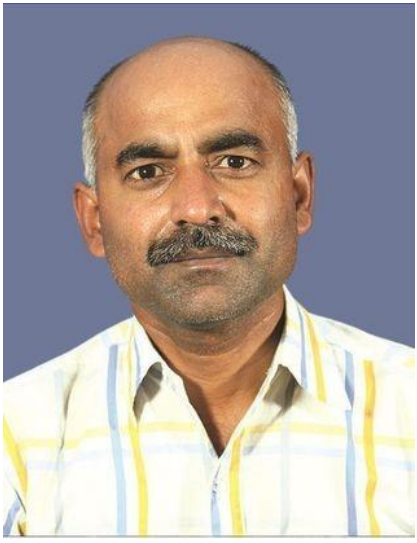

दिनेश यादव

लोक मैथिली केर विभूति 'भ्रमर'

नेपालक धनुषा जिल्ला बघचौडा गाममे ७२ वर्ष पहिने राम भरोस कापडि 'भ्रमर' के जन्म भेल छलनि। एकैहटा व्यक्तिके अनेक रुप कवि, कथाकार, नाटक लेखक, पत्रकार,सम्पादक आ प्राज्ञ। एकटा बहुआयम रहल लोक शायद 'भ्रमर' बाहेक आर कियौ नए भँ सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे विभिन्न पुस्तक प्रकाशित कँ चुकल ओ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानके प्राज्ञ परिषद् सदस्य आ साझा प्रकाशनके अध्यक्षके समेतके भूमिका निर्वाह करबाक अनुभव सेहो प्राप्त कएने छथि।

प्रारम्भिक शिक्षा गामे सँ पुरा केलाक बाद ओ उच्च शिक्षाक लेल जनकपुर पहूँचलाह। ओतैह संचालित त्रिभूवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पस रामस्वरुप रामसागर बहुमुखि क्याम्पससँ ओ स्नातकोत्तर उत्तीर्ण कएलनि। बहुमुखी प्रतिभाके धनी कापडि कविता, कथा, प्रबन्ध, निवन्ध, नाटक, गीत, यात्रासंस्मरण आदि विविध क्षेत्रमे दशकौं सँ कलम चलबैत आइब रहल छथि। ओ मैथिली भाषा साहित्यमे सब सँ बेसी सक्रिय रहला अछि। तथापि हुनकर नेपाली, हिन्दीसहितके भाषा साहित्यमे सेहो ओतबे अतूलनीय योगदान छइन। मैथिली साहित्यमें बौद्धिकताके पैघ आ अविस्मरणीय पदचिन्ह छोड्वामें ओ कुनू कसैर शेष नहि रखला अछि। ओ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठानमें होए किंवा साझा प्रकाशनमे, जतह रहला सबठाम लोकमैथिली भाषा, साहित्य आ कला क्षेत्रमे अद्वितीय काज करैत रहला अछि। नेपालीय मैथिली भाषा क्षेत्रमे हुनक उचाई एकटा गरिमा कायम कँ चुलक अछि।

अपन मातृभाषामें सदखनि साहित्य साधना करैत रहला 'भ्रमर' मैथिली साहित्यकेर 'शेक्सपियर' छथि। ओ पत्रकार, साहित्यकार, लेखक आ सर्जक मात्र नए युगस्रष्टा सेहो छथि। आबाजविहिनके आबाज बनि ओ सदखनि अपन समाजके लेल ठाड रहला अछि। तईं हुनका युगस्रष्टा किंवा युगद्रष्टा कहबामे कुनू विमति किनको नहि होमाक चाहि। ओ ब्राह्मणेत्तर समाजक प्रतिनिधित्व करैत जहि रुपसँ अपन उपस्थिति मैथिली साहित्य क्षेत्रमे जनौने छथि ओ बहुतके लेल असंभव मात्र नै दूलर्भ सेहो भँ सकैत अछि। ओ मैथिली साहित्यकेर माध्यम सँ एकटा एहन युगक निर्माण केलथि जकर बर्णन करबा असंभव बुझाइछ।

क्रान्तिके गीत होए किंवा मैथिली साहित्यके बहुआयामिक संवद्र्धनक बात होए , सबमें ओ अपन कमल निरन्तर चलबैत अविछिन्न ताराके भूमिकामे

रहला अछि। यथार्थवादी भावभूमि आ प्रगतिवादी चिन्तनक प्रतिष्ठापनमे हुनक विशिष्ट योगदानक चर्चा परिचर्चा केनाई नेपालक भूमिमे किनको बसके बात नहि भँ सकैत अछि। हमरा जनितब, मैथिली साहित्यके युगानुरुप आगा बढेबाक हुनक साधनाके सम्मान करबामे किनको कंजुसाई नहि होमाक चाहि। नेपाल पंचायतकालसँ गणतन्त्रमे आबि गेल अछि, अहि राजनीतिक परिवर्तन आ रुपान्तरणमे कापडिके योगदान प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रुपमे ओतबे रहल अछि। हुनक जीवन्त मैथिली साहित्यिक रचनाके माध्यमसं अहिमे ऐतिहासिक भूमिका निर्वाह करबाक प्रमाणसब सेहो खुबे भेटयैक छैक।

नेपालक सबसँ बेसी बजैवाला लोकमैथिली भाषाके माध्यमसं मातृभाषीके जोडबाक काज ओ करैत रहला अछि। लोकमैथिली भाषामे अपन उज्जर प्रस्तुति आ शैलीके माध्यमसं सदखनि एकताक भावके संरक्षण र संवद्र्धन करैत रहला अछि। ई काज हुनका चिरस्मरणीय अछि आ नवतुरिया पीढीजनके लेल गौवान्वित होमाक विषय सेहो थिकैह। ओ नेपालीय लोकमैथिएटामें मात्र नय भारतीय मैथिलीमें सेहो ओतबे अपन प्रस्तुतिके जर्बदस्त बनौने छथि। तई नेपाल आ भारत दुनू कात हुनक योगदानक महिमामंडन खुबे होइत छइन। लोकमैथिलीमे बर्षौसँ जारी ब्राह्मणवादके बाबजूद एकटा ब्राह्मणेत्तर समूदायसँ जई तरहे ओ उपस्थिति जनौलथि अछि ओ अतूलीयन त अछिए, बेजोड सेहो ओतबे अछि। तईं कैह सकैत छि जे ओ सभहकले प्रेरणाके स्रोत थिकाह। कियैक त कापडि मैथिली साहित्यमे स्वच्छन्दतावादी काव्यधाराके एकगोट विशिष्ट प्रवर्तक, प्रजातन्त्र, लोकतन्त्र, राष्ट्रियता, स्वतन्त्रताके प्रतिमूर्ति सेहो छथि। तई लोकमैथिलीके इजोत करैमे ओ स्वयं कहियो प्रकाशक संपादकके रुपमे उपस्थित भँ जाइत छथि त कहियो गैर मैथिली भाषाके प्रत्रिकामे सेहो लोकमैथिलीके उत्थान, विकास आ प्रर्बधन हेतू अपन कमल चलबैथि रहैत

छथि। ओ लेखक, विश्लेषक, संपादक, प्रधान संवादक, आलोचक मात्र नहि थिकाह , लोकमैथिलीके एकगोट पैघ, सम्मानित आ विभूति सेहो थिकाह।

भ्रमर लोकमैथिली साहित्यमे मात्र नय नेपाली साहित्यके श्रीवृद्धिमे सेहो ओतबे सक्रिय रहला अछि। नेपालीमें अपन गजलके माध्यमसँ गजल गायिकीके परिभाषित करैत भाव, अभिव्यक्ति, शब्द, मौन आ लोकक जीवन अविछिन्न चलि रहल जीत हार आ मनुख्यकके चेहरामें लागल अनेक मुखडाके गजब शैलीमे परोसैत छथि

नेपाली गजल ः तरंग जिन्दगीको

गजल गायिकी हो तरंग जिन्दगीको

भाव वनिता हो तरंग जिन्दगीको

अभिव्यक्तिमा आउँछ धुन तालको सरगम

शब्द व्याख्या हो, तरंग जिन्दगीको

मौन बसेको हो वा उमंग टाढासम्म

त्यसैको उच्चछास हो, तरंग जिन्दगीको

जित हारको खेल चलिरहने हो सधैं

पचाउने सामथ्र्य हो तरंग जिन्दगिको

मानिसको अनुहारमा टाँसिएका मकुन्डो अहा

'भ्रमर' को व्यापार हो तरंग जिन्दगीको।

(स्रोतः नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानके कविता प्रधान चौमासिक पत्रिका 'कविता', पुर्णांकः ९६, आश्विन पुस, २०७०)

अपन मातृभाषामे सेहो गजल विद्यामे हुनक ओतबे ओजपूर्ण प्रस्तुति रहलैए। निचा हुनक एकगोट प्रतिनिधि गजल देलगेल अछि। अहि गजलमें ओ जीवन संघर्ष आ चुनौतिसं लडबाक लेल आश भरोसा देमामें कुनू कसैर बाँकी नहि रखने छथि

मैथिली गजलः एखन बाँकी अछि

करिछौंह मेघके फाटब, एखन बाँकी अछि

चम्कैत बिजलैंकाके सैंतब, एखन बाँकी अछि

उठैत अछि बुलबुल्ला फूटि जाइछ व्यथा बनि

पानिके अडाबे से सागर, एखन बाँकी अछि

बहैत पानिआओ किनार कतौ खोजत ने

अगम अथाह सन्धान, एखन बाँकी अछि

फाटत जे छाती सराबोर हएत दुनियाँ 'भ्रमर'

ई झिसी आ बरखा प्रलय, एखन बाँकी अछि।

(स्रोत: नेपाली गजल गुगल ग्रुप, २००९)

साहित्यकार भ्रमरके किछु काव्यसंग्रह

क्र.सं. पोथीके नाम विधा प्रकाशित वर्ष (विक्रम संवत्)

१. बन्न कोठरी औनाइत धुँवा कविता संग्रह २०२९

२. नहि, आब नहि दीर्घ कविता २०३६

३. मोमक पधलैत अधर गीत-गजल २०४७

४. अप्पन अनचिन्हार कविता संग्रह २०४७

५. भयो अब भयो अनुवाद (नेपाली) २०७०

६. बस अब नही अनुवाद (हिन्दी) २०७०

७. अन्हरियाक चान गजल संग्रह २०७०

८. युद्धभूमिक एसगर योद्धा कविता संग्रह २०७५

प्रतिनिधि कथा 'एंटीवायरस'

भाषा, साहित्य, संस्कृति राष्ट्रके निधि होइछ। एकर उत्थानस' राष्ट्र उत्थानक झलकके अनुभूति होइछ। समालोचनाक अर्थ सृर्जनाकृति (काव्य, गद्यसहित) के उपर सिद्धान्तपरक सृजनशील पठन होइछ। कियो स्वीकार करौंक वा नइ करौक, मुदा इ एकटा सत्य थिक शाक्तिशाली समालोचकीय पद्धति स्थापित नइ होमेधरि सृजनात्मक लेखन आ पठन अपेक्षित उचाइ प्राप्त नइ कए सकैछ।

एक दिसि हनुमान चालिसाक बिसैरजाइवाला स्तुतिगान आ दोसर दिसि अन्यायोचित क्षुद्र वाणीस' भरल निन्दापरक दुनू धारसं नेपाली साहित्यिमे आन मातृभाषा (मैथिलीसहित) समालोचना मुक्तिक चाहना रखने अइछ। मैथिली साहित्यिक समालोचनामें त भावुकतामय स्तुति आ आवेशमय निन्दाक प्रवृति बेसी भेटैक छै। मैथिलीमें सभस' पैघ दुर्भाग्य एहा छै। एक त कम साहित्यिक पोथीक प्रकाशन, ओहूमें सहि समालोचनाक अभावमे मैथिली पद्य आ गद्यसहितके आख्यान हक्कन कानि रहल अछि। मैथिली साहित्य मुलतः जीवनीपरक, प्रभावपरक, विवरणात्मक आ सूत्रपरक प्राध्यापकीय शैलीके हतोत्साहित करैत आगा बढबाक आवश्यकता संगैह सिद्धान्तपरक समालोचनाक अपरिहार्यता आब भए चुकल अछि।

मिसले फुकोक संकथनक सिद्धान्त अनुसार राज्यव्यवस्था आ समाजव्यवस्था विभिन्न पात्रसभके वशिभूत बनाके कोनाक किछू गोटा अपन साम्राज्य मैथिली साहित्यमे कायम कएने छइ, तक्कर तित अनुभव ई स्तम्भकार सेहो कएने अइछ। एकरा तोडबाक अनिवार्य अछि।

वरिष्ठ साहित्यकार रामभरोस कापडिके कथा संग्रह 'एंटीवायरस' के एतह प्रतिनिधि कथासंग्रहके रुपमें प्रस्तुत कयल गेल अछि। संग्रहमें सीमान्तकृत, किनाराकृत, अपहेलित, शोषित, अभिसप्त, सबाल्टर्न, मुहदूब रा आ सुधा लोकैनके विषयवस्तु भेटैछ। ई भ्रमरके तिसरका कथासंग अछि।

नेपालीय मैथिली भाषी क्षेत्रमे सभसं बेसी पोथी निकालैवाला व्यक्तित्व ओहे छथि। एक संवादमे ओ कहने छलाह, 'सडचालिसटासं बेसी पोथी प्रकाशित अछि।' ओहिमेस' 'एंटीवायरस' एकटा अछि। मैथिलीमे राज्यद्वारा पेलैवाला प्रवृति अखनो अइछे। भ्रमरक साहित्यमे ओइ प्रवृतिके फराक शैलीले विरोध भाव देखल जाइछ ।

ताहिना मैथिलीक किछु लेखकक सामन्ती संस्कारवाला प्रतिनिधि पात्र आ शैली हुनकर लेखनीमे कम भेटैछ। एकर पुष्टि डा. मेघन प्रसादक 'मैथिली कथा कोष' सेहो करैत अछि। मैथिली भाषाक कथासभमे सामन्तवाद आ ग्रामीण मुखियावादक अवशेषसभ अखनो देखमामे अबैते अछि। आब अइ तरहे मानसिकताक विरोध सेहो होमे लागल अछि। 'एंटीवायरस' अइ आलोकमे नया स्वादसहित एकटा प्रतिनिधिमूलक उदाहरण भए सकैत अछि। अइ पोथीक कथासभमे एकटा कथाकारक मार्मिकता आ हार्दिकता स्पष्ट रुपसं अनुभव होइछ। अध्ययनक क्रममे मिथिलाक बहुत कथाकारक प्रस्तुति हेतुवाद (रेसनलिज्म) आ व्यक्तिगत बहुलठपन (इन्डिभिजूए इंस्यानिटी) देखमामे अबैत अछि। ओकरा तोडबामे 'एंटीवायरस' सफल भेल बुझाइछ। अई कथा संग्रहकक नाममे लिखल गेल 'एंटीवायरस' मे घरनीसं पीडित पतिक पीडा आ बेदनाके मार्मिक ढंगसं प्रस्तुत कएल गेलछ।

कथामे काम करैवाला लोक नइ राखब, राखबो करब त शंका उपशंका करब, अपनेसं कएलापर समय बहुत खर्च कएनिहार महिला पात्रक चरित्र गजब शैलीमे उजागर कएल गेलछ। भान्साघरक आबाज आ कम्प्युटरपर बैसैयवाला पतिके घरनीक रोषसं थकान मेटेबाक प्रयासमे अपन पीडाक डिलिट करैत अपने धूनमे मग्न रहैक बात बेजोड रुपसं आएलछ। कथा पढैवालाके थकान सेहो दूर होमाक सुखानूभूति भए सकैछ।

अई पोथीक दोसर कथाक विषय 'आइ.सि.यू.' के बनाओल गेलछ। अइमे एकगोटा बिमार लोकसं भेट करैक लेल पहुंचयवाला आफन्तजन आ नर्सबीचके संवादमे रोचकता अछि। लेखक बिमार भैयाप्रतिक अनुजक छटपटाहट कून तरहे होइत छैक, तकरा अदूभूत बड्ड मार्मिक शैलीमे चित्रण कएने छथि, कथामे। बुझाइछ, घटना अपने आइख आगा भए रहलैए। पाठकके स्तब्ध आ आतूर बनेबाक सामग्री अइमे पसरल पडल अछि। मुदा कथामे एकैहबेर आबैयवाला पात्रसभ 'लखना', 'नारायणजी'....कथाक अ रसगर बना दैत छैक। संक्षेपमे अइ तरहे पात्रक परिचय खडकैत अछि। कथाकार कियैक ओकरासभहक परिचय खोजबाक जिम्मा पाठकके देने छैथ ? ई पाठकक लेल अन्याय भेल अछि। जे जेना, अइ कथामे बिमार पात्रके विगत परिछाबैत कथाकार अपन शालिनता जइ तरहे चित्रण कएने छैथ, ओ खूद भावुक त बनले छथि, पाठकके सेहो भावुक बना दैत छथि। कथाकार अपन भैयाक विगत सम्झैत भावविह्व होइछ आ आईसियूसं निकैलके हरियर गाउन कांटीमे टाङ्गलाक बाद हलका महशुस कएल गेल भाव प्रकट कएने छथि। अन्त्यमे पहुंचैत पहुंचैत 'मोन कतेक हल्लुक होइत अछि, चेम्बरसं बहरा जाइत छी' वाक्य कथाकारक कृर्तिम भाव प्रकट भेल महशुस होइछ। ओतेह आइसियुसं निकललाक बाद भावुक वा मोन भारी होमाक भाव एमाक चाहि। 'अमृत पान' कथा मौलिक अछि , प्रस्तुति अद्वितीय। अई कथामे बेटीके 'पटनावाली' कहल गेल अछि। अइ प्रस्तुतिमे रोचकतासंगै पाठकके जिज्ञासु बनेबाक प्रयास भेल अछि। अईसं पुरे कथा पढबाक चाहना होइछ। अई तरहे प्रस्तुति कथाक 'गुरुत्वाकर्षण' बढा दैत छै। मुदा कथा समुचा पढलाक बादो 'पटनावाली' बेटीक नाम नई भेटैक छै, नाम देलासं कथाका प्रसांगिकता अउर बैढ जाइछ। अईमे मधेस आन्दोलनक बात सेहो पडल अइछ। बन्दीक कारण मैथिली संस्कृति आ परम्परागत पर्व तिलासंक्रान्तीमे पडल प्रभावपर निक शैलीमे पढबामे मिलैत छै। बेटीके

संक्रान्तिमे चुरा, तिल, मुरहीक लाय नइ पहुंचा सकल विषय जन जनके हियाके हिला दैवाला छैक।

कथामे मधेस आन्दोलनक चर्च होइते कथाकार बेसी भावुक बनल अनुभव होइछ। अइसं विषयान्तर भेल महशुस सेहो होइछ। चायवाला आ ग्राहकके संवादसंगैह मैथिली संस्कृतिसं जुडल विषय कथामे प्राण भइर दैछ। शुरुमे तिला संक्रान्तिमे तिल गुड खेबाक संस्कृतिके कोनाक बढैत सहरीकरणसं अतिक्रमित भए रहल अइछ, तक्कर शानदार प्रस्तुति अप्पन गुरुत्ववलके कायम रखमामे सफल अइछ, कथा। कथासंग्रहमे मौलिकताक स्वाद बेर बेर चखबाक अवसर भेटैछ। पात्रसभहक चयन सेहो निक जकां कएल गेल अछि। पोथीमे बीसटा कथा समेटल गेल अछि। सभटा समयसान्दर्भिकतासं भरल पुरल अछि। पोथीमे समटल गेल कथासभ शीर्षक अनूकूल त अइछे, कथाक शब्द सीमाके सेहो निक जका पालना कएल गेल अछि।

'द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा', 'क्वार्टन नं. एफ तीन', 'पराकम्पन', 'परिवर्तन' ,'मुनियां टी स्टल', 'अन्न धन लक्ष्मी', 'गंगाप्रसादक स्वायत्तता', 'प्रतीक्षामे', 'दहेज', 'उडान', 'आ आब होरी आबि गेलै', इजोरिया रातुक सपना', अन्ततः, 'भेलेन्टाइन डे आ गुलाब', 'मर्निग वाक', 'सीमापरक भूत' आ 'सपना' कालजयी कथावस्तुसभ अइछ (भ्रमर ः२०१९)। कहियो पुरान नई होमेवाला विषयवस्तुक उठान भ्रमर कथासंग्रहमे कएने छथि।

अइमे सं वैदेशिक रोजगारीक विकृतिपर लिखल 'अन्न धन लक्ष्मी' समस्या आ समाधान दूनूके साथ परोसल गेल अइछ। कतेको साहित्यकारक कथासभ खासकके नवसिखुवासभ पाठकके सन्देश दइसं पहिने अपन लेखनीके गला दबा दैत छथि। ओहूना समस्या आ समाधान संगसंगै एनाई कथाक विशेषता होइछ, एकरा निक पक्ष मानल गेल

छइ। 'अन्न धन लक्ष्मी' एकर निक उदाहरण भए सकैत अछि। अइ कथाक नेपाली अनुवाद कान्तिपुर दैनिकमे सेहो प्रकाशित भए चुकल अइछ। 'एंटीवायरस' मे फराक फराक शीर्षकमे फराक फराक स्वाद मिलैत अछि।

'उडान' कथाक संवाद रोचक अछि। जन जनसं जुडल यथार्थपरक विषयवस्तु अई कथासंग्रहके प्राण थिक, बेर बेर पढबाक लेल ककरो मोन ललाइत भए सकैत अछि। भ्रमरक नूतन अइ कथासंग्रहक कमजोरी जे ई जनबोली नइ बैन सकल। संस्कृतिभाषा जका जन जनके जिभसं उच्चारण करैमे कठीन होमवाला दरभंगिया आ मधुवनीक संभ्रान्त आ मानक मैथिलीक (जे अखन निर्धारण नइ भेल अइछ) शैली प्रयोग कतहू कतहू कएल गेल अछि। भाषाक शैली जनजिभहक बोली आ सरल भाषिका होमेके चाहि, कथाकार अईमे चुइक गेलाह से अनुभव होइत अछि।

साहित्यकार कापडिके किछु कथा संग्रह

क्र.सं. पोथीके नाम विधा प्रकाशित वर्ष (ईश्व संवत्)

१. तोरा संगे एजबौ रे कुजबा कथासंग्रह १९८४

२. हुगली उपर बैहत गंगा कथासंग्रह २००९

३. एंटीवायरस कथासंग्रह २०१९

साहित्यकार कापडि यात्रा संस्मरण, उपन्यास, डायरी लेखन, नाटक, शोधसहितके विद्यामे सेहो ओतबे कलम सशक्त कलम चलौने छथि। वि.स. २०६९ मे प्रकाशित हुनक 'घरमुहाँ' उपन्यास अत्यन्त चर्चित अछि। ताहिना जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठानसंग वि.स २०७० मे प्रकाशित

डायरी 'कोरोनाक संत्रासमे ओझराएल जिनगी (लकडाउन डायरी) पठनीय मात्र नए शिक्षाप्रद आ प्रेरणादायक सेहो ओतबे अछि। मैथिली साहित्यके एकगोट नक्षत्र कापडि द्वारा लिखल नाटकसब खुबे पढल गेल अछि आ मञ्चल सेहो ओतबे भेल अछि। हुनकर किछु चर्चित नाटकसबमें रानी चन्द्रवती, एकटा आओर बसन्त, महिषासुर मुर्दावाद आदि अछि। साहित्यकार कापडिके उत्कृष्ट नाटकसब नेपाली मे सेहो अनुवाद भेल अछि। शोध क्षेत्रमे सेहो हुनकर योगदान अतूलनीय छइन। जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी, लोकनाट्य ः जट जटिन, मैथिली लोकसंस्कृति(आलेख संग्रह), तराईको फाँटदेखि हिमालको कांखसम्म (आलेख संग्रह), राजा सलहेस (जीवनी), मैथिली लोकसंस्कृति ः विविध आयाम आदि हुनक पठनीय आ संग्रहनीय शोध पोथीसब अछि।

संपादनमे सक्रियता

साहित्यकेर महत्वपूर्ण विद्यामेसँ संपादन सेहो एक अछि। अईमे साहित्यकारक संलग्नताके अनिवार्य मानल जाइछ। जे सर्जक, श्रष्टा अई विद्यामे निपूण अछि, हुनकर साहित्यिक रचना गहिगर, पुष्टकर, पठनीय आ उत्कृष्ट सेहो मानल जाइछ। अई विद्यामे सेहो मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष कापडि ओतबे निमुण आ प्रारंगत छइन। हुनक संपादनमें प्रकाशित कृति, ग्रन्थ आ पोथीसब उत्कृष्ट भेटैछ। मैथिली पदसंग्रह,लाबाक धान, त्रिशूली, नेपालक मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्यःभावभंगिमा एवं स्वरुप, हम और तुम, मैथिली नाटक संग्रह, महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह) , लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह), लोक गाथा नायक ः दीना भद्री (निबन्ध संग्रह) आदि हुनके संपादनमे प्रकाशित अछि। अईमेसँ अधिकांशके प्रकाशन नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान कएने अछि।

रामभरोस कापडी मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिके जगेर्ना कएनिहार महत्वपूर्ण व्यक्तित्वसभमे सँ एकगोट थिकाह , जे अपन माटिपानिके आबाजके साहित्य सिर्जनाके माध्यमसंग सदखनि उज्जर बनबैत रहलाए। प्रतिभाके अमिर ओ साहित्यके विविध विद्याके समानान्तर आ निरन्तर अग्रगति दैत रहलाए। तई मैथिली साहित्य आ आख्यान क्षेत्रमे अर्धशतक सँ बेसी पुस्तक प्रकाशन कए चुकल अछि। ओ कविता, नाटक, कथासहितके विषयमे निरन्तर रचनात्मक कार्य करैत मैथिली भाषासाहित्यमे सेवा दए रहला अछि।

स्वभावजन्य गुण

साहित्यकार एवं प्राज्ञ कापडि अपनाविरुद्ध भेल कोनो भी आक्रमणके ओ ठंडा मिजाससँ टैकल करैमें निमुण छथि। गुटबन्दीमे हुनक विश्वास किन्नौह नई देखल गेल छइन , मुदा ओ सदखनि एकर सिकार रहलाए। बहुत रास बेर ई स्तम्भकारसंग सेहो ओ अपन अई तरहे सिकारक जिक्र कए चुकल छथि। बहुत लोक अपन मोनक बात सत्य भेलाके बावजूदों बोलबाक साहस नई करैत छथि, कियैक त सत्य बोलबाकलेल व्याग्र छाति चाहि। अई तरहे छाति मैथिलीजनमें बहुत कम भेटैछ, ओ छाती कमोवेश साहित्यकार रामभरोसमे देखल गेल अछि। करियाके करिया आ उज्जरके उज्जर कैह देनाई हुनक स्वभाव देखल गेल अछि। मोनक बात ओ बेधडक कैह दैत छथि, तई बहुत रास लोक हुनकासँ खिसियाएल पिताएल रहैत छथि। अपन अई स्वभावजन्य गुणके कारण किछु लोक हुनका 'सामन्ती' के उपमा सेहो देबाक लेल पाछा नए रहैत छैक।

मैथिली भाषासाहित्यमें लेखक लोकइनके आक्षेपमूलक प्रभाव बहुत कम भेटैट छैक। खास ककें सहगोत्री, स्वजाति लोकन्हिमे ई प्रभाव त भेटते नई छै। जौ ब्राह्मण आ ब्राह्मणेत्तरके बात अबैत अछि त आक्षेपक प्रभाव मैथिली

साहित्यमे वर्षौसं आब भेटैछ। मुदा किछु गोटके छोडि समालोचना विधाजन्य कार्य मैथिली साहित्यमे बड् कम छैक। बहुत रास लेखकगण स्तुतिगान आ प्रशंसागानके आत्मरति रमैत रहलाके कारण समालोचनात्मक पोथी नगन्य छैक। साहित्यकार रामभरोस सेहो अई क्षेत्रमे चुकल बुझाईछ। पचारटासँ बेसी पुस्तक प्रकाशन भेलाके बादों ई समालोचना विद्यामे हुनक उपस्थिति नय भेनाई नवतुरिया आ नवपिढीके लेल अन्याय अछि। शिरमौर्य साहित्यकारके आन विशिष्ट साहित्कार, समालोचक, कवि, निबन्धकार, नाटककार आदिप्रति हुनक धारणा नवपिढीसभ पढबाकलेल आतूर छथि।

ब्राह्मणेत्तर आ कायस्थ्येत्तरके कारण मैथिली साहित्यमे बहुतोंके दिल आ दिमागमे ईष्र्याभाव जगबैवाला उपस्थिति अछि। मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणवादीसभहक दबदबा, सघन उपस्थिति आ सहभागिताके कारण आन समुदायके लोकसभके प्रभावशाली, गौरवशाली उपस्थिति आ सहभागिता गौण छै। ई एकटा यथार्थ अछि। मुदा अई यथार्थसं उपर छैथ , प्राज्ञ रामभरोस। मैथिली साहित्यमे किनाराकृत समुदाय, जाति आ वर्गसं प्रतिनिधि कएनिहार ओ ब्राह्मणेत्तर आ कायस्थ्येत्तरके एकगोट रोलमोडेल बनबाक चाहि, मुद्दा नइ बैन पाबि रहल छथि। एकर बहुत रास कारण भएसकैत अछि ,ओहिमे सँ एकगोट कारण ईहो भँ सकैत अद्धि जे ओ मैथिली साहित्यकारसभमे पाओल गेल पुरातन मानसिकता, मनोभवा, मनोविज्ञान जे अपनासँ पैघ आ आगा बनेबाक दिशि दोसर बढैए नै देनाई छैक ई संकिर्ण संस्कार मैथिली साहित्याकारसभमें गत्तर गत्तर भरल छैक, एकर अपवाद भेटनाई मुश्किल अछि। मुद्दा साहित्यकार रामभरोसमे आनके तुलनामे अई क्षेत्रमे किछु उदार देखल जाइछ। ई स्तम्भकारसहित बहुत नवतुतियाके मैथिली भाषा, साहित्यसँ जोडबाक काज ओ कएने छथि। ओ आनजनका अपन कीर्तनीयाँ, भजनीयाँके पक्षमे नए छथि।

अन्त्यमे, मधेशी, मैथिली किंवा बहुभाषिक समाजके नङ्गा आ कठीन सत्यके उजागार करबाक लेल आब अबेर भए रहल अछि। एकरा लेल प्राज्ञ रामभरोस कापडी के अग्रसर होमे बहुत जरुरी छै। ओ अखन मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानके अध्यक्ष थिकाह, अई क्षेत्रमे हुनक योगदान अतूलनीय र सराहनीय होमाक अपेक्षा बहुत रास लोकके छै। समाजक यथार्थ आ सत्यके साहित्यके विभिन्न विद्या (व्यंग कविता, नाटक आदि) के माध्यमसँ आगा आनबाक मूल उद्देश्यक बनेकाब बेर भँ चुकल अछि।

मैथिली भाषामे प्रकाशकके अभाव छै , पोथी छापैवालाके अभाव छै, कोनो धरानी पोथी छैपके तयार भँ गेल वितरक आ विक्रेताके अभाव। पोथी खरिदकर्ताके अभाव। मैथिली पोथी खरिदके पढब आदत मैथिलीजनके विल्कुले नई छन्हि। मुक्तमे बाँटीयौं त पोथी लेबाक लेल हाथ प्रसारैवाला सभ बड बेसी भेटत। एहन अवस्थामा मे साहित्यकार रामभरोस ५० ६० टा पोथी प्रकाशित केलाहए, ई बहुतके अपन बसक बात नई छियैक।

राजनीतिकर्मीके भाषासाहित्यप्रति ओतेक इन्ट्रेस्ट नय रहैत छैक। तई ओकरासभके अपन कन्भिन्समे लकें ओ भाषासाहित्यके उन्नति, प्रगतिके अग्रगति आ अग्रदिशा देमाकले सदखनि अग्रमोर्चामे रहैत छथि। मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे हुनक नियुक्ति बहुत पैघ महत्व रखैछ। ओना राजनीतिक नियुक्ति विभिन्न साहित्य संस्था सबमे होइते रहलैए, मुदा मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे हुनक नियुक्ति साहित्य, भाषा, संस्कृति, कला, गीत संगीत क्षेत्र उन्नयन दिशि जाओत, बहुतमे आशा किरिण जगौलक अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१५.चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'

चंद्रेश-संपर्क-9430640883
विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित, विविधतामे विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार छथि श्रीरामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'। ओ लिकक्खर छथि आ जे किछु लिखलनि से जमिकऽ। कही तँ यथार्थपरक ढङ्गे जनजीवनक सम-सामयिक चित्र संवेदनाक संग उपस्थापित करैत छथि। ओ मानवक सुख-दुःख आ जीवनक संवेदनाकेँ मर्मस्पर्शी ढङ्गे उभारलनि। सहजता आ स्वाभाविकता हिनक लेखनक विशिष्टता रहल अछि। ओ समाजमे व्याप्त विसंगतिकेँ उठबैत समकालीन सत्यकेँ देखार करैत छथि। तेँ हिनक रचना छद्म आ पाखण्डीपक्षकेँ उघार करैत मानवक हृदयकेँ उद्वेलित करैत अछि।

मिथिला-मैथिलीक प्रति अनन्य प्रेम हिनका अदौसँ रहलनि अछि। खासकऽ डा० धीरेन्द्रसँ प्रभावित भऽ जे मैथिलीमे अयलाह से मैथिलीक रचनाकऽ एकरे भऽ कऽ रहि गेल छथि। ओ समाजक विविधतामे विषमताजन्य विसंगतिकें अपन रचनामे उठौलनि अछि। खासकऽ सीमाक एहि पार आ ओहि पार अर्थात् मिथिला क्षेत्रक सामाजिक राग-विराग पर अपन लेखनीक आधार बनौलनि अछि। ओ देश - काल स्थिति-परिस्थिति पर ध्यान केन्द्रित कऽ अपन रचनात्मकताक माध्यमे सटीकतामे समय-सापेक्ष सन्तुलित कऽ रचनाधर्मिताक निर्वाह कयलनि अछि।

हुनका जखन जाहि वस्तुक खगता बुझयलनि ताहि विधामे लिखलनि। नेपालक मैथिली साहित्यक भण्डार अक्षुण्ण रहैक से जानि-बुझिकऽ अपन रचनात्मक क्षमताकें आरो आगाँ बढ़ौलनि। हिनकामे यथार्थ-चिन्तनक क्षमता बेजोड़ छनि तँ आम जनक पीड़ा ओ विवशताकें व्यक्त करबाक छटपटाहटि अबस्से संघर्षकेँ स्वर दैत अछि। हिनक रचनामे प्रेमानुभूतिक धार अछि तँ दोसर दिस असमानता, शोषण आ पीड़ादिक भावमे जीवनक - प्रतिरोधी स्वर गूंजित अछि। कतहु - कतहु तँ सहजतामे सामाजिक विद्रूपतासँ टकराइत विसंगतिबोधक बात तेनाकऽ कहि दैत छथि जे मार्मिकतामे विविध आयाम स्वतः प्रस्फुटित भऽ जाइत अछिI

ओ कविता, कथा, नाटक, यात्रा - प्रसंग, निबन्ध, संस्मरण आदि तँ लिखबे कयलनि जे शोधपरक दृष्टि हिनक सेहो महत्वपूर्ण रहल अछि से कहल जा सकैत अछि। हिनक राजकमलक कथा साहित्यमे नारी' 2007 ई० मे शेखर प्रकाशन, पटनाएँ प्रकाशित भऽ आयल अछि। एहिमे राजकमलक नारी विषयक चित्रण अबस्से मोनकें मुग्ध कऽ दैत अछि। ओ स्वयं 'एहि पोथी मादे' मे लिखलनि अछि जे 'राजकमल चौधरीक साहित्य एहन पवित्र गंगाजल अछि, जकरा पीलासँ तृप्ति भेटैत छैक, ओ अद्वितीय अछि। ओना ई

पोथी प्रकाशित होयबासँ 23 वर्ष पूर्वहि 1984 ई० मे लिखल गेल जे स्वयं लेखक लिखने छथि। ओ जे नारी चरित्रक प्रारूप बनौने छथि से अछि- (क) परम्परावादी (ख) शोषित (ग) आदर्शोन्मुख (घ) पुश्चली (ङ) प्रकीर्ण। ओ नारीक दुनू चरित्र जेना- 'हुनका ने केबारक भितरक नारी पसीन छन्हि आ ने बाहरी दुनियांमे आबि कामतुष्टिक हेतु छिछिअएबा पर बाध्य नारी। हुनका एहि दुनूक बीचक नारी चरित्रसँ लगाव छलन्हि '। जेंकि ई पोथी पहिने लिखायल ते हिनक कतिपय रचनाक प्रसंग विचार छूटल अछि। तें ँ की ? राजकमलक प्रति हिनक श्रद्धाभाव अबस्से छिटकि आयल अछि। ओ स्वयं लिखैत छथि जे 'नारी मनोविज्ञानक एतेक सूक्ष्म अध्ययन हुनक कथा, उपन्यास सभमे हमरा भेटल, हम अवाक रहि गेल रही।'। ओ हिनक उपन्यास आ कथा - साहित्यिमे नारीक चित्रण एहि पोथीमे कयलनि अछि।

जेंकि राजकमलक सम्पूर्ण साहित्य हिनक लिखबाक वा विवेचन - विश्लेषण करबाक अवधि धर एकठाम पुस्तकाकार नहि भऽ सकल छल तें ओ सभटा पर विचार नहि कयलनि अछि। ओहुना सभटा रचना पर विचार-विमर्श होयब सम्भवो नहि थिक। उपन्यासमे मात्र ' आदिकथा' पर आ कथा साहित्यमे सेहो किछुए कथा पर ओ अपन विचार देलनि अछि। ओ जतबे जे किछु देलनि अछि ताहिमे 'कथ्य एवं शिल्प दुनू क्षेत्रमे हुनक अवदान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि' तकरा ओ स्वीकारलनि अछि। स्पष्टतः ओ लिखने छथि जे 'यौन समस्यासँ आक्रान्त मनःस्थितिक निर्द्वन्द्व उल्लेख हुनक सफल रचनाकार व्यक्तित्वक परिचायक थिक'।

वस्तुतः राजकमल अपन साहित्यमे धूम मचौने छथि। ओ अपन लेखनमे जनसमाजकें झकझोरिकऽ नवयुगक सूत्रपात करबाक सन्देश भरलनि अछि। मानवीय अन्तर्व्यथाकेँ उभारिक संवेदनात्मक गहनतम अन्तःस्थल धरि

पैसिकऽ जे प्रहार कलयनि से मनोमस्तिष्ककें झकझोड़ैत नवीनतामे नवदृष्टि अनबाक बात अछि से तँ कहले जा सकैत अछि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' एहि सभ बातकें प्रस्तुत कयलनि। ओ राजकमलकेँ चिन्हलनि आ संक्षिप्तेमे सही ओ एहि पोथीकेँ प्रस्तुत कयलनि। ओ राजकमलक कथा साहित्यमे नारी विमर्शक बन्ने नारी अस्मिताक प्रश्न उठाकऽ दलित-शोषित-पीड़ित नारीक चित्रणकऽ सामाजिक व्यवस्थाकेँ चीरीचोंत कयलनि अछि। एहि पोथीक रचनागत विशेषता यैह जे विभिन्न विद्वतजनक अभिव्यक्तिकें जगजियार क ओ अपन बातकें रखलनि अछि। नारी विषयक बात जखन राजकमलक कथा साहित्यमे उठत तँ एहि पोथीकेँ अबस्से मोन राखय पड़त। निस्सन्देह गागरमे सागर थिक ई पोथी।

दृष्टिसम्पन्न रचनाकार भ्रमरक सूक्ष्म दृष्टि यैह जे ओ सतत प्रकृति प्रेमक पुजारी छथि। कैक ठाम हिनक संग हम रही तँ बहुत किछु देखबा - भोगबाक अनुभूति भेटल अछि। ओ जतय-कतहु जाइत छथि तँ पहिने 'फोटोग्रैफिक कैमरा ' आ आब तँ 'मोबाइल से आधुनिक रहिते छनि। नीक ओ दामी मोबाइलक भरपूर उपयोग करैत छथि। मुम्बइक पार्क होअय वा कोलकाताक नेशनल पार्क वा स्थान विशेषक किएक ने होअय, ओ सभ ठाम प्राकृतिक सौन्दर्यकें अपन कैमरामे उतारैत ओकर भरपूर उपयोग करैत छथि। प्रस्फुटित फूल होअय वा केचुली - कुम्भी वा प्रवाहित जलधारा वा कोनो पुल वा आकर्षक वस्तु-जातादि ओ झट दऽ फोटो घीचि लैत छथि आ समयानुकूल उपयोग करैत छथि। हिनका लग दुर्लभ फोटो सभ अछि। हिनक अन्वेषणपरक दृष्टि यैह जे जिज्ञासु अनुसन्धाता लोकनिक हेतु ओ आद्यकवि 'विद्यापतिक दर्जनो अप्रकाशित पदसँ भरल अछि नेपाल' लिखिकऽ स्रोतक सम्बन्धमे जानकारी तँ देबे कयलनि अछि जे हुनक दू गोट अप्रकाशित गीतकेँ पहिने पत्रिकामे आ तकर बाद 'मिथिलाक

लोकजीवन: लोक सन्दर्भ 'मे पृ० सं० 205-206 पर प्रकाशित करबौलनि अछि। जेना - (गीत - 1) रागश्री। उत्तर बरस जोगीयक अमल बइसर: जोगी-रिषी दरबार बइसर।।1।। आ (गीत 2) राग काफि। गिरि कैलास हि रंग सदा शिव। रंग होरि हो हर गिजायक संग सदा शिव होरि हो।।1।। ततबे नहि, महाकवि विद्यापतिक नवीन रचना: 'वैद्य रहस्य' सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि। सांस्कृतिक चिन्तन कहि 'मिथिलाक लोकजीवन : लोक सन्दर्भ' पोथी मिथिला सेन्टर, अमेरिका' द्वारा 284 पृष्ठमे प्रकाशित भऽ आयल अछि। तीन खण्डमे प्रकाशित विभिन्न विषयपरक ई पोथी अबस्से विभिन्नतामे स्थान विशेष, माटि -
पानि, संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, लोककला, लोकगाथा, लोकसंस्कृति, नायक, पर्व-त्योहार, देवी-देवतादि, चित्रपरकादिकेँ समेटने - बटोरमे राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर कही तँ साक्ष्यमूलक दस्तावेज थिक। कारण, मूल्यबोधपरक ई पोथी बनि आयल अछि। लोकजीवन आ लोक सन्दर्भमे एहि पोथीक उपादेयता बनल अछि।

ओ विभिन्न संस्थामे प्रतिनिधित्व कऽ चुकल छथि। ओ जतबे वर्ष जाहि संस्थामे रहलथि तय अपन छाप छोड़ि देलथि। साझा प्रकाश होअय वा नेपालक राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, ओ कैकटा पोथी प्रकाशित करबौलनि जे मूल्यबोधक अछि। जेना - महाकवि विद्यापति आ नेपाल (2068) लोकनायक सलहेस (खण्ड-1 आ 2, 2069) लोकगाथा नायक दीनाभद्री (2070) आदि अछि। लोकगाथा ओ लोकसंस्कृतिपरक विचार - गोष्ठीक आयोजन तँ करबे कयलनि जे नेपाल पृष्ठभूमिक ऐतिहासिक सन्दर्भ सभ लऽ कऽ विभिन्न क्षेत्रक विद्वत्जनकेँ एकठाम एकत्रकऽ विमर्श करबौलनि। साक्ष्यकेँ प्रमाणक संग प्रस्तुत होयबासँ बेसी आपसीमे अर्थात् दर्शक-श्रोता आ वक्ताक बीच गहमागहमीमे झलफल करबाओल। सम्प्रति

ओ मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क अध्यक्ष छथि आ एहि संस्थाकेँ पल्लवित - पुष्पित करबामे दम-खम लगौने छथि। समयक प्रतीक्षा अछि।

हिनका मैथिलीक प्रति विशेष प्रेम तँ अबस्से छनि जे आनो भाषा प्रति आदर भाव छनि। ओ 2066 सालमे 'हम और तुम' हिन्दी कविता संग्रह जे पठित कविक कविताकें प्रकाशित करबौलनि। मैथिली कविता पोथी 'नहि, आब नहि' (दीर्घ कविता - संग्रह) क बस अब नहीं हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कयलनि। एहिना नेपाली आ भोजपुरीमे सेहो रचना छनि। मूल लेखनमे सम्प्रति 6 गोट कविता - संग्रह, चारिटा कथा-संग्रह, एकटा उपन्यास, 6 गोट नाटक आदि छनि।

हम गछैत छी जे रचना वैह पैघ होइत अछि जे लेखकक कलमसँ निकलितो, लेखकीय मानसिकताक उपजा होइतो अपन छवि-छटा स्वतंत्ररूपेण छिटकाबैत पाठकक मनोमस्किष्ककें हौंड़ैत बैसि जाइत अछि। मूल्यबोधक स्थितिए कोनो रचनाक प्राण थिक। तात्पर्य जे अपन दम-खम रखैत स्वतंत्र अस्तित्वपरक रचना अस्मिताधिकेँ जगबैत अपन पहचान अपने बनबैत अछि। एकटा बात ई हो सत्य थि जे लेखक लिखबा काल जे सोचैत-विचारैत लिखैत अछि सैह पाठको सोचि पाओत से कोनो बात नहि भेल। पाठकीय सोचमे अपन दृष्टि होइत अछि जे लेखकीय बोधसँ फराक भऽ स्वतंत्र चिन्तन-मननमे अपना-अपनीक अर्थ - ध्वनिकेँ स्पष्टकऽ सकैत अछि आ करिते अछि।

ई लिखबाक प्रयोजन एहि हेतुएँ जे भ्रमर जे किछु लिखैत छथि वा हिनक जे कोनो गतिविधि होइत छनि से सदैव सोचल-विचारल आ नव-नव गतिविधिसँ जुड़ल निष्ठा - भावे होइत छनि। जहिना ओ साहित्यिक-कार्यमे सम्बद्ध छथि तहिना पत्रकारिताक क्षेत्र अङ्ग्रेजने छथि। मैथिलीमे 'गामघर', 'अर्चना' 'आंजुर' आदि प्राकशित कयलनि। वर्ष - 36, अंक-

3, क्रमांक- 106, दिसम्बर - जनवरी 2023 'आंजुर 'क स्मृतिकेँ पेटारमे बन्न 'सोमदेव' आयल अछि। 'सोमदेव' पर केन्द्रित 'आंजुर 'क ई अंक - अबस्से सोमदेवकेँ चिन्हब-बुझबाक संगहि हुनक जीवनदृष्टि आ रचनादृष्टि पर प्रकाश दैत अछि। शोषित-पीड़ित लोकजीवनक उन्नायक छलाह सोमदेव जे जीवन भरि संघर्ष कयलनि आ कर्म बले ँ साहित्य-साधनाकऽ सपूत भेलाह। मानवीयताक गुण बले ओ महानताक आसन पर आसीन भेल छथि। तहिना भ्रमर अपन लक्ष्य सिद्धिक हेतु सतत नव-नव प्रयोग करैत प्रयोधर्मा बनि अपन औकादि देखा रहल छथि। ओ अपनाक सामाजिक सरोकारसँ जोड़ैत मुक्तिमार्गक अनुयायी छथि।

चीनक उपजा 'कोरोना' सम्पूर्ण विश्वकेँ दलमलित कऽ देलक। जेंकि 24 मार्च 2020सँ नेपालमे 'लॉकडाउन' लगा देलक। लोककेँ घरेमे सुरक्षाक दृष्टिएँ रहबाक लेल बाध्य कऽ देलक। एहि संक्रामक बीमारीक फलस्वरूप एकटा अघोषित युद्ध ठानल गेल तँ एहि सम-सामयिक स्थिति - परिस्थितिजन्य पोथी 'कोरोनाक संत्रासमे ओकरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) ' रामभरोस कापड़ि भ्रमरक जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठानसँ 2020 ई० मे प्रकाशित भऽ आयल। एहिमे लेखकक 10 अप्रैल 2020 सँ 22 जुलाई 2020 धरिक खेरहा आ 'उपसंहार' अछि। संगहि प्रसंग-अप्रसंग सेहो अछि। यानि 24 मार्च 2020क प्रसंग | 'कोरोना' नाम सुनितहिं लोकक रोइञा भुटकि जाइत छल। सभ एक-दोसर सशंकित नजरिएँ देखैत छल। साफ-सफाइ, सोशल डिस्टेन्सिंग आ मुखड़ा अर्थात् 'मास्क'क उपयोग बेस चलल। बच्चा आ बूढ़ पर खतरा बेस मड़रायल। ओना जुआन - जहान होअय वा चिकित्सक अर्थात् जे चपेटमे पड़ल से सभ खतरा पड़ल। कतेको मूइल, बेरोजगारक संख्या बढ़ल। कर्मसँ मानवताक गुणमे उत्तरोत्तर वृद्धि होइत अछि ताहि कर्मक सुकर्म दृष्टिगत भेल। हीत- मीतक पहचानबोध

कराओल। जीवन जीवाक ढंग सिखाओल। कही तँ युगक वास्तविक ओ क्रमबद्ध सत्य, तथ्य ओ कथ्य जगजियार भेल। कही तँ नेपालक आधुनिक इतिहास संक्षिप्ततामे देखार भेल। ते स्पष्टवादितामे लेखनी चमकि उठल अछि। एहि कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी पोथी अपन सार्थक उपस्थितिबोधमे। मानव जीवनक हिस्सा बनिक आयल ई बीमारी। लेखकक सामर्थ्य-शक्ति आ संघर्ष चेतना सेहो चित्रणमे झलकि आयल अछि। जे समाजक सत्यता जगजियार भेल ते लोकक विचार, संवेदनाक संग समय सापेक्ष नव अनुभूति दृष्टिगत भेल।

भ्रमर ई पक्ष विशेषे रहल अछि जे ओ ताकि - हेरिकऽ साहित्यकार बनयबाक प्रयास करैत छथि। एहि लेल ओ लोककें उत्साहित करैत छथि। रचना लिखाकऽ अपन पत्रिकामे वा आनो ठामक पत्रिकामे प्रकाशित करयबाक प्रयास करैत छथि। ओ जतेक नव रचनाकार बनेलथि आ ओहि नव रचनाकारक रचना लिखबाकऽ प्रकाशित कयने वा करबौने छथि से भविष्यक नव पीढ़ीकें बनयबामे योगदान अबस्से भरपूर रहब कहल जेतनि। साहित्यिक परिवेश ओ वातावरणक निर्माण ओ अपन कर्मठता आ सक्रियताक संग सार्थकता हेतु करैत छथि। कही तँ ओ अपन पाछाँ एकटा बेस पैघ जमाति ठाढ़ कऽ देलनि।

ई सत्य थिक जे हिनक जीवन-यात्राक कटु-मधु अनुभवमे बहुतो बात घटित भेल अछि। हिनक चेतन-अवचेतन मोनमे सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक पक्षमे घटित घटना- प्रामाणिकताक संग उभरितो ओ सदैव अपन काजमे वक जकाँ ध्यान लगौने रहल छथि। सहबाक ई सामर्थ्यबोध ओ अतिरिक्त रूपमे अर्जित कयने छथि। किएक तँ नेनपनेसँ हिनक रौद्र रूप नुकायल नहि रहल अछि। जिद्दी तँ वैह जे ओ अपन मोनमे जे बात ठानि लैत छथि से कैयेकऽ छोड़ैत छथि। उपेक्षा, अपमान आदि होइतो ओ आब अंगेजितो नहि छथि। एकमात्र

लक्ष्य जे कर्मबलें आगाँ बढ़ी। मान-सम्मान तँ ओ ततेक पाबि नेने छथि जे ढेर-ढाकी प्रशस्तिपत्रादि घरमे ढेरिआयल छनि। मिथिला - मैथिलीक नाम पर ओ धन-सम्पत्तिक परवाह नहि कयने छथि। दनादन पोथी आ पत्र - पत्रादि प्रकाशित कयने छथि।

देखल जाय तँ निस्सन्देह कहल जायत जे समय - साक्ष्यक साक्षी बनैत अपन रचनाधर्मिताबलें भ्रमर अपन युगक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि। ओ अपन प्रतिभा बलें जीवनक बीचसँ विभिन्न सामाजिक घटनादिक उठाकऽ जीवन-पक्षकें मजगूती प्रदान कयलनि अछि। ओ सामाजिकता आ मानवीय चिन्ताकेँ अपन अनुभूति प्रवणता बलें नैतिकता आ इमानदारीपूर्वक उठाकऽ रचना जगतक जे स्वरूप गढलनि अछि से हुनका साहित्य जगतक सिरमौर बनबैत छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

अयोध्यानाथ चौधरी

"भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

गत बर्ष जनकपुरक प्रसिद्ध वेलकम होटलमे आयोजित एकटा पुस्तक समारोहमे बैनर पर लिखल' राम भरोस कापड़िक पचासम् कृति' देखि मोन जिज्ञासा भावसँ तरंगित भ' उठल। एकदम सुपरिचित व्यक्तित्व तथापि हमरा ई जानकारी नव बुझबाजोग भेल। ओना हुनका द्वारा सम्पादित- प्रकाशित" आँजुर" पत्रिकाक बाहिरी आ भीतरी आवरण पृष्ठ पर कतेक बेर हुनकर लिखित किताबसभक फोटो अभरैत रहैत छल मुदा एतेक रास किताब भ' गेल हेतनि तकर अंदाज नहि भ' सकल छल। एहि बीच जानकारी भेटल जे हुनकर दूटा किताब एखनो प्रेसमे छनि ताहिसँ अपनहुँ लोकनि हुनक निरन्तर लेखन प्रवृतिसँ आश्वस्त भ' सकैत छी । मुदा लेखनमे मात्र नहि,ओ मिथिला- मैथिली सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजन, मिथिला- मैथिली सम्बन्धित आन्दोलन आदिमे सेहो ओतबे बढ़ि- चढ़िकय भागीदारी देखबैत देखल गेलाह अछि । से राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय दुनू स्तर पर। आ जनतब कराबी जे तकर मूल्यांकन सेहो पूर्ण रूपमे भेल छनि । ओइ मामलामे ओहन भाग्यशाली कम्मे

भेटताह। उदाहरणस्वरूप नेपालमे मधेश प्रदेश द्वारा पहिल आ नव-गठित तीन सदस्यीय' मधेश प्रज्ञा- प्रतिष्ठान'क प्रमुखक जिम्मेवारी किछुए दिन पूर्व सम्हारलनि अछि । ओना एहिसँ पूर्वमे सेहो ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित" नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान" सन महत्वपूर्ण निकायक प्राज्ञ- सदस्यक रूपमे सेहो कार्य क' चुकल छथि । ततबे नहि, ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार अन्तर्गत दोसर महत्वपूर्णसाहित्यिक आ प्रकाशन सम्बन्धित संस्था" साझाप्रकाशन "क अध्यक्षक रूपमे सेहो ओ अपन गहन जिम्मेवारी निर्बाह क' चुकल छथि । ई सब हुनकर कार्य- कुशलता आ चातुर्यक यथेष्ठ प्रमाण अछि ।

आब आबी हुनक कृतिसब पर दृष्टिपात करी । हुनक पहिल प्रकाशित रचना" इमान्दार बालक" नामक एकटा बालकथा छल जे1964 ई. मे मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटनामे छपल छल। अर्थात हुनक साहित्यिक यात्रा आइसँ54 बर्ष पहिने शुरु भेल जे एखन धरि ओहिना गतिमान अछि । हुनकासँ प्राय: एकोटा विधा छुटल नहि अछि जकरा क्रमिक रुपमे नीचाँ देबाक प्रयास कएल गेल अछि ।

हुनक कवितासंग्रहमे बन्न कोठरी, औनाइत धुआँ (2029 साल), नहि,आब नहि(2036 साल) , मोमक पघलैत अधर(गीत गजल), अप्पन अनचिन्हार(1990 ई.) , अन्हरियाक चान(गजल संग्रह,2070 साल, आ युद्धभूमिक एसगर योद्धा(2075 साल) आदि छनि । हुनक दीर्घ कविता' नहि, आब नहि' क नेपाली अनुवाद' भयो, अब भयो' आर हिन्दी अनुवाद' बस, अब नहीं' शीर्षकमे भेल अछि । हुनक कथासंग्रहमे तोरासंगे जयबौ रे कुजबा(1984 ई.), हुगली उपर बहैत गंगा(2065 साल) आ एन्टी भाइरस(2076 साल) क नामलेल जा सकैत अछि । हुनक एकमात्र उपन्यास' घरमुहाँ' (2029 साल) अछि

जकर अंग्रेजीमे अनुवाद भ' प्रकाशित होबय जा रहल अछि । हुनक एकटा' चीन जे हम देखल' (2070 साल) एकटा यात्रावृत्तान्त सेहो अछि जाहिमे चीन भ्रमणक संस्मरण अछि । हुनक कोरोना कालमे लिखल गेल एकटा लकडाउन डायरी सेहो अछि जे' कोरोनाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी(2070 साल) नामसँ प्रकाशित अछि ।

ओ बहुत रास नाटक सेहो लिखने छथिजेना रानी चन्द्रावती(2045 साल) , एकटा आओर वसन्त(2052 साल) , महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक(2054 साल) तथा भैया अएलै अपन सोराज(नाटक संग्रह2067 साल) आदि । हुनकर नाटक सभक नेपाली अनुवाद' भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु(2064 साल) नामसँ सेहो प्रकाशित अछि । हुनक किछु शोध परक पुस्तकसभ सेहो प्रकाशित अछि जेना' जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू(2056 साल) , राजकमलक कथा साहित्यमे नारी(2064 साल) , लोकनाट्य: जट- जटिन(2064 साल) , Cultural Heritage of Janakpur (2062 साल। हुनक किछु आलेख संग्रह सेहो प्रकाशित छनि जेना' मैथिली लोकसंस्कृति' (2066 साल), तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म'(2067) , मिथिलाक लोकजीवन: लोक सन्दर्भ(2079) , समयको अन्तराल पछ्याँउदै(2066)आदि । ओ एकटा' राजा सलहेस' (2074) नामक जीवनी सेहो प्रकाशित कयने छथि।

विविध बिषयक किछु किताब सेहो लिखने छथि जेना' आजको धनुषा(2039 साल), जनकपुर लोकचित्र((2046) , ठेकान पर(विचार संग्रह) , समय- सन्दर्भ(2068 साल) आदि ।

उपर्युक्त विवरणसँ'भ्रमर'क साहित्यिक अवदानक एकटा ब्यापक चित्र बनैत अछि । मुदा एहने ब्यापक अछि हुनक पत्रकार व्यक्तित्व जकरा सम्पूर्ण व्यक्तित्वक एकटा महत्वपूर्ण अंगके रूपमे ओकरा छोड़ल नहि जा सकैत अछि । हिनकर पत्रकारिताक इतिहास सेहो लगभग ओतबे पुरान अछि । ओ2026 साल अर्थात लगभग53 बर्ष पहिने' वैदेही' साप्ताहिकक कार्यालय प्रतिनिधिक रूपमे पत्रकारिताक शुरूआत कयलनि । तकर बाद2049 सालमे नेपालक प्रतिष्ठित दैनिक अखबारक प्रारम्भेसँ5 बर्ष धरि जनकपुर संवाददाताक रूपमे कार्यरत रहलाह। अपने सम्पादनमे गत38 बर्खसँ नेपालक एकमात्र मैथिली साप्ताहिक' गामघर'क सम्पादन आ प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि ।' आँजुर' नामक मैथिलीक द्वैमासिक पत्रिका विगत35 बर्षसँ सम्पादन- प्रकाशन करैत अएलाह अछि ।2054 सालसँ किछु बर्ष धरि एकटा नेपाली दैनिक' सुप्रभात'क सम्पादन-प्रकाशन सेहो कयलनि । आ2055 सालसँ अद्यावधि' जनकपुर एक्सप्रेस' नामक नेपाली दैनिक सम्पादन- प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि।

एकर अतिरिक्त ओ किछु पुस्तकाकार संग्रह सभक सम्पादन सेहो कयलनि जेना' मैथिली पद्यसंग्रह' (प्रकाशन: नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान: 2051 साल) , लाबाक धान(कवितासंग्रह) , ' त्रिशुली' (स्व. मथुरानन्द माथुर लिखित खण्डकाव्य, 2049 साल) नेपालक मैथिली पत्रकारिता(2044 साल) , मैथिली लोकनृत्य: भाव- भंगिमा एवम् स्वरूप(नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान(2061 साल), अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल(2065 साल) , हम और तुम(हिन्दी कवितासंग्रह, 2066 साल) , मैथिली नाटकसंग्रह (2067) , महाकवि विद्यापति आ नेपाल(साझा प्रकाशन, 2068) , मैथिली लोक- संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन(2069 साल) , लोकनायक सलहेस(निबन्ध संग्रह- खण्ड1 तथा

खण्ड2 , साल2069) , दीनाभद्री(निबन्ध संग्रह2070 , नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान) ,अहाँ जे कहलहँ(साक्षात्कार संग्रह, 2071) आदि ।

मतलब जे राम भरोस कापड़ि' भ्रमर ' कसाहित्यकार आ पत्रकार- दुनू व्यक्तित्व समानरूप सँ, समानान्तर रूपसँ निरन्तर गतिमान छनि । ओ सर्वदा सक्रिय रहैत छथि। एकर अतिरिक्त हिनक व्यक्तित्वक एकटा आर महत्वपूर्ण पक्ष छनि- राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक साहित्यिक- सांस्कृतिक सभा-सम्मेलनमे सक्रिय सहभागिता । ओ विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाकआजीवन सदस्यकहैसियतसँ करीब करीब प्रतिवर्ष नेपाली साहित्यकारलोकनिक टीमक नेतृत्व करैत छथि आ ताहि हिसाबसँ भारतक अनेक विशिष्ट शहरसबक भ्रमण क' चुकल छथि । ओहि संस्थान द्वारा प्रायोजितअन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सफल आयोजन काठमाण्डूमे एक बेर आ जनकपुरधाममे दू बेर करबा चुकल छथि । कोनो सभा- सम्मेलनक आयोजनमे हुनकर ब्यबस्थापकीय क्षमताक प्रशंसा करैटा पड़त । मुदा तकर लाभ सेहो पर्याप्त रूपमे भेटि चुकल छनि आ भेटैत रहैत छनि । हमर मतलब कार्यक समुचित मूल्यांकनसँ अछि । ओ दर्जनों पुरस्कार आ सम्मानसँ विभूषित भ' चुकल छथि ।

सबटा प्राप्त सम्मान आ पुरस्कारक विवरण उल्लेख नहि क' हम किछु मात्र इंगित कर'चाहब, जेना नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम' मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार' (2052 साल), विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा' मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा' शेखर सम्मान' , नेपाल मैथिली साहित्य परिषद, जनकपुर द्वारा' वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, मुम्वई द्वारा' मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपाल द्वारा' मधुरिमा सम्मान' , चेतना समिति, पटना द्वारा' यात्री चेतना पुरस्कार' , साझा प्रकाशन द्वारा' साझा

लोक संस्कृति पुरस्कार(2068 साल) , नेपाल सरकार द्वारामैथिली भाषा पर देबय जायवला सर्वोच्च' नेपाल विद्यापति भाषा साहित्य पुरस्कार' (2069 साल), रायपुर(छत्तीसगढ, भारत) द्वारा' मिथिला विभूति सम्मान' (2069) आदि । एहि सभक अतिरिक्त राष्ट्रपति द्वारा" सुप्रवल जनसेवा श्री तृतीय" (2077 साल) आ नेपाल सरकार द्वारा गद्याख्यान/ नाटकक हेतु देल जायबला" महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा पुरस्कार" (2077) विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि ।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञक रूपमे चीन, बांगलादेश आ भारतक साहित्यिक भ्रमणक सुअवसर प्राप्त करब सेहो एकटा सौभाग्यक बात अछि । एकर बाद हुनका सम्बन्धित किछु विशेष उल्लेखनीय बातक जानकारी कराबी । बहुत उल्लेखनीय बात सबमे एकटा विशेष उल्लेखनीय योगदान इहो अछि जे हुनकासँ पहिने साझा प्रकाशन मात्र नेपाली किताब प्रकाशित करैत छल, मुदा ओ जखन अध्यक्ष भेलाह त' पहिल बेर" बगियाक गाछ" शीर्षकसँ एकटा मैथिली बाल कथासंग्रह प्रकाशित करौलनि । दोसर महत्वपूर्ण बात जे पहिल बेर काठमाण्डूमे ओ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन(2067 साल) आयोजन कैलनि जकर उद्घाटन नेपालक राष्ट्रपति आ विसर्जन नेपालक उपराष्ट्रपति कैलनि । तेसर जे काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कविगोष्ठीमे ओ सर्वप्रथम मैथिलीक कविक रूपमे नेपालक प्रतिनिधित्व कैलनि । चारिम जे ओ पहिल बेर नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यक रूपमे प्रधान सम्पादकक जिम्मेवारी वहन करैत मैथिलीमे" आङन" पत्रिकाक शुभारम्भ कैलनि।

उपर्युक्त विवरणसँ मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृति तथा मैथिली पत्रकारितामे हुनक विशेष अवदान दिश संकेत करैत अछि । कोनो तरहक साहित्यिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम, सभा- सम्मेलन, गोष्ठी आदिमे हुनक ब्यबस्थापकीय क्षमताक प्रशंसा करहिटा पड़त। आयोजनक सम्पूर्ण नक्शा

जेना दिमागमे बैसल रहिते छनि । ककरा कोन जिम्मेवारी देलगेलत' ओकरा पर बरसि जयताह। ओ कार्यकर्ता आर निरुत्साहित भ' जाइए। आ ताहिसँ ओकरासँ हुनक सम्बन्धमे ठंढापन आबि जाइत अछि । एकर अनुभूति जखन हिनका महिना, दू महिनाक बाद होइत छनि, तखन ओ अगे भ' क' फोन करताह, " की यौ, कत' गायब रहैत छी? एकबेर भेट होअओ ने । एना जे गायब भ' जेबै, त' काज चलतै? ताबत् धरि ओहो जे बिक्षुब्ध बनल रहैत छथि सेहो सामान्य भ' जाइत छथि आ सम्बन्धक गाड़ी पूर्ववत गतिमान भ' जाइत अछि । तैं एकरा गुण कही की अवगुण?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज

अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज

विदेह अपन श्रृंखला मे अहि बेर एक एहन विभूति कैँ ऊपर विशेषांक निकालबाक नेयार केने अछि जे दुनु पारक मिथिला, मैथिली एवं मैथिलक मध्य सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र मे सेतुक कार्य क' रहल छथि। जनकपुर धाम बिनु मिथिलाक चर्च अधूरा अछि। मानलहुँ जे नेपाल मे ई सब मधेशी कहाइत छथि मुदा हमरा सब लेल त' अपन सहोदरे छथि। जनकपुर धाम सँ पुनौरा कैँ भिन्न कोना मानि सकैत छी। भनहि दुनुक मध्य सीमा रेखा घीचि देल गेल अछि मुदा दुनुक अन्तर्मन मे एक्कहि तरहक सभ्यता

ओ संस्कृति अछि आ ई सब अहिना सम्भव नहि होइत छैक, अहि कैँ लेल सेतुक आवश्यकता होइत छैक आ ताहि मे सँ एक छथि नेपालक धनुषा केर बघचौरा गामक मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ बहुआयामी साहित्यकार श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जे वर्तमान मे जनकपुर धाम मे रहैत छथि। लगभग पाँच दशक सँ निरन्तर माँ मैथिली केर सेवा मे लागल छथि। साहित्यक लगभग सभ विधा मे उत्कृष्ट रचनाक हिनकर अपन संसार छन्हि। विदेह पर बहुत किछु उपलब्ध छन्हि जकर आनन्द निःशुल्क उठाओल जा सकैत अछि। संपादन मे सेहो निष्णात छथि। हिनक रचना संसार त' बड्ड पैघ छन्हि मुदा एखन हम चर्चा करब हिनक उपन्यास "घरमुँहा" केर।

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर धाम सँ सन् 2012 मे प्रकाशित हिनक पहिल उपन्यास "घरमुहाँ" मधेश आन्दोलनक व्यथा कथा अछि। अपन रचना प्रसंग मे श्री भ्रमर जी लिखने छथि : ' मैथिली मे समालोचकक कमी छैक आ ताहुमे नेपालक रचना पर लिखबाक ककरा पलखति छैक। नेपाल मे त' आर अकाले छैक। तखन रचनाक मूल्यांकन भ' नहि सकल तैँ अपन लेखन कैँ आनक आँखिए किंवा पाठकक आँखिए तौलबाक अवसर नहि भेटल।' मुदा हिनकर रचनाक मूल्यांकन त' अहि पारक वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार सब निरंतर करैत रहलनि अछि आ जे भी कमी रहि गेल छल तकर पूरा करबाक प्रयास विदेह क' रहल अछि।

'भ्रमर' जी केर उपन्यास "घरमुहा" मधेशी आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर लिखल एक अद्भुत कृति अछि।नेपालक दक्षिणी भागक मैदानी (तराई) क्षेत्र कैँ मधेश आ अहि तराई मे रहय वाला भारतीय मूल कैँ लोग जे मैथिली, थारु, अवधी एवं भोजपुरी भाषी छथि तिनका सब कैँ एत्तह मधेशी कहल जाइत छैक। कहबाक कोनो प्रयोजन नहि जे हिनकर सबहक खानपान, रहन सहन सब अपने सन छन्हि। मुदा एत्तह हिनका सब सँ संवैधानिक भेद भाव कैँ कारण

अहि आन्दोलनक प्रयोजन पड़लै। आखिर पहाड़ी आ मधेशी मे भेदभाव किएक? अपन अधिकार केर प्राप्ति हेतु कतेको शहीद भ' गेलाह। नेता सब कैँ कि छैक, पिसाइत त' अछि आम जनता चाहे ओ मधेशी होइक आ कि पहाड़ी?

जुलुश सड़क पर नारा बाजी करैत आगू बढ़ि रहल अछि आ लोगक करमान लागल छैक। जखन कोनो भी पहाड़ी केर घर अथवा दोकान देखाइ पड़ैत छैक अहि भीड़ मे सन्हिआयल उपद्रवी तत्व अपन हाथ साफ क' लैत अछि। मधेशी आन्दोलन उग्र रूप धारण क' चुकल छल। इम्हर घर कैँ भीतर पहाड़ी मास्टर साहेब रमेश उपाध्याय अपन घर मे अहुरिया काटि रहल छथि। स्कूल, कालेज, दोकान आ अन्य सब बन्द छल मुदा पेटक धधकैत आगि कत्तहु शान्त रहौ? आ अहि कैँ लेल चाही रुपैया आ मास्टर साहेब कैँ हाथ खाली छलनि। धीया पुता कैँ लेल चिन्ता होइत छन्हि तैँ तैयार भ' क' घर सँ निकलि बैंक जयबाक नेयार केने छथि। मास्टर साहेब केर पत्नी सरिता हिनका बैंक जाय सँ रोकबाक प्रयास करैत छथिन्ह मुदा मास्टर साहेब कहैत छथि : ' अहाँ व्यर्थे चिन्तित होइत छी। हमरा केओ किछु नहि कहत। भरल शहर मे त' हमर विद्यार्थी अछि। ककरो हम बिगाड़ने नहि छियै त' के की करत!' खिड़की सँ हुलकी मारि स्थितिक टोह लेबाक प्रयास करैत छथि आ आन्दोलनी भीड़ कैँ उपद्रव देखि निकलबाक हिम्मत नहि जुटा पबैत छथि। मास्टर साहेब कैँ अपन शहर डेराओन लागि रहल छलनि आ एहन मे फोनक घंटी सुनि भयभीत भ' जाइत छथि मुदा हिम्मत जुटा क' फोन उठाबैत छथि। भय दूर होइत छन्हि किएक त' ओम्हर सँ अपन मीत जगमोहन कैँ आवाज सुनि हिनका बल भेटि जाइत छन्हि। सुख दुःख केर साथी अपन मीत पर हुनका पूरा भरोसा छलनि। ओम्हर हिनकर मित्र मधेशी आन्दोलन मे जी जान सँ लागल छथि मुदा अपन पहाड़ी मीत मास्टर साहेब केर सुरक्षा हुनका लेल चिन्ताक विषय छल। अहि संकट कैँ समय मे जगमोहन अपन मीत कैँ

सपरिवार अपना घर पर आबय लेल जिद्द पर अड़ल छथि मुदा मास्टर साहेब कैँ होइत छन्हि जे जौँ ओ अपन घर छोड़ि मीतक घर पर चलि जेताह त' आन्दोलनक धार कमजोर पड़ि जेतैक। जगमोहन कैँ पुरना दिन सब मोन पड़ैत छन्हि तैँ अपन मीतक लेल आन्दोलन केर राह सँ हटय लेल सेहो तैयार भ' जाइत छथि मुदा मास्टर साहेब सप्पत दैत अपन मीत कैँ रिकि लैत छथि। जगमोहन मोन मसोसि क' रहि जाइत छथि। ओना मास्टर साहेब कैँ मोन होइत छन्हि जे अहि आन्दोलन मे ओ अपन मीत जगमोहन अधिकारी कैँ साथ देथु आ सड़क पर उतरि मधेशी आन्दोलन जिन्दाबादक नारा लगाबथि मुदा पहाड़ी छथि आ घर मे नेपाली बजैत छथि एहन मे मधेशी सबहक केहन प्रतिक्रिया रहतनि से चिन्ताक विषय छन्हि।

लगातार आठ मास सँ आन्दोलन जारी छल। सबहक जीवन अस्त-व्यस्त भेल छलै। कोनो भी आन्दोलन हेतु पूँजी केर आवश्यकता होइत छैक आ अहि कार्यक बीड़ा उठौने छलथि दक्षिण बारी टोलक कहबैका कामेश्वर सिंह। हिनक पुत्र राजीव जेँ कालेज मे पढ़ैत छल से अहि आन्दोलन मे जी जान सँ जुटल छल। जुलुश मे शामिल उपद्रवी तत्व कैँ देखि राजीव कैँ चिन्ता सेहो होइत छलै। सरकारक तरफ सँ वार्ता केर आश्वासन भेटैत छैक आ ई खबर सुनि मास्टर साहेब कैँ होइत छन्हि जे चिन्ता टरल मुदा सब 'बुढ़ियाक फूसि'। वार्ता विफल होइत छैक आर आन्दोलन तीव्र मुदा मास्टर साहेब कैँ पूरा भरोसा छलनि जे एक-न'-एक दिन सरकार कैँ झुकहे पड़तैक आ मधेशी सब कैँ न्याय भेटि क' रहतैक चाहे अहि लेल वार्ताक कतेको दौड़ चलतैक। हिनका लेल चिन्ताक मुख्य विषय छलनि सामाजिक समरसताक लोप भेनाइ। पहाड़ी लोग सब कैँ धमकी भेटनाइ शुरु भ' गेल छलै आ लोग औने पौने दाम मे अपन बाप दादाक बनाओल घर आ जमीन कैँ बेचि पलायन करय लेल मजबूर होइत छथि।

वार्ताक कतेको असफल दौड़ कैँ उपरांत 30 अगस्त 2007 क' 26 बूँदा पर सहमति बनि जाइत छैक। आन्दोलन बन्द होइत अछि। विजय जुलुश निकलैत अछि। मुदा नेपाल सरकार मधेशी सबहक खुशी मे फेर ग्रहण लगौलक आ तकर नतीजा होइत छैक जे मधेशी आन्दोलन पुनः धधकि उठैत छैक। अनिश्चितकालीन नाकाबंदीक घोषणा होइत अछि। सोरह दिनक नाकाबंदी सँ राजधानी काठमांडू मे हाहाकार मचि जाइत छैक आ बाध्य भ' क' नेपाल सरकार कैँ झूकय पड़ैत छैक आ आठ बूँदा सहमतिक उपरांत संविधान सभाक निर्वाचनक तैयारी प्रारम्भ होइत अछि। नींक संख्या मे मधेशी चुनाव जीति क' अबैत छथि आ नेपाल मे एकटा न'ब अध्यायक श्री गणेश होइत छैक।

दुनु पक्षक सहमतिक उपरांत जे मास्टर साहेब मधेश जिन्दाबादक नारा लगौने छलथि आ संगहि नींक दिनक परिकल्पना केने छलथि से वर्तमान परिस्थिति मे श्रापित भ' कुहरि रहल छलथि। संपूर्ण मधेश मे विभिन्न समूहक नाम पर चंदा उगाही, अपहरण, धमकी देनाइ शुरु भ' जाइत अछि। सशस्त्र आन्दोलनक नाम पर आम पहाड़ी केर जीवन नर्क भेल जा रहल छल। वास्तविकता त' ई छल जे संपूर्ण आन्दोलन गुंडा तत्व केर द्वारा 'हाइजैक' भ' जाइत छैक। अपनो सबहक देश मे एखन धरि जतेक भी आन्दोलन भेल अछि तकर अन्तिम परिणाम इएह भेल अछि। मास्टर साहेब कैँ फोन पर लगातार दस लाख रुपैया देबाक लेल धमकायल जा रहल छन्हि। मास्टर साहेब अपन घर जमीन सब बेचि अपन परिवारक संग कोनो सुरक्षित स्थान पर पलायन करबाक योजना अपन पत्नी सरिता कैँ समझाबैत छथि। अतेक आसान काज त' नहि छैक अपन बाप दादाक डीह पर सँ पलायन केनाइ मुदा इतिहास गवाह अछि जे मजबूरी मे लोग की नहि करैत अछि? इम्हर मास्टर साहेब तैयारी मे जुटल छथि आ ओम्हर कालेज सँ घुरैत काल हिनकर बेटी किरण केर अपहरण भ' जाइत छन्हि। अपहर्ता दस लाख

रुपैया नहि देला पर अथवा पुलिस कैँ कोनो तरहक सूचना देला पर हिनकर बेटी किरण कैँ जान सँ मारि देबाक धमकी देने छलनि। अपन मोनक व्यथा मास्टर साहेब ककरा कहितथि? हुनकर मीत जगमोहन सेहो कत्तहु बाहर निकलल छलथि।

किरण केर प्रेमी राजीव कैँ अहि बातक किछु भनक लगैत छैक त' ओ अपन स्तर पर खोजबीन करैत अछि आ अपहर्ता सबहक पर्दाफाश करय मे सफल होइत छैक आ मास्टर साहेब सँ भेँट करय अबैत छथि त' जगमोहन सँ ज्ञात होइत छन्हि जे ओ अपन घर बेचि क' अपन परिवारक संग सँझुका बस सँ काठमांडू लेल विदा भ' गेलाह। ओ अपन मीत कैँ ऊपर भरोसा नहि क' सकलाह आ सुरक्षित स्थान कैँ लेल भारी मोन सँ प्रस्थान क' गेलाह। राजीव, ओकर पिता कामेश्वर सिंह आ जगमोहन मास्टर रमेश उपाध्याय कैँ रोकय लेल निकलैत छथि। अपन प्रभाव सँ कामेश्वर सिंह बस रोकबाबय मे सफल होइत छथि आ मास्टर साहेब कैँ बस सँ उतारल जाइत छन्हि। अहि अपहरण मे के शामिल छल आ इंसानी रिश्ता कोना तार तार भ' रहल अछि तकर अद्भुत वर्णन भेल अछि अहि उपन्यास मे जे बिनु पढ़ने नहि समझि सकैत छी। मास्टर साहेब कैँ घर घुरि चलबाक लेल कामेश्वर सिंह आ जगमोहन अनुनय विनय करैत छथि मुदा जखन बेघर भ' गेलाह त' आब केहन मोह? मुदा एहि उपन्यासक एक सुखद अन्त होइत अछि आ मास्टर साहेब कैँ जखन अपन घरक मादे सही जानकारी भेटैत छन्हि तखन घर घुरय लेल मानि जाइत छथि आ उमटाम लादल गाड़ीक घरमुहाँ बैल जँका मास्टर रमेश अधिकारी केर डेग फरहर आ जी हल्लुक बुझा रहल छलनि।

अहि उपन्यासक उद्गार मे साहित्यकार श्री राजेन्द्र विमल जी बहुत सटीक लिखने छथि : "मैथिलीक ख्यातनामा आख्यान कार श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेश आन्दोलन सँ

उपजल उमड़ल जन आकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, भावनात्मक उद्वेलन, विक्षोभ आ जटिलता कैँ घोर यथार्थ परक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शन संग मर्मस्पर्शी इति पबैत अछि।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.रमेश रञ्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक

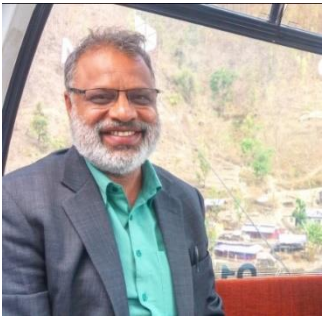

रमेश रञ्जन

एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक

कइएक दशक पश्चात एकटा नाटकक संस्मरणकेँ शब्द देबाक प्रयत्न क' रहल छी। अतितमे प्रवेश आ ओहिकेँ तात्कालीन समयक सँग विवेचन थोड़ दुरुह कार्य मानल जाइत अछि। ओहूना संस्मरणात्मक निवन्धमे घटनात्मक विवरण आधिक्य भेलासँ निरश साहित्य रचनाक संभावना रहिते टा छै। हम ई बात बूझितो एहने प्रयत्न क' रहल छी।

बिक्रम सम्वतक पाँचम दशकमे नेपालक मैथिली क्षेक्रक सर्वाधिक सत्रिय लेखक, पत्रकार रामभरोस कापडि भ्रमर एकटा आर वसन्त नामक नाटक लिखलनि। नाटक विषय वस्तु रहै वालविवाह आ ताहिसँ उत्पन्न भयावह परिणति। विवाहसँ जोड़ल बिषय वस्तु होएबाक कारण ओहि नाटकमे प्रमुखतासँ दहेजक सामाजिक प्रभावकेँ लाओल गेल रहै। माने ई दुनू तात्कालीन अवस्थामे भिन्न विषयसँ बेसी एकदोसरकेँ परिपूरक विषय जकाँ

भ' जाइक। तत्कालीन समय मिथिलाक सामाजिक संरचनाकेँ सभसँ बेसी प्रभावित कएने रहैक ई बिषय तें बहूत रास लेखक साहित्यक विभिन्न विधामे ओहि विषयमे साहित्य रचना केलनि।

एहि नाटकक लेखन आ प्रर्दशनसँ पूर्वहू नेपालक भूमिमे महेन्द्र मलंगिया अपन पहिल नाटकक रुपमे लक्ष्मण रेखा खण्डित लेखन कएने छलाह आ ओहि नाटककेँ नेपाल आ भारतक मैथिली क्षेत्रमे व्यापक प्रर्दशन भेल छलै। स्वभाविक छै जे जखन एकटा आर बसन्तक लेखन भेलै त नेपालक साहित्यिक परिवेशमे एहि नाटक प्रति पाठक र रङ्गकर्मी उत्सुक रहए।

ओहि कालखण्डमे हम स्वयं सेहो रङ्गकर्मसँ सक्रियतापूर्वक आवद्ध छलहुँ। हमर सम्वद्धता मिथिला नाट्यकला परिषदसँग छल। जनकपुर परिसरक सर्वाधिक प्रभावशाली ओ समूह एहि नाटकक मञ्चन दिस उत्सुक नइ भ' सकल। एकर कारण विवेचनमे नइ जाइ, मुदा एहि नाटकक पाठ हमरा पढ़बाक अवसर उपलब्ध भ' गेल रहए। हमरा तखनो लागल रहए जे एहि नाटकमे विषयवस्तुक समसामयिकता छै। पात्र आ परिवेश मौलिक छै, संवाद चोटगर आ पात्रोचित छै। मञ्चपर एहि नाटकक प्रर्दशन आवश्यक छै। किछुए दिनक अन्तरालमे एहि नाटकक प्रर्दशन कएल गेलै। जनकपुर आ काठमाण्डौंमे भेल प्रर्दशन अपेक्षाकृत तात्कालीन अवस्थामे नव मानल जाएबला नाट्यकर्मी सभक समूह आकृति एहि नाटकक प्रर्दशन कएने छल। स्वभाविक छै प्रर्दशनमे आवेश रहै मुदा प्रर्दशनमे परिपक्वताक आओर बेसी आवश्यकता रहै।

मूलतः हम ई कह' चाहलहुँ अछि जे एहि नाटकक प्रर्दशन देखबाक अवसर भेटल। आब नाटक प्रर्दशनक क्राफ्ट कतेक प्रभावशाली रहै, रङ्गमञ्चमे प्रयोग होमएबला विभिन्न अवयवसभ अर्थात लाइट, साउण्ड, प्रोप्स, अभिनेताक कार्य वा समग्रमे निर्देशकक कार्य कतेक

प्रभावशाली छलै ताहि रुपकेँ विश्लेषण एखनुक दृष्टिए थोड़े जटिल छै। मिथिला क्षेत्रमे प्रभावशाली आ कार्यक स्तरपर व्यावसयिक रङ्गमञ्च क' रहल समूहसभ सेहो प्रविधि प्रयोगक दृष्टिए कमजोरे छल। अर्थात प्रविधिसँ बहुत परिचित नइ भ' पाएल छल।

जनकपुरमे मिनापक बाद आकृतिमे युवा रङ्गकर्मी लोकनि आवद्ध भ' उत्साहक सँग कार्य क' रहल छलाह। मूलतः रङ्गमञ्च आवेश आ शौकक आधारपर सक्रिय छलै। हमरासभ अधिकांश मैथिल मिथिलाक ग्रामीण रङ्गमञ्चसँ परितिच छी। खासक' पर्व, त्योहार आ उत्सवमे गामसँ बाहर रहनिहारसभ ओहि अवसरपर नाटक करैत छलाह। जाहि नाटकक प्रर्दशन रुपकेँ थोड़बो स्मरण कएल जाए त भेटि जाएत, पारसी थिएटरक रुप। ओना त बहूत रास हिन्दी नाटक होइत छलै मुदा मैथिली नाटक सेहो प्रर्दशन शैलीगत स्तरपर आमरुपमे ताहिसँ भिन्न नइ छलै। ओहि चरणमे जनकपुर सन जगहपर सेहो गामसँ आएल युवा सभ छलाह, जिनक आधुनिक रङ्गमञ्चसँ खासे परिचिति नइ छलनि आ तें पारसी शैलीक नाटक करैत छलाह। एकटा आर बसन्तक पाठ याथार्थवादी नाटकक जकाँ रहितो प्रर्दशनमे आधुनिक रङ्गमञ्चक प्रविधिसँ वञ्चित रहल। या ई कही जे पारसीक प्रर्दशनात्मक शैलीक चपेटमे रहल नाटक।

एहि नाटकक पाठपर बात करी त विषय वस्तु समान्य रहितो नाटकक कथोपकथनमे विशिष्टता देखाई दैत छल। मिथिलाक समाज छलै ओहि नाटकमे, अर्थात समाजक जे विभिन्न रुप आ चित्र भेटै छै मिथिलाक एकटा गाममे ओ अत्यन्त प्रभावशाली आ सहजताक सँग उपस्थित छल। जेना अभिजात्य सामन्त परिवार जकरा लग अपना जीवनपद्धतिमे आडम्वर छलै, लालच छलै आ समयके अपना मुट्ठीमे नियन्त्रित रखबाक अनवरत प्रयत्न करैत देखल जाइ छलै। निर्धन आ कमजोर छलै जकर जीवन जटिल

छलै। जीविकाक हेतु सङ्घर्ष क' रहल छल। वैवाहिक आ संस्कारिक कार्यकेँ निर्वहन पैघ चुनौतीक रुपमे छलै। ओ कहुना दायित्वमुक्त होएबाक विवशतामे रहैत छल। स्वभाविक छै जे एहिसँ सामाजिक त्रासदीक जन्म हेतै जे एहि नाटकमे जनमैत छै। एहि नाटकक कालखण्डसँ आओर अतितमे जाइ त वालविवाह, विधवाविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह सन सामाजिक कुरुपताक ई रुपसभ आर भयावह देखाइत छै। एहन वैवाहिक प्रथासँ सामाजिक विकृतिक चरम निकृष्टता उत्पन्न भेलै मुदा एहनो वर्ग छलै जे एहन प्रथाकेँ महिमा मण्डन सेहो करैत छलाह। अभिजात्य वर्ग अपन अन्तर कुरुपताकेँ पर्दाक माध्यमसँ छेकने छलाह। मुदा श्रमिक वर्ग लाञ्छित होइत छल। अर्थात लाञ्छना मात्र नइ, एहि प्रकरणमे कतेको परिवारक विनाश भ' जाइत छलै। एहि नाटकक नाटककार एहि द्वन्द्वकेँ समधानिक' पकड़लनि अछि।

एकटा गरिब बाप अपना बेटीक ब्याहक हेतु व्याकूल अछि। मुदा ओकर व्याकूलता व्यक्तिगत व्याकूलता मात्र छै। बजारक दर भाउ अनुसार ओ दहेजक भुक्तान करबामे असर्मथ अछि तें ओ बेटीकेँ गराक घेघ बूझि साठि दैत अछि कोनो रोगी आ कि बेस उमेरगर पुरुषक वस्तु जातक रुपमे। नाटकीय घटना कोनो अप्रत्याशित नइ अछि। ओहि वीमार पुरुषक मृत्यु होइ छै आ ओ कान्या पुनः बापक गराक घेघक रुपमे नैहरमे रहबाक लेल वाध्य अछि।

नाटकक कथा एकदमसँ सिनेमाई घटनाक्रम जकाँ आगा बढ़ैत अछि। एकटा अभिजात्य परिवारक युवा जे विवाह करबा योग्य उमेरक अछि आ ओहि युवाक विवाहे प्रसङ्गसँ एहि नाटकक प्रारम्भ होइत छै आ कि ई कही जे नाटकक अधिकांश समयावधि एहि विषयपर केन्द्रित रहैत अछि। ई युवक गामक सोच, परम्परासँ भिन्न प्रगतिशील आ परम्परा भंजककेँ रुपमे देखल

जाइत अछि। जकरा ओहि नायिकसँगे वाल्यअवस्थाक प्रेमपूर्ण संस्मरणसभ छै, जे विधवा होएबामे ओकर दोष नइ देखैत अछि। जे ओहि लड़कीकेँ अपशगुन नइ मानैत अछि। पुनः ओएह दुनूक भेंट, दुनूमे पुनः अन्तरंगता, चर्चा, किछु नाटकीय घटनाक्रममे थ्रील, सस्पेंस आ पुनः युवाद्वारा युवतीकेँ स्वीकारोक्ति। इएह कथानक छै।

एहन विषयवस्तु जकरा प्रभावमे अधिकांश अछि, जकर साक्ष्य आ भोक्ता सम्पूर्ण समाज अछि आ जकर पक्ष आ विपक्ष परम्परा, संरचना आ समय अछि, तेहन विषयपर सिर्जना करब चुनौती त छै। अनेकों तरहक आरोपकेँ सामना कर' पड़ै छै। हमरा बुझने एकटा सर्जक एहन आरोपकेँ परबाह नइ करैए आ तें रचना करैए। भ्रमरजी एहन चिन्ता आ दुविधासँ दूर छथि तें निरन्तर रचनारत छथि। अहू नाटकमे ओ सामाजिक समस्याक विरुद्ध परिवर्तनक परिकल्पना करैत छथि। एकटा क्रान्तिकारी चेतना प्रवाहित करैत छथि। हुनक दृष्टिकोण छनि चिन्तनक जड़ता आ शासकीय दम्भक गर्भमे क्रान्तिक जन्म भ' सकैए। वर्ग चेतना छै। जे ओहि चेतनाकेँ ग्रहण करत ओएह परिवर्तनक कठिन मार्गपर आगा बढि सकैए। परिवर्तनक संवाहक बनबामे पारिवारिक पृष्ठभूमि वाधक होएबाक कथनमे जे सत्यता होइक मुदा एहि नाटकक माध्यमसँ भ्रमर एहि मान्यताकेँ स्थापित कर'मे सक्षम होइत छथि जे विचारकेँ ने त अतित, ने त पृष्ठभूमि छेक सकैए।

एहि नाटकक सन्दर्भमे जखन चर्चा आगा बढ़बैत छी त हमरा युरोपिय समाजक परिवर्तनक कालखण्डकेँ थोडे संस्मरण भ' अबैए। माकर््स जीबैत रहथि आ युरोपिय समाजक सामाजिक, राजनीतिक घटनापर बड़ तीक्ख नजरि रखने रहथि। बहुतरास लेखक साहित्यकार वा कलाकर्मी लोकनि सेहो अपन सिर्जन आ प्रर्दशनद्वारा युरोपक कठिनकालकेँ अझिव्यक्त क' रहल रहथि। ओहि त्रममे स्वयं माकर््स कहैत छथि जे युरोपमे पूँजीवाद

आ पूँजीक नियन्त्रक कोना सत्ता नियन्त्रण क' लेलक अछि। गद्दीपर कियो अछि मुदा सत्ता त यर्थाथतः पूँजीपतिक हाथमे छै। एहि बातकेँ अतेक स्पष्ट आ प्रभावी ढंगसँ कोनो वैचारिक वा राजनीतिक अध्येता लोकनि अपनाकेँ सम्प्रेषित नइ क' सकलाह जतेक बाल्जाक अपना उपन्यासक माध्यमसँ करैत छथि। साहित्यमे तात्कालीन समयक इतिहासवोध रहैत छैक। तें इतिहास आ साहित्य एकदोसरक परिपूरककेँ रुपमे सँगसँग यात्रा सेहो करैत अछि। ओना साहित्य इतिहासक सम्वन्धकेँ एतेक सहजताक सँग व्याख्या नए कएल जा सकैए। तथापि एहि प्रसङ्गकेँ एहिठाम उल्लेख करबाक इएह कारण अछि जे नाटककार भ्रमर एहि नाटकमे एहन उपकथासभकेँ सायास लओलनि अछि जे नेपालक तात्कालीन समयक एकटा ऐतिहासिक घटनाक्रमक समान्य रेखाचित्र भेटैत अछि। सामान्य कहबाक तात्पर्य ई जे एकर सघन रुप त इतिहासमे मात्र खोजल जा सकैए मुदा साहित्य कतेको स्तरपर समयकेँ मूखर रुपें अभिव्यक्त क' रहल रहै छै जकरा साहित्यक पाठककेँ चिन्हित कर' पड़तै।

एहि नाटकमे नेपालक राजनीतिक परिवर्तन आ ओहि परिवर्तनक प्रभावकेँ उपकथनद्वारा प्रभावी ढंगसँ उठाओल गेल छै। खासकए बिक्रम सम्वतक चालिस दशककेँ अन्तमे नेपालमे व्यापक परिवर्तन झेलै। सक्रिय राजतन्त्र सीमित शत्तिकसँग मात्र अपनाकेँ कहूना सुरक्षित कएलनि। एकटा देशक मूल सत्ताक परिवर्तन कोनो सामान्य घटना नइ होइ छै। स्वभाविके एकर प्रभाव राजतन्त्र संस्थाक पृष्ठपोषक शक्तिपर सेहो पड़लै, शक्तिविहिनताक अनुभूतिसँ ओहन शक्ति विचलित छल। परिवर्तनक अकांक्षी, समाजक श्रमिक, दलित, वञ्चित वर्ग किछु बेसिए उत्साहमे छल। राजनीतिक परिवर्तनक सामाजिक प्रभावकेँ एहि नाटकमे अत्यन्त कुशलताक सँग लाओल गेल अछि। नाटकक सामन्त पात्र बेरबेर एकटा बात उल्लेख करैत अछि जे जमिन्दारी चलाएब आब कठिन भ' गेलै। ओ गामक श्रमिक वर्ग जे

कहियो जमिनदारक दयापर जीवन निर्वहन करैत छल आब ओहि मालिककेँ टेरनाई छोडि देलकैए। सक्ता आ शत्ति जकरा लग छै तकरा नइ गुदानब त विद्रोह छै। नाट्यकार राष्ट्रिय स्तरपर भेल राजनीतिक परिवर्तनकेँ प्रभाव आमजन कोना ग्रहण कएलक वा आमजन कतेक सचेत राजनीतिक स्कुलिङ क' लेलक अछि जे देशक शीर्ष सत्ताकेँ विस्थापित करबाक क्षमता प्राप्त क' लेलक से स्पष्ट र्कलनि अछि। एहि नाटकमे राप ताप विहिन सामन्त पात्र जेना वृद्ध बाघ सन स्थितिमे अछि जे अपना गुफामे कैद अछि आ ओत्तहिसँ हुमरि रहल अछि। विवश, कमजोर आ कातर बाघ।

नाट्यकार एहि द्वन्द्वकेँ मात्र नाट्यरुप नइ दैत छथि ओ वस्तुतः स्पष्ट नइ भ' पाबि रहल छथि जे परिवर्तन जनपक्षमे छैहो की नइ ! ओ नोकरशाहक गैरजिम्मेवार प्रवृतिक आलोचक छथि। नौकरशाह जनताप्रति विनम्र व्यवहार नइ रखैत अछि। ओ कामकेँ बदलामे अतिरिक्त रकमक असूली करैत अछि वा समग्र नौकरशाह अनियन्त्रित आ अराजक भ' गेल अछि, जकरा नियन्त्रण कएनिहार कियो देखाइ नइ दैत अछि। नौकारशाहक जनताप्रति अनउत्तरदायी व्यवहार आ गलत आर्थिक उगाहीक लेल नाट्यकार अमूर्त रुपमे राजनीतिक परिवर्तनकेँ जिम्मेवार मानैत छथि। माने पहिने सभकिछु ठिक छलै, सम्पूर्ण तन्त्र अनुशासित छलै। एखन सभकिछु अराजक छै, प्राकारान्तरसँ एहि भाष्यकेँ स्थापित करबाक प्रयत्न छै। एहन प्रयत्न मोटामोटी कएक प्रसङ्गमे प्रयत्नपूर्वक करैत देखाइत छै। माने गाममे चोरक गतिविधि बढि गेलैए त ताहिके लेल राजनीतिक परिवर्तनमे खोट देखाईत छै। बूझब जरुरी ई छै जे नेपालक ओ परिवर्तन मात्र सत्ता परिवर्तन नइ रहै। ओ व्यवस्थाक परिवर्तन रहै। सयौं वर्ष स्थापित मान्यता, संरचना आ चेतनाकेँ एकटा परिधिक भितर लाएल गेल रहै। जे स्वतन्त्र स्वछन्द विचरण करैत अछि तकरा लेल सीमा निर्धारण असह्य होइते छै। तात्कालीन सत्ताक श्रेष्ठताक मान्यता रखनिहार मुखर विरोध करबासन अवस्थामे नइ अछि मुदा ओ शान्त विद्रोहक लेल किछु

खास सरंजाम जुटा रहल अछि। माने साहित्यक माध्यमसँ एहन भाष्यक स्थापनाकेँ खतरनाक प्रयत्न मनल जा सकैए। वर्तमानकेँ कुरुप देखाएब माने अतित त सुन्दर छलै ताहि मान्यताकेँ स्वतः स्थापना होइत छै। साहित्यक माध्यमसँ विशिष्ट शस्त्र निर्माण जाहिसँ राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पुनरुत्थानकेँ पुर्नजीवन देल जा सकै। प्रत्येक राजनीतिक परिवर्तनकेँ बाद लगभग सभ देशमे एहन विमर्श देखल जा सकैए। वौद्धिक आ सिर्जनात्मक रुपसँ सेहो पुर्नउत्थानक प्रयत्न आ अग्रगमनक प्रतिवादक स्वभाविक द्वन्द्व देखल जा सकैए।

एहि नाटकमे चोरक प्रसङ्ग बड़ प्रभावशाली ढंगसँ राखल गेलैए। चोरक गिरोह मात्र चोरी नइ करैत अछि। ओ एकटा वैचारिक द्वन्द्व सेहो ठाढ़ करैत अछि। गामक नाट्य अवस्थितिमे सामन्त आ अपराधी बिच सम्वन्धक प्रगाढ़ता एकटा नव नाट्य विडम्वनाक स्थापना करैत छै। एहि प्रसङ्गमे मध्यम वर्गक वर्गिय चरित्र सेहो बड़ा ढंगसँ मूखर भेलैए। ओ परिवर्तनकेँ आधारभूत शक्ति अछि मुदा ओ ततबे अवसरवादी सेहो अछि। ओ सङ्घर्ष बादक उपलब्धीक सभसँ पैघ हिस्सेदार अपनाकेँ मानैत अछि। एहिमे कोनो तरहक अवरोध नइ देख' चाहैए। ओ तत्काल लाभक हेतु परिवर्तनकेँ संस्थागत हुअ' देब'सँ पहिनहिं आलोचक बनि जाइत अछि। परिवर्तन प्रतिगमनक घेरामे फँसैत चलि जाइत छै। मध्यम वर्ग अपना अधैयर्ताक कारण समूचा परिवर्तनकेँ संकटग्रस्त बना दैत छै।

नाटकमे हरेक समस्याक कारक परिवर्तन दिश सङ्केत कएल जाइत छै ई नाटकक कथाक सहज विकासक्रम नइ छै। नाट्यकार अत्यन्त सजग रुपें उपकथाक माध्यमसँ मूल कथाक अङ्गक रुपमे एहन विषयकेँ दृश्याङ्कित करैत छथि। स्वभाविक छै जे एहन नाट्यअवस्थिति थोड़ेक अविश्सनीय बुझाइत छै। एकटा आर बसन्त सेहो एहन अवस्थासँ गुजरल अछि। नाटक

नायिकापर स्वभाविक छै जे बहूतोक नजरि हेतै। ओकर रुप आ यौवन बहूतोकेँ आकर्षित करैत हेतै। कियो स्वयं भोगक इच्छा रखैत हएत कियो ओहि भोग्याक मध्यमसँ आर्थिक उपार्जनक प्रयत्नमे हएत। एहनसन नाटकीय घटनाक्रममे एकटा एहन अवस्थाक निर्माण होइत छै जत' चोर, अपराधी आ कथित भलादमी नाटकक नायिकाकेँ बेचक' आकर्षक रकम उगाहीक निष्कर्षपर पहुँचैत अछि आ ताहि हेतु आवश्यक प्रयत्न सेहो प्रयोग करैत अछि।

नाटकक नायिका नाटकक प्रारम्भिसँ चरम यातना भोगिरहल अछि। नैहर, सासुर आ पुनः नैहरक दुखःपूर्ण यात्रामे ओहि पात्रप्रति दर्शक वा पाठकक साहानुभूति आर्जन करैत अछि। मुदा ओहि पात्रसँगे अप्रत्याशित घटना होइत छै। जे कि घटनाक्रमकेँ रहस्यमयी बनबैत छै। नायिकाक अपहरण आ बेचबाक प्रकरण आगू बढ़ैत छै। महिला बेचबिखनक विषय नेपालक पहाड़ी क्षेत्रक हेतु आम छै मुदा मिथिला क्षेत्रक हेतु ई अवस्था अत्यन्त अविश्वसनीय जकाँ लगै छै। नेपालमे राणा शासनक उदयसँगे ब्रीटिश शासकसँग ऐतिहासिक सम्वन्ध रहलै। भारतमे सिपाही विद्रोहकेँ दबएबाक लेल नेपालसँ सेना गेल रहै पश्चात नियमित रुपमे भारतीय सेनामे नेपालक गोर्खा रेजिमेन्टक रुपमे एखनो भर्ती कायम छै। तहिना नेपालक तात्कालीक शासक ब्रीटिश फौजक हेतु नेपालसँ यौनकर्मीक रुपमे लड़की भेजल जाइत छलै जे प्रथा पहाड़क खास क्षेत्रमे एखनो कायम छै मुदा मिथिला वा तराईक भूभागमे लड़की बेचबाक घटना प्रायः नइ देखाइत छै। एहि नाटकमे नायिकाकेँ बेचबाक सन्दर्भमे अरबक शेषकेँ हाथे बेचबाक बात उल्लेख छै जे कि नाट्यकारक अप्रत्याशित परिकल्पना जकाँ बुझाइत छै। तराईक भूभागसँ श्रम करबाक हेतु खाड़ी देशसभमे युवा त जाइत रहल अछि मुदा युवतीकेँ ल' जएबाक घटना खासे चर्चामे नइ छै। तखन प्रश्न उठै छै जे किएक नाट्यकार एहन परिकल्पना कएलनि। महिला ताहूमे कमजोर वर्गक महिलाक

सँग यौन शोषणक भयावह चित्रसभ त एहिठामक शोषक सामन्त वर्गद्वारा होइत रहलैए। मैथिली साहित्यमे एहन घटनाक प्रधानताक कतेको साहित्य छै। संभवतः एहिसँ भिन्न नाट्य अवस्थिति निर्माण करबाक लेल एकटा भिन्न घटना नाटकक हेतु आवश्यक बुझने होएताह। मुदा नाटक जाहि परिवेश आ घटनाक्रमकेँ ल' क' बुनल जा रहल छलै ताहिमे ई घटना विश्वासक क्षयीकरण दिस ल' जाइत छै।

जे होइक मुदा समस्याक आ सन्दर्भ कोनो समाजक बदलैत रहै छै। कोन कथा कालजयी अर्थात समकालीनताकेँ जोगाक' राखत आ कोन घटना एकटा कालखण्ड प्रतिनिधि रचना भ' क' रहि जाएत तकरो निर्धारण नाटकक विषय, संरचना, शिल्प निर्धारण करैत छै। एहि नाटकक जँ निष्कर्षपर पहुचल जाए त बात इएह छै जे लेखक अपना समयक इतिहासक आवाजकेँ रचनामे लबैत अछि। रचनाकारक अपन निजता सेहो ओहिमे रहितै छै मुदा ओहि कथ्यक गूँज अनुगुँज होइत छै जकरा लेखक अपना भाषामे रुपान्तरित करैत अछि। वस्तुतः लेखक एकटा व्यक्ति अछि मुदा ओ ओही समाजसँ कोनो ने कोनो रुपमे शैली ग्रहण करैत अछि। भ्रमर जी सेहो तात्कालीन समाज, संस्कृति आ राजनीतिसँ अपन चेतना आ विचारधाराक आधारपर कथ्य आ शैली ग्रहण कएलनि आ एकटा नाटकक सिर्जना कएलनि। जे नाटक चारि दसकक बादो विमर्शक हेतु आकर्षित करैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल

विनय भूषण

इजोतक आश जगबैत भ्रमरक गजल

साहित्यक कोनो विधक नव व्याकरणक निर्माणमे साहित्यकारक महत्वपूर्ण भूमिका रहैत अछि । समय, परिवेश आ स्थानसँ प्रत्येक रचनाकारक रचना बेस प्रभावित रहैत अछि । कविता, कथा, उपन्यास वा नाटकक स्वरूप पर कोनो कालखंडक प्रभाव पड़ब कोनो नव बात नहि । रचनाकारक रचना-प्रक्रियामे हुनका आगाँ ठाढ़ रहैत अछि विशाल पाठकगण । रचनाकार ई चाहैत अछि जे ओ जे बात कहऽ चाहैत अछि ओहि बातसँ पाठकगण बूझि सकय । पाठकगणसँ जे बात ओ कहय चाहैत अछि, ओहिमे सामाजिक सरोकार संगुंफित रहैत अछि । जखन रचनाकार अपन रचना-प्रक्रियासँ सामाजिक सरोकार सँ जोड़ैत अछि, तखन हुनक आँखिक आगू ठाढ़ रहैत

अछि सामाजिक स्वरूपक विशाल, ताना-बाना । ओ समाजमे होइत सकारात्मक परिवर्तनसँ अपन सहमति अभिव्यक्त करैत अछि, संगहि समाजक किछु नकारात्मक परम्परासँ ओ अपन असहमतिसँ अभिव्यक्त करैत अछि । रचनाकारक अन्तरक जे भाव होइत अछि, से रचनामे स्वतः अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि । अपन हृदयमे जनमैत अनेकानेक वैयक्तिक भावमे सार्वजनिक भाव भऽ जयबाक जे व्यग्रता रहैत अछि, यैह व्यग्रता कोनो साधरण लोकसँ विशिष्ट रचनाकार बना दैत अछि । मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार श्रीरामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक रचना प्रक्रियामे उक्त भाव-बोध सँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि । हम एकरा अपन दुर्भाग्य मानि रहल छी, जे हुनका द्वारा सृजित समस्त साहित्यिक कृतिसँ हम नहि पढ़ि सकलहुँ । पोथीक अनुपलब्ध्ता आ अपन जटिल जीवन-संघर्षसँ एकर कारण कहल जा सकैत अछि । मुदा, विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल हिनक अनेकानेक रचनासँ पढ़बाक सौभाग्य अवश्य प्राप्त होइत आबि रहल अछि । हुनक रचना सभमे मिथिलाक गौरवमय अतीतक भाव-विह्वल वर्णन, लोकक सुख-दुखक अभिव्यक्ति मनुकखताइक संरक्षणक कछमछी अलोपित होइत प्रेमसँ बचाऽ लेबाक छटपटाहटिसँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि । एखन हुनक गजल संग्रह 'अन्हरियाक चान' हमर आँखिक सोझँ ा अछि । एहि संग्रहक अध्ययन-मनन हमरा अभिभूत कऽ रहल अछि । 'गजल'सँ शिल्प व शास्त्रीय-विधन पर चर्चा करबासँ पहिने हुनक एकटा उक्तिसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि- 'हमरा गजल लिखबाक लेल कोनो सुध नहि रहए । स्वतः स्फूर्त लिखाइत रहल । हम शुरूएमे कहि दी जे हमर गजलसँ शास्त्रिाय तराजू पर तौलबाक काजो नहि हो जे हमरा नीक लागत । कारण मतला, रदीफ, काफियाक समन्वय जे जतेक भऽ सकल होे ेइ ओ स्वतः आवेगमे आएल शब्दक बन्दसँ संभव भऽ सकल अछि ।''

हिनक उक्त वक्तव्य आजुक 'गजल'क स्वरूप आ रचना-प्रक्रियासँ स्पष्ट करऽ मे पूर्ण समर्थ अछि। गजल पद्य-विद्या व काव्य-विधक एकटा विशिष्ट विध अछि । एहि मे छोट-छोट पाँतिक माध्यमसँ बहुत रास बातसँ अभिव्यक्त कयल जा सकैत अछि । एकटा गजल अनेकानेक कविताक संकलन होइत अछि । हिनक वक्तव्यक अनुसार आजुक गजलमे गजलक व्याकरणक न्यून्तम शर्तसँ सम्मिलित कयल जा सकैत अछि । 'न्यूनतम शर्तसँ हमर अभिप्राय ई अछि जे गजल-रचनाक क्रममे भावसँ सुरक्षित रखबाक लेल मात्राक गणना आवश्यक नहि अछि । हुनक शब्दमे 'बहरक व्याकरणमे हम कहियो नहिगेलहुँआनहियेवर्णसँगनिकऽ शेरमे बैसएलहुँ' आइ जाहि तरहक गजल लिखा रहल अछि ओहि गजल सभसँ हिनक उक्त वक्तव्यक कसौटी पर कसल जा सकैत अछि ।

जे-से हमरा हिनक गजलमे अभिव्यक्त भाव आ विचारसँ अभिव्यक्त करब हमर मुख्य उद्देश्य अछि । हिनक एहि संग्रहमे भाव आ विचारक जे विविधता अछि से चमत्कृत करैत अछि । हिनक गजलमे शाश्वत प्रेम आ मनुक्खक जीवनक सुख-दुख नीक जकाँ शब्दब(भेल अछि । मिथिलाक संस्कृतिक प्रति हिनक अपार प्रेमसँ बहुत रास गजल सभमे अनुभव कयल जा सकैत अछि । विलुप्त होइत मनुक्खताइसँ हिनक असहमति सेहो अनेकानेक गजलक मुख्य विषय बनि पाओल अछि । सभ्यताक विकासक संग-संग लोकक जीवन-यापनक स्वरूप आ जीवनशैलीमे जाहि तरहे ँ आपकताक क्षरण भेल अछि ताहिसँ गजलकार बेस दुखी छथि । हिनक गजलमे जे मिथिलाक गौरवमय अतीत आ मिथिलाक गामक प्रति अनुराग अभिव्यक्त भेल अछि, तकरा एहि पाँतीमे बूझल जा सकैत अछि-

माटि अइ धरतीफेर लगा अपन माथसँ

मोक्ष भेटय जे इच्छित अपन गाम थिक ।

जाहि धरती केर कोरामे सीता पलए

अन्नपूर्णा हँसथि से अपन गाम थिक ।

जनक आ जानकीक चर्चा एक दिस मिथिलाक गौरवमय अतीत दिस संकेत करैत अछि । हिनका अपन गाममे मिथिलाक दर्शन होइत अछि । इहो कहल जा सकैत अछि । जे सम्पूर्ण मिथिला हिनका लेल अपन गाम अछि । एहि गजलमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक सुगंध तँ अछिये संगहि मातृभूमि-प्रेमक प्रति समर्पणक भावसँ सेहो देखल जा सकैत अछि ।

एहि संग्रहमे गजलकार प्रेमक स्वरूप आ ओकर महत्वसँ रेखांकित करबामे पूर्णतः सफल भेल छथि । प्रेमसँ स्पष्ट करबाक लेल अनेकानेक पाँतीमे बिम्ब आ उपमाक उपयोग कयल गेल अछि । ई बात सत्य अछि जे आजुक वैश्वीकरणक युगमे मनुक्खक जीवनक अनेकानेक अनिवार्य तत्व सभक ह्रास भेल अछि । ओहि तत्वमे प्रेम एकटा एहन तत्व अछि जे लोकसँ लोकसँ जोड़ैत अछि । भ्रमरजीसँ बुझाइत अछि, विच्छिन्नताक एहि विकट परिस्थिति सामाजिक सौहार्दिक सरंक्षणक लेल प्रेमक संरक्षण आवश्यक अछि । ओ कहैत छथि-

आबियौ ने छातीमे ठाम बड़ बाँकी छै ।

स्वागत मे रागक सचार लेनय ठाढ़ छी ।

गजलकार प्रेमक अभावमे स्वयंसँ बहुत बेसी असहज महसूस कऽ रहल छथि । प्रेममे विश्वासक बहुत बेसी महत्व अछि । हुनका बुझाइत छन्हि जे विश्वासक टांग टूटलाक बाद औनाइत जखन किओ ककरोसँ प्रेम करैत अछि, ओहिमे कोनो तरहक संदेहक स्थान नहि होइत अछि । हुनका बुझाइत छन्हि जे कोनो कठिन समयमे ओ सदिखन हुनकर मदति करबाक लेल सहर्ष तैयार रहताह। प्रेममे भाग्यसँ बेसी आपसी सौहार्दक महत्व होइत अछि । जँ कोनो क्षण प्रेमसँ असफल होइत देखल जाइत अछि, ओतय निश्चित रूपसँ कोनो ने कोनो धेखाक संभावना बनैत अछि । ई धेखा लोकसँ बेचैन कऽ दैत अछि । एहि परिस्थतिमे करुणाक धर निसृत होमऽ लगैत अछि । गजलक एहि पाँतीमे एहि भावसँ देखल जा सकैत अछि-

विश्वासे जँ टूटि गेल तँ आहत करेज ल

कत्त-कत्त रने-बने अबगाहब ई जिनगी ।

जखन एक बेर किओ प्रेम कऽ लैत अछि, तखन ओहि प्रेममे किछु बाध्क नहि भऽ सकैत अछि । जे सुच्चा प्रेम करैत अछि, ओ ओहि प्रेममे पूर्णतः एकाकार भऽ जाइत अछि । जखन मोन प्रेमक वीशभूत भऽ जाइत अछि तखन भाव आ शब्द गजलक स्वरूप लऽ लैत अछि । प्रेम शाश्वत होइत अछि । 'भ्रमर' जीक शब्दमे-

अहाँ आगाँ मे छी तन्तु जुड़ल रहैए

आह ! परोछो भेने ई क्रम टुटैए नहि

एहि ठाम एकटा आओर शेरसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि-

आब तँ अपनोसँ ऐनामे चिन्हब कठिन भेल,

आन पर नजरि टिकए की खास अछि प्रिय ।

प्रेमसँ अभिव्यक्त करबाक लेल जाहि भाषा, शिल्प आ शब्दक चयन भ्रमर जी कयने छथि, से अचक्के पाठकसँ अचंभित कऽ सकैत अछि । लगैत अछि जेना प्रेम भ्रमरजीक हृदयक अभिन्न अंग भऽ गेल अछि सैह भाव हुनका अपन भाषा, संस्कृति, मैथिल आ आन दलित, पीड़ित आ उत्पीड़ित लोकक प्रति प्रेम करबाक लेल प्रेरित करैत छन्हि । हुनक गजलमे प्रयुक्त बोध्गाम्य बिम्ब आ भावक संयोजनसँ बुझबाक लेल किछु पाँतीसँ उद्धृत कयल जा सकैत अछि । जेना-

समुद्रक ढाहीमे उबडुब करैत मोन

बोझ असगरिये छाती पर उघलियै कोना ।

पे्रमक समुद्रमे जखन-भावक ज्वार-भाटा आबैत अछि तँ मोन उद्वेलित भऽ जाइत अछि। 'छाती' पर 'बोझ' एकटा अद्भूत बिम्ब अछि। सिनेह गछपक्कु आम जँका होइत अछि । जहिना डमरस पाकल आम रसक वृद्धि होयबाक कारणे फाटि जाइत अछि तहिना प्रेमक पाकल आम फाटि गेल अछि आ ओहिसँ सिनेहक रस टभकि रहल अछि । एहि बिम्बमे उपमा अलंकारक अनुपम प्रयोगसँ अनुभव कयल जा सकैत अछि। हुनके शब्दमे-

गछपक्कु आम जकाँ टभकै सिनेह जकर

जोड़ल नहि जा सकय, एहन बनल फाट ओ ।

प्रेम तँ सार्थक जीवनक महत्वपूर्ण तत्व अछिये, संगहि जीवनक अन्यान्य तत्व सभसँ सेहो 'अन्हरियाक चान' गजल संग्रहमे सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कएल गेल अछि। हुनक विचार मे जिनगीक तरंगक गायन आ हृदयक भावक अभिव्यक्ति गजल थिक । प्रेम आ सिनेहक गीत जिनगीक महत्वपूर्ण गीते थिक । लोक चुपचाप समयसँ गुनैत हो वा अपन सुख-दुखसँ अभिव्यक्त करैत हो एहि अभिव्यक्तिमे जिनगीक सार सन्निहित अछि । सुख-दुख जीवनक अनिवार्य अंग अछि, तँ लोकसँ एहिसँ क्षुब्ध् नहि होयबाक चाही । हुनके शब्दमे-

नरमे गरम केर खेल चलैत रहत सदिखन

पचएबाक सामथ्र्ये थिक तरंग जिनगी केर ।

इमान मनुक्खताइक महत्वपूर्ण तत्व अछि । इएह इमान लोकसँ मनुक्ख बनबैत अछि । ई बिडम्बना अछि जे आइ लोक नैतिक मूल्य सँ बिसरि रहल अछि । स्वार्थ आ भोगक लिप्साक कारणे ँ लोकजीवन समस्त नैतिक मूल्यसँ तिलांजलि दऽ रहल अछि । आपसी सौहाद्र्र नष्ट भऽ रहल अछि । अविश्वास, धेखा आ लोकक स्वकेन्द्रित रहि जएबाक मानसिकतासँ भ्रमर जी बेस परेशान भऽ जाइत छथि । हुनका बुझाइत छन्हि जे सर-सम्बन्ध्ी आ हितमीतसँ जखन लोक अलग भऽ जाइत अछि तखन सत्य आ इमान सन नैतिक मूल्य लोकसँ जीवन जीवाक संबल दैत अछि । एक गोट गजलमे नैतिक मूल्यसँ सम्बन्धित उक्त भाव बहुत नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि-

बाप माय हरदम नहि, इमान रहैछ संग मे

इमानदारीमे बट्टा लागल मीत ई नहि चाही ।

एकटा साहित्यकर्मीसँ अपन दायित्वक बोध रहैत अछि । भ्रमरजीसँ पता छन्हि जे लोकक मोनमे अनेकानेक भटकाव रहैत अछि । समय जहिना-जहिना करवट बदलैत अछि, तहिना-तहिना लोक अपन गौरवमय अतीतसँ बिसरऽ लगैत अछि । धेखा आ अविश्वासक अन्हार मे लोक औनाय लगैत अछि । जीवन-संघर्षसँ बाट पर चलैत लोकसँ किछु ने किछु गलती जरूरे भऽ

जाइत अछि । एहि स्थितिमे लोकसँ बेसी परेशान नहि होयबाक चाही । अत्यंत आत्मविश्वासक संग गजलकार कहैत छथि-

सुतल अतीतसँ पुनि जगायब हम ।

भोतिआयल बटोही ठाम पर लागब हम ।

संघर्ष जीवनक सत्य अछि । जे प्रतिब(लोक छथि से एहि संघर्षसँ कखनहुँ विचलित नहि होइत छथि । कवि कहैत छथि जे जँ इजोत नहि भेटैत अछि, तखन अन्हारेमे इजोतक खोजक लेल प्रयास करबाक चाही । भोगलिप्सासँ बहुत-बहुत दूर रहि संघर्षशील लोकसँ महल-अटारी, चानीक थारी, गद्दा, कृत्रिम इजोतक भ्रम व अहंकार आकर्षित नहि करैत अछि । अपितु श्रम, फक्कर जीवन, टूटल एकचारी, रातिक अन्हार, अलमुनियाक पचकल-फूटल थारी आ स्वाभिमानसँ अंग्रेजि कऽ समाज आ समाजक, लोकक जीवनसँ सुन्दर बनयबाक लेल संघर्षरत रहैत अछि । एहि भावसँ एहि पाँतीमे देखल जा सकैत अछि-

ध्◌ुव सत्य थिक जे मंजिल पयबे अभिष्ट सदिखन

तँ सहज सुखद एकपेरियाक असबारी छनित के हमर ।

वर्तमानमे चारूकात संदेह आ अविश्वासक सामाज्य स्थापित भऽ गेल अछि । स्वार्थ मनुक्खसँ धेखा करबाक प्रवृतिसँ स्वीकार करबाक लेल बाध्य करैत

अछि । मुँह पर प्रशंसा करब आ परोछ भेला उत्तर ओहि लोकक खिधं्ांस करबाक प्रवृत्ति मनुष्यक हृदयमे जगह बना लेने अछि । सामाजिक जीवन जीअऽ बला लोक संघर्षक कारण अपन सभ किछु त्यागि दैत अछि । मुदा, कुलोकक कुदृष्टि भ्रमरजीसँ दुखित करैत अछि । जेना-

हम चली जतऽ जाहि बाटपर नित दिन

काँटक इत्र छीटय हमर अपन ।

समाजक श्रमजीवी लोकक जीवनमे दुखक अंबार रहैत अछि । हुनक जीवन-स्तरसँ सुधरबाक लेल प्रत्येक समाजसेवी आ बु(िजीवी प्रयासरत रहैत छथि । क्षुद्र सामाजिक कार्यकर्ता आ बु(िजीवी कविसँ क्षुब्ध् कऽ दैत अछि । गरीबक मसीहाक उपाध्सिँ विभूषित लोक सेवाक नाटक करैत अछि । यैह कारण अछि जे एखनो धरि समाजक गरीब लोक आओर बेसी गरीब भेल जा रहल अछि । धनिक आओर बेसी धनिक भेल जा रहल अछि । सत्य ई अछि जे एहि धरती पर जे लोक सुख ओ ऐश्वर्यक भोग करैत अछि, तकर आधर यैह श्रमजीवी मजूर अछि । कविक कलम प्रेरक मुद्रामे कहि उठैत अछि-

मजुरक मरखाह गरीबीसँ नाथि कऽ तँ देखू

अपन भरल बरबारी अन्न कने बाँटि कऽ तऽ देखू ।

इजोरियाक चान गजल संग्रहक प्रत्येक गजलक एक-एक पाँति उद्धृरणक योग्य अछि। एहि संग्रहक विभिन्न गजलमे मनुक्खक जीवनक सुख-दुख, बदलैत समाज, महत्व, दया-प्रेम-करुणाक भाव समाजक सर्वहारा वर्गक प्रति सहानुभूति, मिथिलाक गौरवमय अतीत, सांस्कृतिक अरिस्मताक संरक्षण आ अन्यान्य जीवन-मूल्य आ सांस्कृतिक चेतनाक संरक्षणक भावसँ अत्यंत सहज आ कलात्मक ढंग आभव्यक्त कयल गेल अछि। आइ जखन चारूकात घृणा, द्वेष, भ्रष्टाचार, धेखा, झूठ-फरेब, स्वार्थ आ अन्यायक अन्हारक साम्राज्य पसरल अछि, तखन भ्रमरजीक सार्थक गजलमे आशाक चानक उपस्थितिक अनुभव कयल जा सकैत अछि । ई समीक्षा आओर नमहर भऽ सकैत छल, मुदा समीक्षा-आलेखक सीमासँ देखैत एखन एहि समीक्षासँ विराम दऽ रहल छी । अन्तमे अपन अतृप्त मोनसँ संतोष देबाक लेल एहि पाँतीसँ उद्धृत करब आवश्यक बुझैत छी-

अन्हरियाक चान जकाँ लुक झुक करैत मन

छिटकल आभाक संग रभसैत उड़ैत मन ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

कलंकित चान

"जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान" द्वारा बर्ख 2013 (दिस.मे) श्री राम भरोस कापड़ि "भ्रमर"जीक कथित गजल संग्रह- "अन्हरियाक चान" प्रकाशित भेल अछि। पोथीक भूमिकामे भ्रमरजी स्वीकार करै छथि जे गजलक व्याकरणपर ओ गजल नै लिखने छथि संगे-संग ओ समीक्षककेँ सेहो हिदायत

देने छथिन्ह जे ओ व्याकरणक तराजूपर ऐ गजल सभकेँ नै तौलतथि। एकर मने ई भेल जे भ्रमरजी अपने मानै छथि जे हुनक गजल "अजाद गजल " आ समीक्षक तँ अजाद गजलक समीक्षा करबाक लेल स्वतंत्र छथि। संगे-संग भ्रमरजी भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल कोनो प्रतिबंध नै लगेने छथि तँए समीक्षक भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल सेहो स्वतंत्र छथि।ओना भ्रमरजी गजलमे व्याकरणक मजूगत स्थितिसँ परिचित छथि आ तँए ओ अपन सीमाकेँ देखार केलाह जे की स्वागत योग्य गप्प अछि। तँ चलू शुरू करी भ्रमरजीक अजाद गजलक समीक्षा आ तकर बाद हिनकर भूमिकापर। अजाद गजलक कान्सेप्ट---

जखन कोनो भाषामे कोनो खास विधाकेँ करीब 500-600 बर्ख भ' जाइत छै तखन ओइमे परिवर्तन जरूरी भ' जाइत छै। उर्दू गजलकेँ (जँ भारतीय फारसी गजलकेँ जोड़ि देखी तँ) करीब 500-600 बर्ख भेल छै तँए 1960-70केँ दशकमे उर्दूमे अजाद गजल आएल। एकर मतलब कहल गेलै जे गजलमे बहर कोनो जरूरी नै हँ काफिया भेनाइ आवश्यक अछि (बिना रदीफकेँ सेहो गजल होइ छै से धेआन राखब जरूरी)। ओनाहुतो बिना काफियाकेँ गजल नै होइत छै से सभ जनै छथि। जँ ऐ अधारपर देखी तँ भ्रमरजी बहुत रास कथित गजल फेल भ' जाइत अछि मने भ्रमरजीक कथित अजाद गजल सेहो अजाद गजल कहबा योग्य नै अछि। किछु उदाहरण देखू (पोथीक पहिल कथित अजाद गजलक पहिल दू पाँति एना अछि)---

ई जनक केर नगरी अपन गाम थिक

ई मिथिला बैदेहीक अपन गाम थिक

मने काफिया गायब। जँ काफिया गाएब तँ गजल नाम्ना विधे गाएब। खएर एहन-एहन दोष ऐ पोथीक गजल संख्या - 4,5,6,9,12,14,20,22,23,24,28,29,32,33,34,35,36,39,41 मे भेटत। ओना आन गजलमे किछु एहन तँ छै जकरा काफिया नै बल्कि तुकांत कहब बेसी समीचीन। ईहो मोन राखब जरूरी जे ऐ पोथीमे कुल 44टा कथित गजल अछि।

जँ हम नेपालीय परिसरक हिसाबसँ ऐ पोथीकेँ देखी तँ हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नै जे राजेन्द्र विमल जीक गजलकेँ अजाद गजलक श्रेणीमे तँ राखल जा सकैए मुदा भ्रमरजीक गजल तँ अजादो गजलमे स्थान पेबाक योग्य नै अछि। सोंझ तरहें कही तँ भ्रमरजीक ऐ पोथीमे संकलित सभ रचना आन विधा तँ भ' सकैए मुदा गजल, कथित गजल वा अजाद गजल केखनो नै भ' सकैए।

मुदा जत' भ्रमरजी अपन गजल महँक दोष स्वीकार करबाक हिम्मति राखै छथि ओतए विमलजी अपन गलतीकेँ स्वीकार करबासँ हिचकै छथि।ई चारित्रिक अंतर दूनू गोटमे छनि से जिनगी भरि रहतनि तकर कोनो गारंटी हमरा लग नै अछि। तँ आउ आब पोथीक भूमिकापर (चूँकि व्याकरणपर हमरा नै जेबाक अछि तँ देखू भ्रमरजीक किछु बिंदु)--

1) भ्रमरजी अपन भूमिकामे लिखै छथि जे " हमरा एखनो धरि पना नै अछि, हम कतेक गजल लिखने छी। साढ़े चारि दशकक साहित्यिक यात्रामे कतेको गजल लिखाएल हएत...." भ्रमरजीक उपरोक्त कथन मात्र दंभ भरबाक लेल अछि। मनुख मात्र सभ चीजक हिसाब-किताब रखैए। भ्रमरजी

सेहो रखने हेता मुदा लगा देलखिन अज्ञात संख्याकेँ जोर जे हमरा अपन गजल संख्या तँ पते नै अछि मने एते लिखलहुँ जे.....

2) भ्रमर जी फेर ओहीमे लिखै छथि जे " एहि बीच हमरा मोनमे आएल जे गजल जे काव्यविधामे बेछप रूपें रहेत अछि....." मुदा ई काव्य विधा गजल भऽ सकलनि।

ऐ पोथीमे सभसँ आपत्तिजनक बात ई अछि जे प्रस्तुत पोथीमे "बाल-गजल" तँ संकलित अछि मुदा बाल गजलक संदर्भमे कोनो चर्चा नै बेटैत अछि। ज्ञात हो कि मात्र 2012सँ मैथिली बाल गजल शब्दावली प्रचलित अछि। अनचिन्हार आखर ओ विदेहक संयुक्त प्रयासक प्रतिफलन अछि ई बाल गजल मुदा भ्रमर जी बाल गजलक संबंधमे कोनो चरचा नै केने छथि। जेना चरचा केलासँ छोट भ' जेता तेना। ओनाहुतो हम ऐ प्रसंगकेँ अनचिन्हार आखर ओ विदेहक लोकप्रियतासँ जोड़ि क' देखैत छी। ओना भ्रमरजी प्रस्तुत पोथीक बाल गजलकेँ तेना सेट केने छथि भूमिकाक संदर्भमे जेना बुझाइत हो जे ओ मिथिला-मिहिरेक जमानासँ बाल गजल लिखैत होथि। इतिहासकेँ भ्रमित करैत ई पोथी कतेक सफल हएत से कहब मोश्किल।

(ई आलेख हमर शब्द-अर्थ-शक्ति नामक पोथीमे संकलित अछि जकरा हम मात्र एहि लेल देलहुँ जे पाठक समग्रतामे भ्रमरजीक रचनाकेँ बूझि सकथि-लेखक)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरुप:रामभरोस कापड़ि भ्रमर

विनीत ठाकुर

बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुधर स्वरुप : रामभरोस कापड़ि भ्रमर

एखन मैथिली भाषाकेँ मानक स्वरुपक सन्दर्भमे नीक बहन छिडिआएल छैक। एक दिश ई मत आबि रहल अछि जे मानक स्वरुपक नामपर मैथिलीकेँ नब्बे प्रतिशत बजनिहारसँ दुर कएल जा रहल छैक आ नेपालमे मगही एवं बज्जिका भाषाक प्रवेश आ विस्तार तकरे परिणाम थिक। एहिसँ लोक कटि रहल अछि। ठेठिया, देहाती कहैत कहैत आब मगही आ बज्जिकामे फँटाए लागल अछि।

दोसर मत छैक लोक जे बजैत अछि सएह मैथिली थिक। भाषा वैज्ञानिक लोकनि तकरा स्थापित करथु। एहिसँ नब्बे प्रतिशतक भाषा वितृष्णा सेहो कम हएतैक आ अनपेक्षित रुपें मगही आ बज्जिकाक प्रभाव विस्तारकेँ रोकल जा सकैत अछि।

आ एहि दुनू मतक विचमे विगत पचास वर्षसँ मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक सेवामे लागल एकटा एहन नाम उभरि क आएल अछि जे सभ विवादकेँ कात करैत मैथिलीकेँ एकटा विराटफलक पर समावेशी भाषाक रुपमे स्थापित करबाक निरन्तर अभियानमे लागल अछि: रामभरोस कापड़ि भ्रमर।

नेपालीय मैथिली साहित्यक पुरोधा व्यक्तित्व भ्रमर चौसठि वसन्त पार क चुकल छथि। बारह वर्षक उमेरमे मिथिला मिहिरक नेनाभुटकाक चौपाडिमे इमानदार बालक कथाक प्रकाशनक संग साहित्यमे पदार्पण कएनिहार भ्रमर ब्राह्मण, कायस्तक भाषाक अनावश्यक विवादकेँ समाप्त करैत मैथिली वास्तविक रुपें मिथिलामे बजनिहार सभक भाषा थिक, एकर उन्नति, विकासक जिम्मेवारी सभक छैक तकर स्थापित उदाहरण बनल रहलाह अछि।

एखन धरि तीन दर्जनसँ उपर मौलिक, अनुवादित, सम्पादित पुस्तकक रचना क चुकल छथि। अर्चना (२०३० साल), अंजुली (नेपाली मासिक २०४२), आँजुर (२०४५ साल) आ गामघर साप्ताहिक (२०३९ साल)क सम्पादन प्रकाशन क पत्रकारिता क्षेत्रमे सेहो अपन वर्चश्व स्थापित क चुकल छथि। साहित्य आ पत्रकारिताक अद्भूत समागम हुनक व्यक्तित्वमे आकंठ लब लब भरल अछि आ दुनू क्षेत्रमे हुनक व्यक्तित्व स्थापित भ चुकल अछि। बरु लोक जखन भाषा, साहित्य आ पत्रकारिताक गप करैत अछि त उदाहरणक रुपमे भ्रमरजी आगाँमे ठाढ क देल जाइत छथि।

हिनक वचपन जन्म स्थान बघचौरामे वितलन्हि। २००८ साल श्रावणमे पिता स्व. रामगुलाम कापरी आ माता स्व. दुखनी देवीक दोसर सन्तानक रुपमे हिनक जन्म भेलनि। धन, वीत्तमे कमि नहि छलनि, मुदा जाहि वर्ग आ समाजसं आबद्ध छलाह, पढब लिखब कठिन मानल जाइत छलैक। तथापि

पिता स्व. रामगुलाम कापरी ओइ परोपट्टामे पंच कैँ रुपमे सम्मानित छलाह। कोनो झगडा नहि फरिछाइ त हुनके बजा लेल जाइत छलनि आ ओ समाधन करैत रहलाह। पढनाइक नाम पर ताहि समयक देहाती पढाइ विटगरहा आदिमे निपुण छलाह। रामायण नियमित पढथि, खेत, खरिहान आ जन बनक व्यवस्थापनमे कुशल छलाह। परोपट्टामे धान आ रुपैआक लगानी चलैत छलनि। स्वभाविक छैक नीक इज्जत छलनि।

से अपन धीआपूताकेँ पढएबालेल ओ उत्सुक रहथि। मुदा दुनू बालक सुकुमार कापड़ि (जेठभाय) आ भरोसी कापड़ि (तहिया इएह नाम रहनि) चटिया बनबाले तैयारे ने होथि। तखन घर पर बहादुर नामक एकटा पहाडी नोकर रहैक जे कान्हपर लादि दुनू भाइकेँ गुरुजीक चटिसारमे ल जाइनि आ तखन निचाँ माटिपर, तकरा बाद पाटी पर अ, आ, इ, ई सँ विटगरहा धरि सिखौन रहनि। चटिसारसँ नीकलि बेलही स्कूलमे तीन वर्ग धरि पढलाह आ तखन जनकपुरक सरस्वती मा.वि.मे ४ कक्षामे नाम लिखाओल गेलनि। ओत्तहिसँ एस.एल.सी.आ जनकपुरक रा.रा.ब. कैम्पससँ मैथिलीमे एम.ए.क पढाइ पुरा कएलनि।

एहि विच रा.रा.ब. क्याम्पसमे हिन्दी, मैथिली पढएबाक हेतु भारतसँ प्रो. धीरेन्द्र आबि गेल रहथि आ संयोगसँ ओ हिनके मकानकेँ बगलमे रहैत छलाह। सम्पर्क भेलनि। बच्चेसँ ई पत्र पत्रिका पढैत छलाह बालक, पराग, चन्दामामा, होइत होइत धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका आ मिथिला मिहिर। लिखबाक रुचि रहनि, भाषा निश्चय हिन्दी रहनि।

से एक दिन एकटा कथा लिखलनि इमान्दार वालक, हिन्दी मे। प्रो. धीरेन्द्र देखलकनि आ एउटा नमहर शिक्षा देलकनि- बाउ हम हिन्दी आ मैथिली दुनू

विषयमे एम. ए. छी। मुदा हिन्दीकेँ पार नहि पाबि सकलहुँ अछि। अहाँक मातृभाषा मैथिली अछि, ताहीमे लिखू।

भ्रमरजी संस्मरण सुनबैत भावुक होइत कहैते छथि -हमरा नहि बुझना गेल छल मैथिली कोनो भाषा होइछ आ जे हम सभ बजैत छी। हम कहने रहियनि- सर हम केना लिखबै मैथिली। ओ कहलनि- जरुर लिखबै। अहाँ जे बजै छी सएह लिखू हम देखा देब कोना शुद्ध लिखल जाइछ।

तखन इमान्दार वालकक मैथिली अनुवाद कएलनि आ तकरा लाल कलमसँ प्रो. धीरेन्द्र जे रंगलनि से एक्को पंक्ति सदर नहि रहल। मुदा सएह रंगलहा करेक्सन हुनका मैथिली प्रति चुनैती बझएलनि जे हुनक वालमनपर कठोर प्रभाव छोडलक आ ओ तकरा बाद पाछा नहि देखलनि। मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका मिहिरक नियमित लेखक बनलाह आ मैथिलीमे निकलैत कोनो पत्रिकामे हिनक रचना आदरसँ छापल जाए लागल। डा.मेघन प्रसाद अपन शोधग्रन्थ मैथिली कथा कोष(१९९६)मे सभसं बेसी कथा लिखनिहार(५८कथा)मे हुनको नाम सामेल कएने छन्हि।

अपन साहित्यिक जीवनक एहि पचास वर्षमे ओ सम्मानो कम नहि पौलनि। नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानसँ पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार (२०५३ साल)मे रु. ५०,००० टकाक संग भेटलनि। विद्यापति सेवा संस्थान (१९९६ ई.), मिथिाल विभूति सम्मान देलकनि तँ अन्तर्राष्टीय मैथिली सम्मेलन, मुम्वईमे मिथिला रत्नसँ सम्मानित कएल गेलाह। रायपुरमे मिथिला विभूति सम्मान, पटनाक चेतना समितिसँ यात्री चेतना पुरस्कार, शेखर प्रकाशनसँ शेखर सम्मान हिनक उपलब्धि रहलनि अछि।

नेपालमे विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार (२ लाख टकाक संग) राष्टपति हाथे भेटलनि तँ नेवारी साहित्यक दू गोट महत्वपूर्ण संस्था नेपाल भाषा परिष्द

आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा प्रतिष्ठान क्रमशः केशवलाल वाख सिरपा पुरस्कार आ गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कारसँ सम्मानित कएलकनि जे कोनो मैथिली भाषी साहित्यकारक हेतु पहिल छल। ई सभ पुरस्कार, सम्मान हिनक कर्मठता, संघर्ष ओ साहित्य साधनामे निरन्तर प्रतिबद्धतापूर्वक समर्पणक कारणें भेटलनि। किछुए दिन पूर्व नेपालक श्रेष्ठ समाचारपत्र गोरखापत्र हिनक अन्तरवार्ता छपने छल तँ एकरे प्रकाशन युवामंच हिनक वचपनक प्रसंगकेँ विवरण सचित्र प्रकाशन कएलक। ई कोनो मैथिलक हेतु गौरवक विषय भ सकैछ।

अपन एकाकी लेखन यात्राक कारणें बाधा, व्यवधान नहि अएलनि से बात नहि। स्वाभिमानी स्वभावक कारणें ललो - चप्पोमे नहि लागि पढब आ लिखब धरिमे सिमित रहने किछु लोककेँ अखरैत रहलनि हिनक स्वभाव आ तएँ समय समय पर भाडाक दूत सभकेँ ठाढ क हिनक मान मर्दनक जोगाड भिडाओल जाइत रहल मुदा हिनक काजे एतेक विस्तृत आ गहिंर भ गेल छैक जे ओ सभ विपरीत विचारक लोक उडन छू भ जाइत रहल अछि आ भ्रमरजी अपन स्थानपर अडिगे नहि रहैत छथि बरु कद काठीक हिसाबेँ आर विस्तृत क्षेत्रमे स्थापित भ जाइत छथि।

कहबाक अर्थ विरोध आ गोलैसीक घेरामे पाडबाक काज कएनिहार तखन देखिते रहि जाइत अछि जखन नेपाल सरकार हिनका जनकपुरसँ उठा क एक्केबेर नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशनक गरिमामय पद अध्यक्षक आसन पर आसीन क दैत छनि। कोनो मैथिल, कोनो मधेशी पहिल बेर एहि पद पर मनोनित होइत छथि। ततबे नहि ओ अध्यक्ष पद पर रहिते नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे परिषद सदस्य नियुक्ति क देल जाइत छथि नेपालक प्रधानमन्त्री द्धारा। ई दुनू पद कोनो भाषा प्रेमीक हेतु, शौभाग्यक पद थिकै, जाहिपर भ्रमर छः वर्षसँ उपर आसीन भ चुकलाह अछि। आ दुनू ठाम

ओ मैथिलीक काज कएलनि। साझामे मैथिली भाषाक पुस्तक प्रकाशनक काज शुरु कएलनि, प्रज्ञामे आँगन पत्रिकाक शुरुआतक संग मैथिली लोक संस्कृतिसँ सम्बद्ध अनेकों महत्वपूर्ण गोष्ठी आ पुस्तक प्रकाशन कयलनि। जे सलहेस, दीनाभद्री, जट जटिनक रुपमे चर्चित प्रकाशन अछि। साझा प्रकाशनसँ वालकथा संग्रह बगियाक गाछ सँ मैथिली प्रकाशन शुरु भेल जे हिनके एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक, हिनकेँ सम्पादनमे विद्यापति आ नेपाल ग्रन्थक प्रकाशन भेल। तदनुरुप नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, भगजोगनी, पैसा आदि मैथिली रचनासभ आएल।

भ्रमर जी निरन्तर सधानारत् छथि। पत्रकारिता करैत छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक अतिरिक्त एकटा दैनिक समाचारपत्र जनकपुर एक्सप्रेस डेढ दशकसं नेपालीमे सेहो निकालैत छथि। अपन पत्र पत्रिकाक हेतु निरन्तर लेखनक काज जारी रखितो वाहिरी लेखनक हेतु आएल आग्रहकेँ प्राथमिकताक संग पुरा करबाक हेतु निरन्तर लेखनमे जूटल रहैत छथि। ओ मैथिली पत्रपत्रिका भ सकैछ, ओ काठमाण्डूक नेपाली पत्रपत्रिका भ सकैछ, तहिना काठमाण्डूसँ प्रकाशित होइत द पब्लिक मासिक हिन्दीक पत्रिका भ सकैछ। हुनक लेखनी अविरल, चलैत रहैत अछि।

इएह अटुट लेखनक प्रभाव छैक जे तीन दर्जन पोथी द मैथिलीक भण्डारकेँ भरलन्हि अछि। आ से विभिन्न विधामे। जे खगता देखलनि, ताहीमे भीडि गेलाह। उपन्यासक खगता रहैक त मधेश आन्दोलनकेँ आधारबना घरमुँहा मौलिक उपन्यास लिखलनि, जकरा हालेमे पचास हजार टकाक गंकी धुस्वां बसुन्धरा पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेल। लगभग तैतालिस वर्ष पूर्व नेपालक पहिल आधुनिक कविताक संग्रह बन्न कोठरी : औनाइत धुआँ (२०२९ साल) प्रकाशित कएलनि। तकरावाद कविता, गीत, गजल आदिक आनो संंग्रह समयक अन्तराल संग अवैत गेल- मोमक पघलैत अधर, (गीत

गजल), अप्पन अनचिन्हार (१९९० ई.), अन्हरियाक चान (गजल, २०१३ ई.) प्रकाशित भेल। विहारक मैथिली अकादमी हिनक पहिल कथा संग्रह तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (१९८४ ई.) प्रकाशित कएलक जे कोनो नेपालीय मैथिली साहित्यकारक पहिल संग्रह छल। दोसर कथा संग्रह हुगली उपर बहैत गंगा (२०६५ साल) आएल। तेसर कथासंग्रह एण्टी भाइरस २०७६मे आएल।नाटकमे हिनक अपन फूट स्थान छन्हि। कतेको नाटक मंचित भेल, प्रशंसित भेल। रानी चन्द्रावती प्रारंभिक नाटक अछि तँ एकटा आओर वसन्त अत्यन्त चर्चित नाटक रहल जे वैदेही दरभंगाक एकटा पुरे अंकमे छपल १०९४ ई. मे। महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (२०५४ साल), भैया अएलै अपन सोराज (२०६७ साल) आएल।

किछु सोधपरक पुस्तक सेहो अछि- राजकमलक कथा साहित्यमे नारी चरित्रक अध्ययन। ठेकान पर (विचार संकलन), विविधात्मक सामग्रीक संग समय सन्दर्भ, विदेश यात्रापर चीन यात्राक प्रथम पुस्तक लिखलनि चीन जे हम देखल (२०१४ ई.) सन सन विविध विषयक पोथी प्रकाशन क वहुतो नव नव तथ्यसँ अवगत करौलनि। साक्षात्कार संग्रह अहाँ जे कहलहुँ अनलाक बाद भ्रमरजी वहुतो मैथिली सेवकके एकठाम राखि हुनक चिंतन विचारसँ मैथिली पाठक सभकेँ अवगत करौलखिन्ह।

हिनक अन्य पुस्तक छन्हि मैथिली लोक नृत्य, भाव भंगिमा एवं स्वरुप (२०६१ साल), मैथिली पद्य संग्रह (२०५१), त्रिशूली (मथुरानन्द चौधरी माथुर (२०४९), नेपालक मैथिली पत्रिकारिता (२०४४), अन्तर्राष्टीय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल (२०६५), मैथिली नाटक संग्रह (२०६७),लावाक धान(कविता संग्रह) सम्पादित पुस्तक सभ अछि। अन्यमे अंग्रेजीक त्जभ अगतिगचब ि्जभचष्तबनभ या लभउब ि (२०६२), आजको धुनषा (२०३९), समयको अन्तराल पछ्याउँदै नेपालीक रचना अछि।

अनुवादमे नहि आब नहि (मैथिलीक एक मात्र दीर्घ प्रेम काव्य)क हिन्दी में बस, अब नही क नामसँ गोपाल अश्क अनुवाद कएने छथि तँ नेपाली मे सुप्रसिद्ध गद्य- पद्य लेखक मनुब्राजाकीक अनुवाद भयो अव भयो (१९९० ई.) प्रकाशित अछि। तहिना भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरु धर्मेन्द्र विह्वल द्धारा अनुवादित नाटक संग्रह अछि त घरमुहाँ उपन्यासक भोजपुरीमे उमाशंकर द्धेवेदी द्धारा कएल अनुवाद प्रकाशित अछि। जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरु (२०५६) आ तराइको फाँट देखि हिमालको काँख सम्म (२०६७) नेपालीक मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आलेख संग्रह अछि। हालेमे हिनक चर्चित निबन्ध संग्रह मिथिलाक लोक जीवनः लोक सन्दर्भ आएल अछि।

हुनक अरिपन नामसँ गीति कैसेट बहार भ गेल छन्हि, जाहिमे नव गोट गीत राखल गेल अछि। फिल्म बनओलनि एकटा आओर वसन्त। ई फिल्म नेपाल टेलिभिजनसँ प्रसारित भ चुकल अछि, होइत रहैत अछि।

ओ पूर्ण मौलिक लेखक छथि, पत्रकार छथि। पैतृक सम्पत्तिकेँ जोगा क रखलनि, अपन अरजल भव्य भवन बना साहित्य साधनामे रत् छथि। हिनक आवास भ्रमरकुञ्ज जनकपुरक रेलवे स्टेशनसँ उत्तर सहजहि नजरि पर आबि जाइछ, जत्त साहित्य मनिषी लोकनिक निरन्तर आवाजाही लागल रहैत अछि।

अपन लेखनीक बलपर पायाक एहि पार ओहिपार समान रुपें समादृत भ्रमर अपन इतिहास स्वयं रचलनि अछि। अपन प्रकाशनक माध्यमसँ आनो साहित्यकारकेँ सोझा आनि नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहासके पुष्ट कएलनि अछि। हुनक मूल्यांकन जेना हएबाक चाही से संभव थिक नहि भेल हो, तकर कारण पुछलापर ओ महज मुस्किया दैत छथि, मुदा एकटा आरोप त लगिते छैक मैथिली मंच सभपर दश प्रतिशत लोकक कब्जा रहैत अछि, लर

जर रहैत अछि आ भ्रमर सन सेवक साहित्यकार कतौ कात क देल जाइत छथि। मुदा भ्रमर स्वयंकेँ हरतरहेँ सन्तुष्ट मानैत छथि- हमर उपलब्धि कोनो तरहेँ कम नहि, ई त सुधी समाजक मूल्यांकनेक कारण भ सकल अछि ने तखन विभेद कथीक।

बहुत गोटे ई भ्रमर क बडप्पन मानैत छथि। सत्य ई अछि हुनका अपन स्थान बनएबामे खासे परेशानी आ अटुट परिश्रमक कर पडल छन्हि जे सम्भवतः आन पक्षकेँ सहज होइतैक। देखल इहो जा रहल छैक जे बहुत कम लिखि क सबसं बेसी प्राप्त कएनिहारो सभ अछि। किछु गोटे एम्हर अनेरे गुट खडा क एकके विरुद्धमे दोसरके महिमामण्डित करबाक काज सभ सेहो शुरु क चुकल छथि जाहिसं समस्त मैथिली साहित्य प्रभावित भ रहलैक अछि। एहनमे भ्रमरसन एकाकी साधनालीन सभक हेतु त सेवे एकमात्र आधार छैक मूल्यांकनके जे देर सबेर भेवो क्एलैए।

तैयो अपन माटि पानिसँ जुडल, वाहिरी आडंबर आ चेला चाटी प्रथासँ दूर भ्रमरजी विविध व्यक्तित्वकेँ एकठाम जोडि क रखने छथि आ तकर प्रदर्शन हुनक व्यवहार आकृतिमे स्पष्ट रुपेँ परिलक्षित होइत अछि।

एखन ओ मधेश सरकार द्वारा गठित उभ्भस्तरीय मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष बनाओल गेलाह अछि आ भाषा,साहित्य,संस्कृतिक क्षेत्रमे काजके आगाा बढएबाक हेतु अपस्यांत छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.डा. योगानन्द झा-भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि

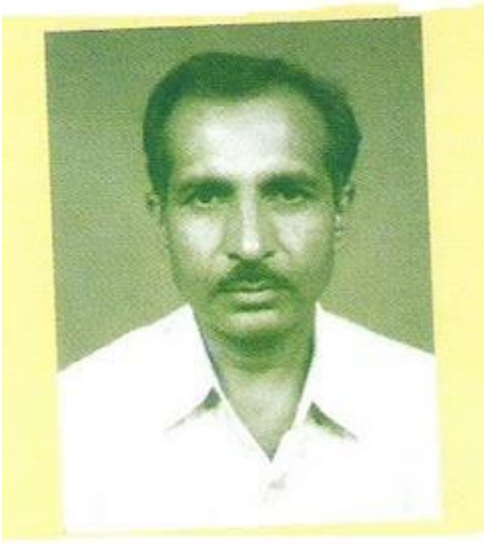

डा. योगानन्द झा

भैया अएलै अपन सोराज: विहगंम दृष्टि

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत ओ सामूहिक जीवनक चुनौतीसबहक प्रत्युत्तरक रुपमे सुस्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वपनलोकसँ क्रमशः दूर भेल जा रहल अछि। आजुक साहित्य शैली विशेषमे मानव जीवनक व्याख्या किंवा लोकरञ्जनक साधनाटाक रुपमे सीमित नहि अछि। अपितु ई निरनतर लोकजीवनक हितक हेतु नव नव विकल्प ओ दिशानिर्देशक प्रति प्रतिबद्ध अछि। तएँ आजुक साहित्यकार लोकजीवनक

भविष्यक हेतु चिन्तनशील देखि पड़ैत छथि आ लोकजीवनमे व्याप्त मलिनता, असमानता, निष्ठूरता ओ अहङ्कारक उन्मुलनकेँ अपन हथियारक रुपमे प्रयोग करैत देखि पडैत छथि।

आधुनिक साहित्यक गतिविधिक ई चेतना अपन बहुआयामी स्वरुपमे श्री रामभरोस कापडि भ्रमर जीक "भैया अएलै अपन सोराज" पोथीमे सङ्कलित दसो एकाङ्की नाटकमे अत्यन्त प्रस्फूटित भेल अछि। एहिसबमे एकाङ्की नाटकक समस्त मर्यादाक पालना करैत लोकमङ्गलक जे चित्र रुपायित भेल अछि ताहिसँ ई स्पष्ट अछि जे नाटककार समाज, राष्ट्र ओ विश्वमानवक उन्नयनक हेतु प्रतिबद्ध लेखनसँ संपृक्त छथि तथा विभिन्न अमङ्गलकारी तत्वकेँ ताहि रुपमे उपस्थिति करवामे सक्षम छथि जाहिसँ दर्शक स्वयं ओकर निदानक मार्ग हेरि सकथि।

एहि संग्रहक दू टा नाटक लोकगाथापर आधारित अछि क्रमश : *भैया, अएलै अपन सोराज* आ *लोक नाट्य जट जटिन*। "भैया, अएलै अपन सोराज" मे दीना भद्रीक गाथाकेँ आधार रुपमे ग्रहण कएल गेल अछि। गाथाक अनुसार दीना भद्री नामक दुई गोट मुसहर भाई छलाह जे कनक धामि नामक सामन्तक एहि हेतुएँ विरोध कएने छलाह जे ओ लोकसभसँ बेगारी खटबैत छल। दीना भद्री कनक धामिकेँ मारि कऽ बेगारी प्रथासँ लोककेँ उबारने छलाह आ जन जनमे पुजित भेल छलाह। आइयो ओ मुसहर जातिक लोकदेवताक रुपमे पुजल जाइत छथि। कनकधामी तँ मारल गेल मुदा सामन्ती व्यवस्था एखनो कोनो रुपमे जीवन्त अछिए। सामन्तलोकनि नहि केवल दलित वर्गक श्रमक शोषण करैत रहलाह अछि अपितु एहि वर्गक नारीलोकनि यौनशोषणक हेतु सेहो बदनाम रहलाह अछि। क्रमशः युगचेतना बदललैक अछि आ शोषित वर्ग एहि अनीतिपूर्ण व्यवस्थाक प्रति असन्तोष, विरोध ओ विद्रोहक भावनासँ संवलित होईत गेलाह अछि। एकरे परिणाम थिक जे आब

वेगारी प्रथा इतिहासक वस्तु भऽ गेल अछि। तथापि नाटककार एहि प्रसङ्गक पुनरावृति कऽ वस्तुत : शोषक ओ शोषित वर्गक ऐतिहासिक सघर्षक गाथाकेँ संरक्षित करैत समसामयिक जीवनमे पर्याप्त शोषण चक्रक अभिव्यजना ओ तकर निदानक मार्ग संकेत कऽ देलनि अछि।

एहि एकाङ्कीमे पुरुष १ आ पुरुष २ कृषक मजदुर अछि जे जोरावर सिंह सामन्तक जमीन्दारीमे रहैत अछि। ई सभ बेगार सँ तँ अकछल अछिए, अपन बहु बेटीक इज्जतक रक्षाक हेतु कोनो त्राताक बाट ताकिरहल अछि। जखन एकरा दुनूकेँ विदीत होईत छैक जे दिना आ भद्री नामक दूटा पहलमान एकरे जातिक छैक आ ओ दुनू जोरावरक अत्याचारसँ लोककेँ त्राण दिएयवाक हेतु तत्पर भेलैक अछि तँ दूनु बेस प्रसन्न होईत अछि। जोरावरक लठैतसभ गाम गमतिमे अत्याचार करैत छैक। तत :पर दीना भद्रीक सँग जोरावरक मल्लयुद्ध होईत छैक आ ओ मारल जाइत अछि। एहन अनाचारीक मृत्युपर जनता जर्नादन प्रसन्न होइत अछि। वस्तुत : ई एकाङ्की लोकपरम्पराक प्रति नाटककारक व्यामोहटाक निदर्शन थिक। एहिमे युगिन चेतनाक सम्यक उपस्थापन नहि देखि पडैत अछि। जट जटिन मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनाटक थिक। ई लोकनाट्य महिलालोकनिद्वारा अभिनीत होइत छल। कहल जाइछ जे जखन वर्षा ऋतु समाप्त भेलाक बादो वर्षा नहि होइत छलैक, तँ ग्राम्य नारीलोकनि इन्द्र भगवानकेँ प्रसन्न करबाक हेतु टोना करैत छलीह। एहि टोनाक क्रममे जट जटिन लोकनाट्य महिलालोकनि दू दलमे विभक्त भऽ खेलाइत छलीह। मान्यता ई रहैत छलनि जे कुटल जाइत बेङ्गक करुणापूर्ण आवाज सुनि इन्द्रदेवता पघलि जाइत छलाह। आ वर्षा होमऽ लगैत छलैक। कुटल बेङ्गक अवशेष कोनो हडाहि माउगिक आङनमे फेकिदेल जाइत छलैक जे अपनासँग कएल गेल एहि व्यवहारक हेतु महिलालोकनिकेँ गारि पढैत छलीह। ओ जतबेँ खौझा खौझा कऽ गारि पढैत छलीह। लोक मान्यताक अनुसार वर्षा ताहि वेगसँ होइत छल।

कृषि कर्मक हेतु वर्षाक महत्ता जगजाहिर अछि आ ताहि हेतु जट जटिनक लोकनाट्य खेलएबाक परम्परा अति प्राचीन कहल जाइत अछि। एहि नाट्यक दुनू पात्र जट आ जटिनक लोक जीवनक शुद्ध दम्पति अछि। जकर नोक झोँक एहि नाट्यमे युगल गीतक रुपमे प्रस्तुत भेल अछि। नाटककार मिथिलाक एहि लोकसाहित्यकेँ संरक्षित कऽ लेबाक दृष्टि जे एकर सङ्कलन कएलन्हि अछि आ एकर मूल रुपकेँ यथावत रखबाक प्रयास कएलनि अछि। एहि नाट्यमे नट नटीन प्रायेग प्राचीन नाट्य परम्पराक अनुसरणमे भेल अछि। महिषासुर मुर्दाबाद एहि नाट्क संग्रहक एकल नाटक थिक। जाहिमे एकेटा युवक अपन आत्माक सँग गप्प करैत देखल जाइत अछि। नाट्य प्रयोगक दृष्टि जे ई एब्सर्ड प्रकृतिक एकाङ्की अछि। जाहिमे व्यङ्गय, आक्रोश ओ श्रव्यद्वारा युगीन यथार्थक चित्राङकन कएल गेल अछि। समसामयिक जीवनक ई यथार्थ थिक जे आइ समाजमे आनक बहु बेटीक इज्जति लुटनिहार, दहेजलोभी अभिभावक, गरीबक मखौल उडौनिहार, महाजनी वृत्तिसँ समाजक शोषण कएनिहार, अनाचारी भ्रष्टाचारीलोकनिक चलती छनि आ ओलोकनि कानुनकेँ अपना कब्जामे कऽ निद्वन्द्व विचरण करैत छथि, जखन कि अन्यायक विरोध कएनिहारकेँ इएह कानुन फाँसीक फन्दाधरि पहुँचा दैत छैक। नाटककार शोषण होइत वर्गपर शोषित वर्गक विजयक पक्षघाती छथि आ ई सङ्केत दैत छथि जे कोनो एकटा शोषककेँ हलाल कऽ देने शोषण समाप्त होमऽबाला नहि छैक किएक तँ एकटा शोषक मरैतदेरि दोसर शोषक तैयार भऽ जाइत छैक। अवश्य, जँ शोषितलोकनिसभके सेहो समाप्त कएल जा सकैत छैक।

तहिना पेटक खातिर सडक नाटक किंवा नुक्कड नाटक थिक जे विना अधिक नाटकीय उपकरण ओ रङ्गशालाक सुनियोजित व्यवस्थाक कतहु खेलल जा सकैछ। आजुक व्यस्त जीवनमे नाटक आ रङ्गमञ्चके सामान्य दर्शकलग स्वयं पहुँचबाक चाही, ताहि दृष्टिसँ जे एहि कोटिक नाटक अभिनव प्रयोग थिक। एहि नाटकमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विभिन्न आयामपर

कसगर चोट कएल गेल अछि आ दर्शकलोकनिकेँ समाज ओ राष्ट्रमे व्याप्त विसङ्गतिसँ परिचय करा ओकर निदान सोचबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कएल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे कोना तस्करीक माल तस्कर ओ नेतालोकनिबलेँ एक देशसँ दोसर देश पहुँचि जाइत अछि, कोना प्रशासकलोकनि भ्रष्टाचारक श्रृङखलासँ आबद्ध छथि आ जनसामान्यक शोषणमे लागल छथि, कोना नेता लोकनि टिकट पएबाक लेल कुत्सितसँ कुत्सित कर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि। कोना जनताक रखबारलोकनि जनताक कल्याणक मददिक अंश अपने खा गेल करैत छथि आ शिक्षाजगतमे माफियालोकनि पाइक बलपर मेधावी छात्र लोकनिक स्थानपर कमजोरो छात्रकेँ मेघा सूचिमे आगाँ बढा देबाक धन्धामे लिप्त रहैत छथि।

नेता जी आबिरहल छथि एकाङ्की सेहो प्रजातन्त्रीय शासनक विभिन्न विसङ्गतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि नाटकमे नाटककार जनताक समस्याक मूलकेँ स्पस्ट करबाक उदेश्यसँ कथा सूत्र जोडलनि अछि। नाट्यारम्भमे सूत्रधार ओ नटी कलाकारलोकनिक हड़तालसँ सीदित देखि पडैत छथि। ईलोकनि कथानक तकबाक प्रयासमे छथि। तावत् एकटा जुलुसक स्वर सुनि पडैछ। जाहिमे महँगीक समस्या अत्यन्त सामान्य बुझना जाइत छनि आ चुँकि लोक ऐकरा तेना कऽ कऽ अङेजि लेने अछि जे ई नाटकक विषय रुपमे ज्वलन्त नहिं बुझना जाइत छनि। तत :पर भ्रष्टाचारक विरुद्ध जुलुस देखि पडैत छनि। आ भ्रष्टाचारक समस्याकेँ कथानकमे लऽ नाटक खेलबाक मानसिकता बनबैत छथि। मुदा ईहो आब ज्वलन्त समस्या नहि बुझना जाइत छनि। कारण लोक कोनो प्रकारक सरकारी काजक हेतु घुसक लेन देनके अङजि कऽ एकटा स्विकृति दऽ चुकल छैक। ततःपर शान्ति सुरक्षाक हेतु प्रशासनक विरोधमे जुलुस देखि पडैत छनि। तखन ओ अपन नाटकक हेतु शान्ति सुरक्षाक समस्याकेँ कथानक रुपमेँ ग्रहण करऽ चाहैत छथि। किएक तँ इहो समस्या ज़डिआएल बुझना जाइत छनि। मुदा तखने

बेरोजगारलोकनिक एकटा जुलुस देखि ओ बेरोजगारीएकेँ ज्वलन्त समस्या मानि कथानकक सृजन करबाक ब्यौंत करऽ लगैत छथि। मुदा पुन : एकटा सरकारी जुलुसपर नजरि जाइत छनि। जाहिमे विरोधिसबहक विरोधक समस्या, कर्मचारीलोकनिक हडतालक समस्या, शान्ति सुरक्षाक भङ्गक समस्या आदिक प्रतिरोधात्मक स्वर सुनि पडैछ आ एहि समस्यासबकेँ नाटकीय स्वरुप प्रदान करबाक मन बनबैत छथि। एहितरहेँ एहि एकाङ्कीक माध्यमे नाटककार प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे उत्पन्न विभिन्न समस्यासबहक सङोर कऽ ई प्रदर्शित करबाक प्रयास कएलनि अछि जे आइ ततेक समस्या अछि जे सबपर फूट फूट कऽ नाटक खेलल जा सकैछ। कानो समस्या ककरोसँ कम नहिं अछि मुदा सबसँ बडका समस्या थिक जुलुस जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक देन थिक। एहि समस्याक कारणे लोकजीवन अस्त-व्यस्त रहैत अछि। मुदा ई कोनो समाधान प्रस्तुत नहि कऽ पबैत अछि। अवश्य जुलुश कएनिहारकेँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैक। जे ओ अपन अधिकारक प्रयोग कऽ पाबिरहल अछि। आ एहि जुलुशक समस्याक मूलमे छथि राजनेतालोकनि जे मूल समस्यासँ जनताकेँ भ्रमित कऽ अपन स्वार्थ साधनमे लागल छथि। तएँ प्रजातन्त्रमे जाहि एकमात्र चरित्रक चारुकात सबटा समस्या घुमैत अछि, से थिकाह नेता जीलोकनि। यावतधरि हिनकालोकनिक चरित्रमे सुधार नहि होयत , ताधरि प्रजातन्त्र लोककल्याणकारी नहि भऽ सकैछ आ ने कोनो समस्याक समाधान भऽ सकैछ। एहि तरहेँ एहि नाटकमेँ वास्तविक जीवनक उदघाटन कऽ अभिनव कलाक माध्यमे एकटा विशिष्ट विचारधाराक अभिव्यक्ति भेल अछि जे लोकजगतकेँ प्रेरित प्रभावित करवाक दृष्टिए सफल अछि।

हम घुरी अयलहुँ मीत क्षेत्रवादसँ ग्रस्त नेपालक लोकजीवनक अन्त:कथापर आधारित अछि। क्षेत्रक आधारपर नेपालक लोक दू भागमे बँटल अछि। पहाडी आ मधेशी। पहाडीलोकनी पहाडपर रहैत छथि आ मधेशीलोकनि

तराइमे। पहाडीलोकनि, मधेशीलोकनि प्रति नीक भाव नहि रखैत छथि। जकर कारणे नेपाली मानस दू भागमे बाटि गेल अछि। स्वभावत : पहाडी ओ मधेशीक राष्ट्रीयता एक रहलाक बादो दुनूक बीच दुरी बढ़ल अछि। जे पारस्परिक सर्घषक रुप लऽ लेलक अछि। एहि संङघर्षक कारणे पहाडीलोकनि मधेशीलोकनिक बीच आ मधेशीलोकनि पहाडीलोकनिक बिच उत्पीडित होइत छथि। उत्पीडनक अतिरेक तखन होइछ जखन मधेशमे बसल कोनो पहाडीके अपन चल अचल सम्पति अल्प मूल्यमे बेचि प्रव्रजन करबाक स्थिति बनैत छैक। रामेश्वर पहाडी अछि मुदा बहुत दिन सँ मधेशीलोकनिक बिच बसल अछि आ ओकरासभक सँग आत्मियता बनौने अछि। मुदा राजनितिक षडयन्त्रक कारणे ओकरा प्रव्रर्जित होएवाक स्थिति बनैत छैक। मुदा ओकर मधेशी मीतकेँ ई पसिन्न नहिँ छैक। दुनूके बीच अन्तरङ्ग सम्बन्ध छैक । अन्तत : ओ पहाडी अपन जन्मभूमिक परित्याग नहि कऽ पबैत अछि आ पुन : अपन वासस्थलपर घुरि अबैत अछि। छहोछित राष्ट्रीयता बीच मानवीय संवेदनाक उपस्थान एहि नाटककेँ अत्यन्त स्तरीय बना देलक अछि।

सुलीपर ईजोत प्रतीक नाटक थिक। एहिमे इजोत प्रतिनिधित्व करैत अछि मानवक सुखी, सम्पन्न, सुन्दर ओ आकर्षक जीवन, अन्हार प्रतिनिधित्व करैत अछि ओहि समस्त विसङगतिक जे मानव जीवनकेँ दुःखमय बना देने अछि। सुली थीक ओ स्थान जतऽ विसङगतिसभसँ संघर्षक कऽ सुलीधरि पहुँचबाक आवश्यकता छैक। आई गरीबी, बेरोजगारी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूटि, बलातकार, चितकार, दहेज प्रथा, चोरी, डकैती, अनाचार, आदि विभिन्न समस्या मानव जीवनकेँ दुभर कएने छैक। ई समस्यासब यावत दुर नहि हएत मानव नीकजकाँ जीबि नहि सकैछ। मुदा ई समस्यासब दूर हएत कोना, ताहिहेतु हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ काज नहि चलि सकैत छैक। एकरालेल चाही कर्मण्यता आ साहस। ई साहस ने तऽ ओहि सुविधाभोगी समाजलग छैक जे कानमे तुर ठुसि अपनामे मस्त

अछि आ ने क्रान्तिदर्शी ओहन लोकलग जे समाजिक जड़ताँके तोडवाक स्वाङ्ग मात्र रचैत अछि। वस्तुत : जखन मजदूर आ किसान अपन आजीविकाक प्रति बफादार रहैत संघर्षशील हएत तखने समाजिक विद्रुपता सबपर विजय प्राप्त कऽ अन्हारकेँ परारास्त कऽ सकत आ सम्पन्न जीवन जीवि सकत। नाटककार श्रमिक वर्गाक प्रतिष्ठा करैत पुरुष २ सँ कहवैत छथि हर आ पालो सिढीक दुन ठाढ़ हैत। बड़का पैना पौदान। आ पालोमे जे बान्हल अछि ताहि जौरसँ पौदान बान्हल जाइत। एना कऽ चहरि पहुँचि जाएब इजोतधरि। वस्तुत ? इ नाटक समाजिक राजनितिक जगतमे प्याप्त विद्रुप्तसँ संघर्ष करवाक आवहन करैत अछि। आ बौधु बाजु उठल ग्राम्य जीवनमे चलैत कूटनीतिक पर्दाफास करैत अछि। एकर नायकमे अछि बौधु जे एकटा चाहक दोकान चलबैत अछि। एहि दोकानक कारणे ओ गामक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत अछि। अयोधि चौधरी गा्रमप्रधान अछि। जकरा समयमे गाममे सुख - शान्ति व्याप्त छैक। मुदा किछु लोककेँ ओ नहि सोहाइत छैक। एहन स्वार्थी तत्व ग्रामक प्रधानविरुद्ध षडयन्त्र करैत अछि। ओसभ ग्रामप्रधानक एकटा मित्रकेँ ग्रामप्रधान बनबाक हेतु चुनावमे ठाढ़ करबा दैत अछि। परिणामत : दुनु मित्रक टोलमे वैमनस्य भऽ जाइत छैक। मुदा बौधु षडयन्त्रकारीसभक पोल खोली दैत अछि आ गाम पसाही लगबासँ बाचिँ जाइत अछि। एहितरहेँ नाटकमे ग्राम्य जीवननक विद्रुपताविरुद्ध उभरैत जनचेतनाकेँ साकार कयल गेल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक पैघ एकाङ्की अछि सुरज उगवासँ पहिने । ई सात दृश्यमे विभाजित अछि। ई एकगोट रोमानी अर्थात स्वच्छन्दवादी नाटक थिक। एहिमे प्रेमक स्वच्छन्दतापर बेस बल देलगेल अछि। आ ओकर मार्गमे उपस्थित होबऽबला विघ्न बाधाक सामाना अत्यन्त सहज ढङ्गसँ होइत देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे नायक ओ नायिका विवाहमे विघ्न-बाधा होइतो अत्यन्त हर्ष आ उल्लासक वातावरण प्रदर्शन भेल अछि।

एकर नायक अशोक पढ़ि लिखि क नोकरी कऽलगैत अछि मुदा एहि हेतुएँ नोकरी छोड़ि दैत अछि जे ओकर मालिक अवैध व्यापारमे लागल रहैत छैक। आ तकरे ताकछेम करवाक लेल ओकरा नियुक्त कएने रहैत छैक। नोकरी छोड़लाक बाद ओ बेरोजगार भऽ गामक सङ्गीसभक कुसङ्गतिमे रहऽ लगैत अछि आ व्यक्तिगतरुपेँ स्वच्छ रहितो अपन नरेशि मित्रसभक कारणे बदनाम होइत चलिजाइत अछि जाहिसँ ओकर माता पिता दुःखी रहऽ लगैत छथिन। बेर-बेर कोशिश कएलाक बादो अशोककेँ नोकरी नहि भेटि पबैत छैक आ ओ अपन पेंशनधारी पितापर आश्रित रहऽ लगैत अछि।

अशोकक पिता अपन सकल अचल सम्पति अशोकक पढाइमे बिलहि देने छलाह। आ किछु कर्जा भऽ गेल छलनि जकर कारणे गोराइत हुनका आ हुनका पत्नीकसँग दुर्व्यवहारपर उतरि जाइत अछि। अशोककेँ ई नहि नीक लगैत छैक आ ओ गोराइतसँ भीडि जाए चाहैत अछि। ओ मुलक कतोक गुणा सुदि जोड़ि कऽ ओकरा पैतृक घराडी हडपबापर तुलल छैक। युवा वर्ग एहि महाजनी वृतिक प्रतिरोध करऽ चाहैत अछि मुदा अन्धविश्वासमे जकडल ओकरासभक माता पिता अत्याचारी महाजनकेँ बेरपर ठाढ़ होएबाक कृपा करवाक कृतज्ञताक कारणसँ नहिँ करऽ दैत छैक। मुदा अशोककेँ अपन माता पिताक अपमान नहिँ सकल जाइत अछि। ओ गोराइतक डेउढ़ी जा जुमैत अछि। मुदा ओतऽ गोराइतक बेटी ओकरा गोराइतसँ भेट होबऽ दैत छैक। आ अपन गहनासब प्रदान कऽ ओकरा ऋणमुक्त भऽ जाए कहैत छैक।

गोराइतक बेटी लक्ष्मीसँ अशोक गहना नहि लैत अछि। लक्ष्मी अशोककेँ अपन पिताक महाजनी वृत्तिक विरुद्ध संघर्ष करवाक हेतु सङ्गठित प्रयास करबाक मन्त्रणा दैत छैक आ ओहिमे आवश्यकता पड़लापर अपनो सहयोग देवाक वचन दैत छैक। अन्नत: अशोक लक्ष्मीसँ विवाह कऽ लेबाक निर्णय लैत अछि आ लक्ष्मीयो ताहिहेतु तैयार भऽ जाइत अछि। दुनुक विवाहमे गोराइत विघ्न

बाधा उत्पन्न करऽ चाहैत अछि मुदा कन्याक बालिग रहबाक कारणे आ ओकर स्वीकृतिसँ विवाह होएबाक कारणे आ विवाह रोकि नहि पबैत अछि। आ एहिँतरहे महाजनक अन्यायी वृत्तिक अन्त होइत छक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर ओ सजीव उपस्थापन भेल अछि, ततेक ओकराविरुद्ध संघर्षक नहि आ ने फलदायी प्रेरक। लक्ष्मी आ अशोकक प्रेममे ततेक असहजता अछि जे वस्तु विन्यासेपर प्रश्न उठि सकैत अछि। तथापि रङ्गमञ्चीय दृष्टिसँ ई नाटक सिनेमा शैलीक सफल नाटक थिक।

मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक सम्मिलनकेँ जँ मैथिली नाटकक इतिहास मानी तँ आठसओ वर्ष पुरान अछि। नेपाल मैथिली नाटक ओ रङ्गमञ्चक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्रक रुपमे सत्रहम अठारहम शताब्दी धरि जानल जाइत रहल। मुदा परवर्ती कालमे ओहिठामसँ मैथिली नाटकक स्रोत जेना सुखा गेल छल। मुदा श्री भ्रमर जीक प्रयाससँ बुझना जाइत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक अपन सकल सम्भारक सँग नेपालमे पल्लवित पुष्पित भऽ रहल अछि आ युगानुरुप अन्यान्य भाषाक समकक्ष लेखनक प्रतिस्पर्धामे लागल अछि। एहि नाटकसंग्रहसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे भ्रमरजी प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, नाट्यशैलीक विविध प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि खाहे ओ पारम्पारिक शैली हो किंवा अत्याधुनिक।

भ्रमर जीक एकाङ्की नाटकसबमे अधिकांश वस्तु विन्यास प्रासङ्गिक अछि। एहिसबमे वर्तमान जीवनक विभिन्न समस्यादिसि लोकक ध्यानाकृष्ट करबाक सामर्थ्य छैक। ईसबटा रङ्गमञ्चीय दृष्टि सफल एकाङ्की अछि। नाटककार रङ्ग प्रभावकेँ उत्कर्षधरि पहुँचएबाक हेतु रङ्गभाषाक प्रयोग कएलनि अछि, जे हुनक निर्देशकीयताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक प्रयोग

कयलनि अछि जे हुनक निर्देशकियताकेँ स्फूट करैत अछि। पात्रोचित भाषाक व्यवहारसँ एकाङ्कीमे कतहुँ असहजता ओ भारीपन बुझना जाइत छैक। लोकानुरञ्जनक अपेक्षा गम्भीर वैचारिक अभिव्यक्ति प्रदान कऽ भ्रमरजीक एकाङ्कीसब लोकजीवनक समस्त नाकारात्मक पक्षक विद्रु पताकेँ उद्घाटित करबामे सफल सिद्ध अछि तथा नव निर्माणक पक्षपाती अछि। अवश्ये हिनक ई साहित्य समाज आ देशक हेतु कल्याणकारी अछि जाहिमे सस्त लोकप्रियता आ बाजारुपनक अभाव तँ अछिए, प्रचार आ उपदेशकक थोपल बौद्धिकता नहि अपितु कलात्मक लोकोपदेश अछि। समग्रतामे हिनक संग्रह समाज ओ राष्ट्रक प्रति हिनक प्रतिबद्ध लेखनक विशिष्ट नमुना थिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

गजेन्द्र ठाकुर

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ जे पढ़बामे नीक लागत से भऽ जायत नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही? आ जे जातिवादी अछि, जे 'स्लैपस्टिक ह्यूमर' लिखै छथि से भेला नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही? २१म शताब्दीमे मलंगियाजी 'ओकर आंगनक बारहमासा'मे निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना

कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्डु चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तैँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तैँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। विष्णु शर्माक पंचतंत्रमे नीक कथा सभ अछि मुदा ओ अकारण शूद्र आ स्त्रीक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, से नारायण पण्डितकेँ ओकर पुनर्लेखन कऽ हितोपदेश लिखय पड़लन्हि। रंगमंच निर्देशककेँ सेहो ऐ तरहक भाषाक पुनर्लेखन कऽ मंचन योग्य शब्दावली बनेबाक चाही।

भ्रमरक गरिमामय भाषा लोकक गरिमाक मान रखैत अछि।

मुदा पहिने भ्रमरक लघुकथा सभपर एकटा दृष्टि:

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (१९८७)

ऐ संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि।

पहिल लघुकथा **भगजोगनी**क जबर्दस्त प्रारम्भ भेल। ग्लैमर गर्ल रेखा घर गृहस्थीक लेल चिन्तित, ई देखि कऽ प्रोटैगोनिस्ट अभि अचम्भित छथि। समाजसँ परिवारसँ जे ओकरा अठारहे उन्नैस बर्खमे पठा देलकै काठमाण्डो, कमाइ लेल। ओकरासँ खिन्न छलि रेखा। पति बनारसमे ओकरे कमाइपर पड़ल रहै छल, आ ओकर फैशनक खर्च पूरा करै छलै ओकर संगी शेखर, व्यापारी। मुदा कथाक अन्त कमजोर भऽ गेल अछि।

अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही उत्कृष्ट कथा अछि। गणेश आ गणेश सन लोकक स्केच। 'हमरे हरिपुर बला बट्टेदारसँ माङल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबूक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक।'

'भोतिआयल बाटक बटोही', 'नोरक बुन्न' आ 'असक्क' व्यक्तिक मनक विचार आ निराशाकेँ नीकसँ वर्णन करैत अछि। मुदा सर्वहाराक दर्द 'माटिक दरद'मे जइ प्रकारेँ आयल अछि, से अद्भुत अछि।

'मनःस्थितिक दंश' कथाक गढ़नि अद्भुत् अछि। बहुरियाक पति नाइट ड्यूटी, सिकरेटीपर जाइ छै। कमजोर छै। ससुर ओकरा घरमे पइसै छै, मुदा से ओकरा बादमे पता चलै छै, पहिल राति तँ ओ आदंकमे रहैए, ओकरा संग सम्भोगो भेलै आकि ओ सपनाइ छलि सेहो नै पता। कथा आगाँ बढ़ै छै। आर शिल्पगत विशेषता अबै छै। मुदा फेर अन्त होइत-होइत कथा कमजोर भऽ जाइए।

टीस दसम कक्षाक छात्राक कथा अछि, ओ किछु बनऽ चाहै छथि, मुदा..

जेना टीस गीताक कथा अछि तहिना मौसी मौसीक कथा अछि जे आइ जा रहल छथि, मुदा हुनका मोनसँ कियो निकालि नै पाबि रहल अछि।

आँचरमे बर्खा बुन्नीक बीच प्रोटैगोनिस्ट सोचि रहल छथि। भयंकर बर्खा, अड़ियानधान कऽ देतै। सरस्वती, सुनीता, गीता। सरस्वतीक सासुर नीक नै भेलै, गीता लेल लड़का प्रोटैगोनिस्ट ताकथु। स्मृति.. बर्खा बुन्नीक बीच।

पांकमे मॉडर्न रेखाक कथा अछि। मुदा कथा उद्देश्यहीन भटकैत रहैत अछि। तोरा संगे जयबौ रे कुजबा टाइटल कथा अछि मुदा पांक सन ईहो स्त्री पुरुष विमर्शकेँ नै फरिछा पाबैए। बैकफ्लैस आस जगबैत रहैए मुदा पाठक पियासले रहि जाइ छथि आ से प्यास तखन आर तीव्र भऽ जाइए जखन एतेक सशक्त पाँति कथाकार अन्तिममे आनै छथि।

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

बड़ सुख होयतै-

हथिया चढ़ि घुमबै जहान रे..

भ्रमरक नाटक

फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन, मोहाबराक संकलन नै करब तँ अहिना हएत जेना मलंगिया जीक नाटकमे होइए। अहाँ एक वर्गक प्रचलित मोहाबरा 'दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट' मोहाबराक संकलन कऽ लेब मुदा दोसर वर्ग द्वारा प्रयुक्त 'दस ब्राह्मण एक पेट..' केर संकलन नै कऽ सकब। महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जाति-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह? भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ कइएकटा दृश्य होइत अछि, जइमे अन्तिम दू-तीन दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ अन्तिम दू-तीन दृश्यमे ओ करैत छथि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव लिखैत छथि- "डॉ. रमानन्द झा 'रमण'अपन नोटबुक मे टिपने छलाह- 'ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?' एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।" चन्द्रेश "**रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना** [विदेह अंक ३७०]"मे लिखै छथि- "किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ

तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि।" ई *एकटा खास व्यक्ति* मलंगिया जी थिका, मलंगिया जी नेपाली राजशाही कालमे लेखकीय प्रतिबद्धताकेँ नै निमहा सकला आ राजनैतिक रूपसँ सत्ता पक्षक नाटक लिखलनि आ खयाल रखलनि जे दर्शक हँसय मात्र सर्वहारापर, सत्ताधीशपर नै। प्रा. परमेश्वर कापड़ि "'मुर्दा' नाटकक युगीन-सन्दर्भ [रमेश रञ्जन- मुर्दा, साल २०६९]" मे लिखै छथि- "डॉ. धीरेन्द्र आ मलंगिया... अपनाके राजनीतिसँ एतर रखने रहलाह। । तँए हिनका सबके रचनामे, रचनाधर्मितामे, राजनीतिक द्वन्द्वक लबलेस नहि देखाइ दैत अछि।" अही आलेखमे परमेश्वर कापड़ि रमेश रञ्जन आ मलंगिया जीक मादे लिखै छथि- "रमेशजी, मलंगियाके लगमे बहुत दिन धरि रहि रङ्गमञ्चीय सङ्घति करितो, यथार्थ ई अछि जे हिनकापर मलंगियाजीक कोनो छांह-भास नहि पड़ल बुझाइछ। दोसर यथार्थ तऽ इहो अछि जे मलंगियाजीसँ हटल रहले अवस्था आ संस्थामे ई महत्वपर्ण कृतिक रचना कए सकलथि। हमर कहबाक अभिप्राय ई अछि जे मलंगियाजी आ मिनापसँ जहिया रमेशजी अलग भऽ कऽ संकल्पसँ आबद्ध रहथि तहिए एकर रचना (मुर्दा, नाटक, वि.सं.२०५० सालमे) भेल अछि। ध्यातव्य अछि जे मिनाप एखनधरि एकर मञ्चन नहि कऽ सकल।"

ऐ परिस्थितिमे भ्रमर मैथिली नाटककेँ सम्वादक माध्यम बनौलनि, ओकरा लेल एकटा भाषा गढ़लनि जे सर्वहारा लेल अपमानजनक नै वरन गरिमामय छल। राजशाहीक तरमे रहितो आ नेपालक नागरिक रहितो (मलंगियाक कार्यस्थल नेपाल छल मुदा ओ भारतक नागरिक छला) ओ लोकगाथाक माध्यमसँ राजनीतिक विषयवस्तु अपन रचनाधर्मितामे अनलनि।

"भैया, अएलै अपन सोराज" केर पुरुष-१ आ पुरुष-२ सामन्तक बेगारी खटेबाक विरोधमे अछि आ पार्श्वसँ गीत उठै छै-

सभ दिन आई खढ़ कटाबै छै
सात सओ मुसहरबा से

सातो साओ मुसहरकेँ घरमे छागरे पोसल छै, दीना भद्री राजा भरथरीक गीत गबैत योगी रूपमे प्रवेश करै छथि।

तहिना 'महिषासुर मुर्दाबाद' एकल नाटक अछि, जइमे पुरुष-१ अपनो आ पार्श्वसँ बाजल अबाजोक अभिनय कऽ सकैत अछि। एकटा केँ मारने बहुत रास जनमि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि, से काज अपूर्ण छै ओइ पात्रक, आ तेँ ओ फाँसी पर अखन नै लटकऽ चाहैए।

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध) हुनकर फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक प्रमाण अछि। आ तेँ हुनका नेपालीय मैथिलीक लोकनाट्यधर्मी शेक्सपीयर कहल जाइत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर

नित्यानन्द मण्डल

अपने रङ्गमे रङ्गाएल रामभरोस सर

केहन सुदर्शन स्वरुप । अत्यन्त चमकैत ओजपूर्ण आभासँ लावालव भरल अप्रतिम आकर्षणयूक्त सौरभपूर्ण सौम्य नयनाभिराम मुस्किआइत मुखाकृति पर साटल नयनक उपनयन साहित्यसँ होइत छै जे निरन्तर अपना वेगक प्रवाहमे निश्छल सरिता जेकाँ बहैत रहैत छै विना रोकटोक अपन मणि जडित मस्तिष्कक आलम्ब पर अंकुरित बौद्धिकताक आयातनकेँ जीवन आ जगतक क्षितिजधरि आलोकित करव भागिरथी सत्प्रयाससँ समाज,साहित्य आ संस्कृतिक लेल अपन जीवनकेँ विषमे डुबाइयोक नीलकंठ जेकाँ विषपान कऽ श्रोता, पाठक आ दर्शककेँ अपन सृजनसँ अमृतपान, रसपान करौनिहार जनिक समकालिन समालोचक लोकनि सप्रेम, सस्मान, सस्नेह कहैत रहनि जे कापडिके चानि पर फुटनि खापडि, आइ वाहए कापडिसर मैथिली साहित्यकेँ श्रृवृद्धिमे महत्वपूर्ण योगदान दैत मिथिलावासीक माथ सगौरव उच्च क देलखिन्ह । कापडि सर माने रामभरोस कापडि सर ।

हुनक साहित्यिक आ सञ्चारक सुरभी सभ्यता आधारित मिथिला होइक वा अस्मिता अभिप्रेरित मधेसक कोन्ह-कोन्हधरि पसरिल छनि । हुनका पोरपोरमे मिथिला आ मधेश सजिव अछि । तैं नेपालमे संघियता अएलाक बाद मधेश प्रदेशमे गठित मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पहिल अध्यक्षक कमान सम्हारने छथि । मधेशप्रदेशमे रहल विभिन्न भाषाभाषिक साहित्यअनुरागी, भाषाप्रेमी, कलापारखी लोकनि हिनका उपर साहित्यक सभविधामे नीक महत्वपूर्ण काज होइक से पलक विछओने अछि ।

वस्तुतः मैथिली साहित्यक एहन कोनो विधा नहि जे हिनकासँ बाम गेल होइक ।

कविता,गीत,गजल, लेख,आलेख,निबन्ध,शोध,रिपोर्ताज, समिक्षा, कथा, उपन्यास, नाटक,फिल्म, गीति क्यासेट आदि हिनक बेमिसाल कृतिसभ अछि । नहि आब नहि दीर्घ कविता, तोरे संगे जएबो रे कुजबा, हुगली उपर बहैत गंगा, एण्टी भाइरस कथा संग्रह, ठेकान पर आलेख संग्रह,सीता फिल्ममे प्रसिद्धगीतक लेखन ,जटजटिन,जानकीक महिमा, हमर गरीवीए हमरा वरदान लगैए,मेहनतिके रोटी पकवान लगैए आदि गीत, जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका साँस्कृतिक सम्पदा आ एकर अँग्रेजी अनुवाद सेहो, राजकमल आ स्त्री पर शोध, मधेश आन्दोलनपर केन्द्रित घरमुँहा उपन्यास, आदि उल्लेखनीय कृति अछि । गामघर आ आँजुर मैथिली पत्रकारिताक एकटा एहन राजमार्ग बनल जाहिपर सयौंके संख्यामे एखनुका नामी हस्ताक्षर लोकनि ओहिठामसँ डेगाडेगी चलबाक सुरुआत कएने रहलबात ककरोसँ नुकाएल नहि अछि जाहिमे अपनेक शोणित आ रक्ततर्पणक सुफल थिक जे आइयो ओ दुनू पत्रिका पाठकक मनमस्तिष्कमे जीवित अछि, आ चलि रहल अछि । जनकपुरधामसँ कान्तिपुरक वास्ते पहिल व्यक्तित्वके रुपमे काज करब, मधुपर्क, गरिमा, गोरखापत्र, राजधानी, नागरिक, हिमाल
खबर, अग्निपथ, यूवा मञ्च आदिमे समाचार विचार प्रकाशित होएब अपनेक

कलमक जादुगरी अछि । हिन्दुस्तान, आज,ईनकलाब, हिमालीनी, द पोलिटिक्स, विविध भारत लगायतमे हिन्दी भाषामे विचार आ समाचार सम्प्रेषण ।

सोनामाटि, देशकोस, घरबाहर, समयसाल, अंतिका, फुलपात, पल्लव, मि थिला टाईम्स, मिथिला दर्शन आदिमे छायल रहलाह । जनकपुरधामक दोसर अफसेट प्रविधिक पत्रिका सुप्रभात, जनकपुर एक्सप्रेस आइयो लोकक ठोर पर अछि । एकटा आओर बसन्त टेलिफिल्म लेखन, निर्माण,कार्यक्रमक आयोजन,ओरिआओन, व्यवस्थापन आ सम्पादक अद्भूत कला ओ सहजने छथि जेकर परिणाम छै जनकपुर फिल्म फेस्टीभल, अन्तराष्र्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, साहित्य कला उत्सव आदि । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ मात्र नहि मैथिली विकास कोषक संस्थापक, रुपरंग आदि संस्थासभके सेहो गठन आ सञ्चालन करबामे हिनक योगदानक चर्चा नहि करब थोड़ हएत । नेपालक राष्ट्रिय अखवार मात्र नहि स्थानीय डेली एक्सप्रेसमे निरन्तर सत्य संवाद नामक स्तम्भपर कलम चलबैत आवि रहलाह अछि । इण्डोनेपाल राईर्टस मिट, ओहीपर आयोजन होबएबाला विद्यापति समारोह, लोकार्पण आ साँस्कृतिक मञ्च सभ पर हिनक उपस्थिति गरिमामय मानल जाइत अछि ।

वस्तुतः ओ एकटा एहन व्यक्ति, जे कहियो दार्शनिक चिन्तक जेकाँ, कहियो चमत्कारिक वक्ता जेकाँ, कहियो चुम्बकीय लेखक जेकाँ । कहियो पश्चिमी दर्शन, चिन्तन आ रोमान्टिसिज्मक एकटा पात्र जेकाँ । कहियो पूर्वीय धर्म, अध्यात्म, दर्शन आ अनुशासनक ज्ञाता जेकाँ । जीवैत रहलाह अछि । ओ जीवनक प्रत्येक क्षणमे हरेक रङ्ग सभक हिसाब किताबक आँकलन मात्र नहि कएलनि, ओही रङ्ग सभमे जीवाक उत्कट उत्कण्ठा जीजीविषा पोसलनि, आओर अपने रङ्गमे रंगा जाएबाला व्यक्तित्व । मुँह मिसरी बोल करैला, सुदर्शन स्वरुप,कला,साहित्य आ सञ्चारक संगम,अक्षर,आवाज आ

अन्दाजक त्रिवेणी, बहुविधावादी सशक्त हस्ताक्षर आदरणीय रामभरोस कापड़ि भ्रमर सर ।

कहियो उमेरसँ उफनाएल,उमटाम मातल जे अक्सर मौकाक तलासमे रहैत अछि जे ककरा कोना अपन शब्दक वाणसँ धरती धरा दी । मुदा असलमे कहीँ त एकटा एहन अभिभावक जे साँचेके प्राध्यापक बनबाक कहियो लौल नहि कएलनि मुदा मैथिलीबाला नहि नेपालीबाला लोकनि सेहो हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्व पर शोध करैत रहलाह । अर्थात् ज्ञान, चिन्तन, बोली आ लेखनमे लय भेल लोक । सार्वजनिक मञ्चसभक सम्बोद्धनमे एकदम प्रेमिल सम्बोधन, मुदा विचरण समाज, राजनीति, जीवन जगतक विशाल आ गहिरा समुद्रसभमे कल्पनाक सतरंगी पाँखि लगा उडान भरैत आ हेलैत डुबैत,नँखसिक होइत । अद्भुत फिचर लेखनशैली । चिन्तन आ तर्ककेँ सरल रूपमे रेखांकन करबाक जादुगरी कुशलता । ताहिके बहुत ही उदारतापूर्वक राखबाक बेजोड़ कला ।

हुनक तोरा सँगे जएबो रे कुजबा, हुँगली उपर बहैत गंगा, एकटा आओर बसन्त, सुरुज उगवासँ पहिने, पेटक खातिर, महिषासुर मुर्दावाद, सुलीपर इजोत, बन्नः कोठरी औनाइत धुँवा, लकडाउन डायरी, नहि आव नहि, दीर्घकविता, हालहिँमे मिथिलाक लोकजीवनः लोक सन्दर्भ पोथी एकटा नव कीर्तिमान स्थापित करबामे सफल भेल अछि । हिनक रचना सबमे जीवन,जगत आ प्रेम व प्रणय लवालव भरल अछि जे सर्वाधिक रुचिकर अछि । जाहिँमे नायक नायिकाक हाउभाउ, स्पर्श, नृत्य आदिसँ द्रवित होएव, श्रवित होइव आ दु तीन दिनधरि मोन गुदगुदाएल रहव । पाठकक स्वाभाविक प्रतिक्रिया । हिनक कथासभमे जाँघ वा वक्षस्थलक बात मात्र नहि होइत अछि, ओहिमे लोभ, मोह, काम, क्रोध, समाज आ राजनीति उपर चोटगर प्रहार सेहो रहैत अछि । बुद्धक

मन्त्रसभ, कुरान, वेद, उपनिषद्, बाइबल... की की नँई रहैत अछि ? लेखनमे विम्बसभक प्रयोग जादुगरी । तामझाम,हैसियतक प्रदर्शन, आडम्बरकसँग पूजापाठ करएबाला ढौंगी पण्डित पुरोहित,मौलाना,पादरी सभसँ लऽ कऽ समाजक अन्य पाखण्डी राजनीतिज्ञ आ स्कुल शिक्षकधरिक चर्तीकला उपर विलक्षण व्यंग्यवाण प्रहार करब हिनक मौलिक शिल्प छनि । हिनक सौन्दर्यचेत आ जीवनक खास रङ्ग रूपसभकेँ बेर बेर निघारबाक मोन होएव अस्वाभाविक नहि । हुनक बहुत चर्चित व्यंग्य आ विचारप्रधान श्रृंखला गामघर आ डेली एक्सप्रेसमे प्रकाशित रचना आदि बहतोकेँ ठोर पर शीर्षक आ गुदी कण्ठस्थ रहैत अछि । कहियोकाल अपना मुडमे रहलासँ अपन समकालीन सँगीसभ बीचक संवाद,चौल,नोकझोँक, झौल, बात कटौबलि आ ठट्टा गज्जवक होइत अछि । तखन एना लगैत रहैत अछि जेना जीवनक सभ रङ्गसभ ओहि ठाम पृथ्वीलोक पर उतरि आएल होइक । जेना दार्शनिक, आध्यात्मिक आ मानवीय चेतक बहस,विमर्श आ छलफल शानदार,वजनदार आ दमदार होइत जा रहल होइक । जनिक ठट्टामे सेहो अनन्त गहिराई होइत छैक, ओ परिहास आ विनोदप्रियता सेहो ! गहिर सौन्दर्यचेत आ मानवीय प्रेम । चेतनासँ भरल आ माजल एकटा प्राज्ञ पावरफुल चस्मा, बज्र दाँत आ अट्टाहासक मनकारी हँसनाई लाजबाब ।

पच्छिला समयमे अभिव्यक्तिक अन्तरिक्षमे अँखिगर,आसन्न जनगणना आ प्रदेशक भाषाक नामाकरण आ भाषाक जगेर्नाक लेल माहिर अभियन्ताक रुपमे सामाजिक सञ्जाल आ विभिन्न मिडियामे खुबे सक्रिय देखल गेलाह अछि । अंग्रेजीमे कहल जाइत अछि जे गिभ अ ड्याम ! मैथिलीमे बाल मतलब । विना रोकटोक, कहएबाला बात ठाहिँ प ठाहिँ कहवाक चाही, लिखबाक चाही । बात जानिसाफ,दु टप्पी, विना कोनो हिचकिचाहट गलत तत्वक विरुद्ध आवाज उठाएब । जाहिँसँ लोकके दुःख हएतनि तकर कोनो फिकिर,परवाह नहि । एहिसँ केओ गलत बुझ्mत वा अपन हित नहि होइत से कहियो नहि

बुझि सकलनि । अर्थ अनर्थक किछु गप्प कथिला नहि होइ ताहिँपर डाईरेक्ट प्रहार करब जे जीवनकेँ रङ्ग सभमे भोगैत अछि बिना ढोंग, बिना घमण्ड, बिना तथाकथित सामाजिक भय ! सीधा अर्थ नहि भेटव, हिनक गहिँर आ गम्भीर रचनामे । तथापि लयमे बहएबाला स्वभाव हिनका 'पब्लिक इन्टेलेक्चुअल' अर्थात् कतौं कोनो विषयमे लगातार सूचनायुक्त प्रवचन देनिहार विद्वान् आ विद्वतायुक्त विद्वता, विचार आ चिन्तनमे हुनक उचाई आ आयातन अतुलनीय अछि । बौद्धिकता, चिन्तन आ विचारक तहमे(समानस्तर) बात नहि मिलला पर ककरोसँग अडि जाएब हिनक स्वाभाव सर्वजनिन भऽ गेल अछि ।

एहिसभ बातक पुष्टि करबाक बेगरता नहि । लोक हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्वसँ नीक जेकाँ परिचित अछि । कहवामे कोनो हर्जा नहि जे नाटक लेखन, टेलिफिल्म(एकटा आओर बसन्त), पत्रकारिता(गामघर,,कान्तिपुर,सुप्रभात, जनकपुर एक्सप्रेस, कथासँग्रह,कविता,निबन्ध सयपत्री,आँगन,संस्मरण आदि)क यात्रा,सार्वजनिक मञ्च आयोजन व सञ्चालन जनकपुर फिल्म फेस्टीभल, अन्तर्राट्रिय मैथिली सम्मेलन, जनकपुर साहित्य उत्सव) आदिमे सराबोरि डुबलासँ,रसास्वादन आ परेखलासँ सहजै भेटि सकैत अछि । बड सुअदगर लयमे हिनक मुखाकृतिक जादुटोना किनका नहि सम्मोहित करैत हएतनि । आओर की कहुँ ? माफ कएल जएतैक जे हिनक भागीरथी सत्प्रयाससँ साहित्य आ सञ्चारमे प्रवाहित अनेकानेक कृति आ रचनाक उल्लेख नहि कऽ सकल हएब, हमर छोट मस्तिष्क जे कैद कएने रहय तकर शब्दमे गढबाक चेष्टा कएल ।भ्रमरसरक प्रति हमर कहब इएह रहत अपनेक व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिछाहीमे हमर ई शब्दचित्र स्वीकारल जाए ।

मैथिली भाषा एवं साहित्यमे अतूलनीय योगदानक कदर आ सम्मान स्वरूप परमादरणीय रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सरके नेपालक महामहिम राष्ट्रपतिद्वारा 'सु प्रबल जनसेवा श्री तृतिय पदक' प्राप्त करबाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि । वास्तवमे निरन्तर ५० वर्षधरि अपन जीवनक सर्वाधिक हिस्सा मैथिली, नेपाली, हिन्दी साहित्य, पत्रकारितामे व्यय कएनिहार व्यक्तित्वकेँ सम्मान करब संस्था स्वयंमे सम्मनित होएब अछि ।

कहबाक कोनो बेगरता नहि जे ओ वर्ष हिनका लेल सुखद रहलनि आ मैथिलीक लेल हर्षक, एहिदुआरे जे नेपाल सरकारद्वारा सुप्रवल जनसेवाश्री तृतीयसँ सम्मानित होइतेदेरि लगालग फेर नेपाल सरकारक संस्कृति, पर्यटक एवं नागरिक उड्डयन मन्त्रालयद्वारा वर्ष २०७७ के 'महाकवि देवकोटा पुरस्कार'क लेल चयनित भेलाक समाद सुनि सगर मिथिला अत्यन्त हर्षित, आह्लादित आ विभोर भेल । तैं परमादरणीय वरिष्ठ पत्रकार आ साहित्यकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सरके नमन सहित हार्दिक बधाई एवं शुभकामना । छक्के पर चौकाक वर्षात । समय घुरैत छै, समय चिन्हैत छै आ समय एवं समाज लगानीकेँ मूल्यांकन सेहो करैत छै देर सवेर । सबुर करबाक चाही । देर है अन्धेर नँई चाहे हुरार कतबो नाँगरि फरफरबो ।

मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सम्प्रति अध्यक्ष भेला पर फेरसँ अनेकानेक शुमकामना, अशेष मंगलकामना आ अपनेक जीवन सार्थक, सृजनमय आ सुखमय हुअए से असंख्य कामना ।

-नित्यानन्द मण्डल, जनकपुरधाम, नेपाल

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३. विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (वर्ष १६ मास १८६ अंक ३७१)-अंक ३७० पर टिप्पणी

साकेत ठाकुर

आदरणीय भ्रमर जी पर लिखल सब आलेख नीक लागल.विदेह पत्रिका स' संबंधित सब विद्वान जन के हार्दिक आभार।

लक्ष्मण झा सागर

समय के पक्का अछि विदेह।

सुशील लाल दास

सराहनीय कार्य। चैनसँ पढ़ब। बधाइ।

उषाकिरण खान

मेलपर देखलहुँ। विषय सूची बहुत विशिष्ट लागल। सुविधासँ पढ़बै।

जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल

क्षमा करब, हम पटना नहि पहँचि सकलहुँ, आलेख नहि पठा सकलहुँ। आलेख बहुत अछि। सभ पढ़ब।

नारायण जी

आ० भ्रमरजी प्रकाशित विशेषांक हम थोड़ेक पढ़ल अछि।ताहि आधार पर कहब जे मैथिली साहित्यमे भ्रमरजीक रचनासँ पहिनहुँ 'घरमुँहा' शब्द आएल

अछि,आ से आएल अछि पूर्णेन्दु चौधरीक कथा द्वारा। हुनकर एक टा कथाक शीर्षक थिक 'घरमुहाँ',जे हिंदीक कथा साहित्यक प्रसिद्ध पत्रिका 'सारिका'मे 'लौटे जो पांव ' शीर्षकसँ अनूदित भ' छपल अछि।हमहभ 'म'केँ सानुनासिक वर्ण मानैत छी।तेँ मैथिलीमे 'घरमुहाँ' लिखैत छी।शुभकामना।

माधव प्रसाद उपाध्याय

साहित्य सेवा र राष्ट्र सेवा एक आर्काका परिपुरक हुन साथै दुबै पक्षको सेवाको साक्षि ईतिहास=हुन्छ,जुन कहिले मर्दैन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**